ॐ शिव गोरक्षः नाथाय नमः

सर्वोपरि गुरु गोरक्ष

(नींव की ईंट गोरक्ष)
(गोरक्ष कृत शब्दी, पद सहित)
(शास्त्रोक्त प्रमाण सहित)

प्रस्तुति :

योगी शुक्राई नाथ

शिष्य महन्त श्री डॉ० योगी चेताईनाथ जी महाराज
(जी.ए.एम.एस.)

शुद्धाभ्यासस्य शान्तस्य सदैव गुरु सेवया।
गुरु प्रासादतत्रेव तत्वज्ञानं प्रकाशते।।

परम् पूज्य सद्गुरु श्री डॉ० चेताईनाथ जी महाराज
(वर्तमान महामंत्री नाथ सम्प्रदाय दलिचा, हरिद्वार)

ॐ महाशिव गोरक्षयोगी

सर्वोपरि गुरु गोरक्ष

(सृष्टि की नींव गोरक्ष)

प्रस्तुति : **योगी शुक्राईनाथ**

शिष्य महन्त श्री डॉ. योगी चेताईनाथ जी महाराज

संशोधक : **योगी प्रहलाद नाथ जी 'विज्ञानी'**

प्रकाशक :

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा

गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा), अपर रोड हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

© सर्वाधिकार सुरक्षित

पुस्तक प्राप्ति स्थान :

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा

गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा), अपर रोड हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

श्री बाबा समताईनाथ योगाश्रम

गांव नावाँ, जिला महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)

श्री स्वामी कृष्णाईनाथ योगाश्रम

गांव कण्डेला, जिला जीन्द (हरियाणा)

श्री बाबा चन्द्राई नाथ योगाश्रम

गांव पथरवा, जिला महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)

श्री मंगलाई नाथ समाधि मन्दिर

अलेवा जीन्द (हरियाणा)

सन् 2014, विक्रमी सम्वत् 2070

प्रथम संस्करण–2000 प्रति] [मूल्य 75/-

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

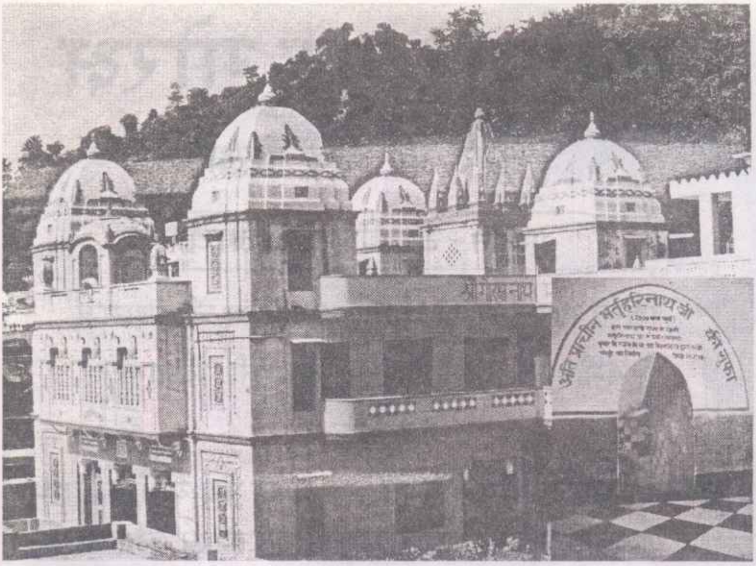

श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर तथा श्री भर्तृहरि जी की प्राचीन गुफा

राजा भर्तृहरि नीति, वैराग्य, श्रृंगार तीनों के रचियता थे। श्री योगाचार्य गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज के शिष्य हुए। उज्जैन-मालवा राजधानी छोड़कर श्री गंगा भागीरथी के तट पर हरिद्वार में श्री गोरक्षनाथ मन्दिर में गुफा का निर्माण करके यहां तपस्या की थी। उस समय से यह गुफा व मन्दिर यहां विद्यमान है। राजा विक्रमादित्य ने भर्तृहरि के नाम से हरकी पैड़ी का निर्माण किया था।

नोट-हरिद्वार में तीर्थ यात्रा पर आने वाले भक्तजन इस प्राचीन गुफा के दर्शन करके पुण्य लाभ प्राप्त करें।

लेखक सम्पर्क सूत्र :

योगी शुक्राईनाथ

चलभाष :

9991621105 (हरियाणा)

9536768125, 08006041032 (हरिद्वार)

सुझाव हेतु ईमेल swamikrishnainath@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्रम	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	नवनाथों का देव अवतरण	18
2.	शिव से गोरक्ष	22
3.	भक्त कबीर जी एवं उनके शिष्य द्वारा स्वयं के ग्रंथ रत्नसागर में गोरक्षनाथ स्तुति	29
4.	मीराबाई व आचार्य गरीबदास जी की मूर्ति पूजा का शाश्वत सत्य	37
5.	सन्त नानकदास जी द्वारा गोरक्ष गुणगान (गहरी नजर गुरु ग्रंथ साहब में)	39
6.	सुखमनी में नाथ जी महाराज की महिमा	42
7.	पवित्र आत्मा नानक दास जी के 'राग आसा महला' में गोरक्ष प्रतीक	47
8.	सिद्ध चरपटु V/s संत नानक सिद्ध गोष्ठी पृष्ठ 938 से	55
9.	एक मत तत्वदृष्टा नाथों की वाणी	56
10.	भक्त कबीर दास जी के विषय पर उनका स्वयं शंका समाधान	58
11.	पूर्ण परमेश्वर गोरक्षनाथ जी में कबीर की श्रद्धा का स्पष्टीकरण	65
12.	गुरु गोरक्षनाथ जी की वाणी का कबीर पर पूर्ण प्रभाव	67
13.	नाथ सम्प्रदाय पर भक्त कबीर व नानकदास वाणी का ऐक्य	68
14.	संत मलूकदास की दृष्टि में गुरु गोरक्ष तथा भक्त कबीर	71
15.	सत्गुरु गोरक्षनाथ जी के सानिध्य में संत कबीर दास–प्रमाण	72
16.	चित पर भी गोरक्ष अनुसार कबीर	75
17.	माया मोहनी पर गोरक्ष के बाद–कबीर व दादू के भी तीखे तेवर	75
18.	कबीर जी का नाथ जी के शब्दों से ही साम्य नहीं बल्कि भाव साम्य भी	77
19.	गोरक्ष पर स्पष्टीकरण	84

क्रम विषय पृष्ठ संख्या

20. संत गुलाल साहब द्वारा गोरक्ष पर टिप्पणी 86
21. योगी बचनाई नाथ का धर्म प्रेम एवं मतव्य से जन सुसंदेश 87
22. योगी बचनाईनाथ द्वारा भक्त कबीर पर प्रमाणित भ्रमनाशक शास्त्रानुसार शोधन 89
23. व्यसन (नशाखोरी) मांस भक्षण पर गुरु गोरक्ष का करारा कदम 92
24. गोरक्षनाथ जी का अनुसरण करते हुये कबीर दास द्वारा भी व्यसन पर दंभ 94
25. मठाधीश्वर पीर योगी श्री चान्दनाथ जी महाराज की दिव्य वाणी में शास्त्र मिलान 95
26. मूर्ति पूजा को झुठलाना किसी क्रे लिए भी संभव नहीं (प्रश्नोत्तरी सहित) 98
27. नींव की ईंट गोरक्ष 110
28. नाथ जी के परम तत्व से परे हैं वेद शास्त्र 113
29. आदि अनादि नाथ सम्प्रदाय में सतगुरु का महत्व 115
30. नाथ सम्प्रदाय के परिप्रेक्ष्य में 120
31. गोरखबानी (शब्दी) 125
32. सिद्धेश्वर गोरक्ष कृत पद रचना 145
33. श्री नाथ जी का बालाष्टक नं० 1 155
34. श्री गुरु गोरक्षनाथ जी की आरती 156
35. स्वागतम् ते सर्वोपरि गुरु गोरक्षः 158
36. योगियों का अमृत पद 159
37. श्री राम बने सिद्ध अचलनाथ 160
38. गोरक्ष उपदेश 160
39. दो शब्द 164

प्रस्तुत पुस्तक **'सर्वोपरि गुरु गोरक्ष'** का विमोचन परम् पूज्य महन्त **श्री पीर योगी चाँदनाथ जी महाराज** (वर्तमान लोकसभा सांसद) एवं योगी महासभा के वर्तमान महामंत्री **श्रद्धेय डा. श्री चेताईनाथ जी महाराज** के कर-कमलों द्वारा हुआ।

आशिर्वचन सहित

प्रिय योगी शुक्राईनाथ
शुभाशीर्वाद!

आप द्वारा लिखित पुस्तक "सर्वोपरि गुरु गोरक्ष" की एक प्रतिलिपि हमें प्राप्त हुई। अतः उसका पूर्ण अवलोकन करने पर महसूस हुआ कि हमारी नाथ सम्प्रदाय के बाल योगियों में धर्म तथा राष्ट्र को बकभक्ति की पृष्ठभूमि से प्रतिकृषित करने का साहस स्थापित है और गुरु योगाचार्य गोरक्षनाथ जी के तत्वज्ञान का स्वाध्याय कर उससे सम्पूर्ण राष्ट्र की रक्षा व धर्म विरोधी क्रूर शक्तियों से धर्म मर्यादा पूर्वक जंग लड़ने का बुलन्द हौसला भी कायम है। यह सब ग्रन्थोपरान्त जानकर अति खुशी हुई कि हमारी सनातन संस्कृति का प्रतीक अखण्ड नाथ सम्प्रदाय व इस सम्प्रदाय के योगी सुषुप्ति की माया से बाहर तथा जाग्रत स्थिति (गुरु भक्ति–गुरु आदेश) के अनुसार नाथ जी महाराज को सम्पूर्ण समर्पित है तथा प्रस्तुत पुस्तक में आपने गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज का दिव्य शब्द ज्ञान व तत्व ज्ञान के साथ–साथ उनका समस्त संत साहित्य पर पड़े गहरे प्रभाव को दृष्टान्वित किया है। इस प्रकार अल्प शब्दों के साथ ही लिखना चाहूँगा कि ग्रन्थ–शास्त्रों एवं नाथ सम्प्रदाय से सम्बन्धित समस्त साहित्यों के अध्ययन, शोधन, लेखन इत्यादि में आपकी गहरी अभिरुचि को देखते हुये मुझे आशा है कि आप इस दिशा में अपने चिन्तन और आध्यात्मिक दृष्टिकोण पर मनन करते हुये अन्य नाथ बालयोगियों को भी अपने साथ लेकर इन्हीं समाजसेवी कार्यों से नाथ परम्परा का उचित प्रचार–प्रसार करेंगे व इस शुभ अर्थात पुनीत कार्य में सद्गुरु गोरक्ष आपके भविष्य को यशस्वी व शुभ आशीष प्रदान करें, यही कामना करते हुए एक बार पुनः शुभ–शुभ आशीर्वाद देता हूँ तथा मोक्षदायनी नाथ सम्प्रदाय की उत्कृष्ट सेवा में विशिष्ट व अतिशय सुमार्ग की ओर प्रेरित करता हूँ।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

शुभेच्छुक :

(श्री महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज)
अध्यक्ष योगी महासभा, हरिद्वार
भूतपूर्व सांसद लोकसभा
उत्तर प्रदेश

आशिर्वचन सहित

प्रिय योगी शुक्राईनाथ
शुभाशीर्वाद!

अत्यन्त खुशी हुई कि आपने नाथ सम्प्रदाय के साथ–साथ राष्ट्र हितार्थ अपने पूज्य गुरुदेव श्री महन्त डा० चेताईनाथ जी महाराज के अनुसंधान में रहकर उनकी आज्ञानुसार तथा हमारी प्रेरणानुसार धर्म सम्वर्धनार्थ पुस्तक ही नहीं अपितु "छोटी सी पुस्तक रुपी कृति" में बहुतेरे ग्रन्थ शास्त्रों का अनोखा समन्वय कर **"सर्वोपरि गुरु गोरक्ष"** नामक एक विशेष ग्रन्थ की शैली तैयार की तथा आपकी इस शैली से समाज को अर्थात बच्चे–बच्चे को गोरक्ष तत्वज्ञान मिलेगा एवं कपोल–कल्पित बक भक्ति के विषैले वाईरस पर भक्तित्व के ऐन्टीवाईरस (विषाणु रोधक शक्ति) रुपी औषधि का स्वस्थ पक्ष स्थापित होगा तथा इस कृति से सम्पूर्णतया सिद्ध ही नहीं अपितु प्रत्यक्ष प्रमाणित है कि कैसे! आखिर कैसे सर्वोपरि है गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज? इस प्रसंग की प्रस्तुत व्याख्या पढ़कर मैं (योगी आदित्यनाथ) हमारे चिर संस्कृति के प्रतीक एवं शून्य भेदी सत्गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज से आपके भावी भविष्य की कामना करता हूँ तथा भविष्य में भी इस प्रकार की कृतियों तथा हर अचूक व अथक प्रयास से राष्ट्र व धर्म की रक्षा करने की प्रेरणा देते हुये अन्य भी सभी नाथ योगियों से यही आशा करता हूँ कि वे अपने जीवन के मूल्य को समझते हुये आगे आयें एवं व्यसन मुक्त नाथ सम्प्रदाय व व्यसन मुक्त भारत का निर्माण करने में प्रयासरत रहें और इसी के साथ योगी शुक्राईनाथ जी को एक बार पुनः इस समाज सेवा हेतु परिश्रम करने पर शुभ आशीर्वाद देता हूँ, शुभकामनाऐं देता हूँ और आशा करता हूँ कि आपकी यह कृति पूर्णतया सार्थक सिद्ध होगी।

शुभेच्छुक :

(श्री महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज)
वर्तमान लोकसभा सांसद
एवं गोरक्ष पीठ के उत्तराधिकारी, गोरखपुर
(उत्तर प्रदेश)

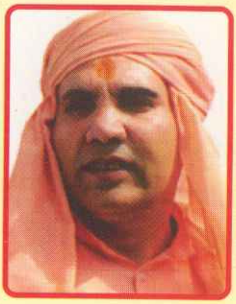

आशिर्वचन सहित

प्रिय योगी शुक्राईनाथ
शुभाशीर्वाद!

यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि आपने नाथ सम्प्रदाय की चहेती पुस्तक **"सर्वोपरि गुरु गोरक्ष"** नामक शीर्षक की रचनी की तथा प्रस्तुत पुस्तक में मानव जाति के उद्धार हेतु पाखण्ड को धराशाई करने वाले महत्वपूर्ण मुख्य बिन्दुओं को सुव्यवस्थित किया। यह शाश्वत सत्य है कि गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज सम्पूर्ण सिद्धों, ऋषि, मुनियों, दिगम्बरों, संतों–भक्तों सहित महाकवि कबीरदास जी इत्यादि व समस्त चराचर के वर्तमान व भविष्य को दिशा–निर्देश सहित गति प्रदान करने वाले पूर्ण पारब्रह्म परमेश्वर है। उन्हीं की कृपा से ही सृष्टि का सन्तुलन अखण्ड है। मध्यकाल के संतों व भक्त कवियों का साहित्य भी यही प्रमाणित करता है। इस सम्बन्ध में आपने (लेखक की ओर संकेत) प्रस्तुत पुस्तक में काफी प्रमाण उपलब्धि कर शास्त्रोक्त स्थापना भी की है। इसी सन्दर्भ में मुझे स्मरण हुआ कि भक्त कबीर दास जी की वाणियों, शब्दियों, पदों में प्रस्तुत पुस्तक में लिखित वृतान्त से अन्य भी काफी ऐसे प्रमाण हैं जो कि स्पष्ट करते हैं कि मध्यकालीन समस्त संत साहित्य व विशेषकर भक्त कबीर दास जी पर गुरु गोरक्षनाथ जी का खासा प्रभाव पड़ा जैसे उदाहरण–गुरु गोरक्ष की पद शब्दी में एक जगह लिखा है कि–

गुरुदेव स्यंभ देव शरीर भीतररिये।
आत्मा उतिम देव, ताही की न जाणी सेव।
आंनदेव पूजि–पूजि, इमहो मरिये।
नवे द्वार नवे नाथ, तृवेणी जगन्नाथ, दशवे द्वार कैदार।

अर्थात्–गोरक्ष कहते हैं कि गुरु और शम्भुदेव (शिव) शरीर के अन्दर ही विराजमान हैं। शरीर में अंतर्रात्मा सर्वोत्तम देवता है। उन्हीं की सेवा नहीं जानते हो, अन्य बाहरी देवताओं को पूज–पूज कर व्यर्थ ही मृत्यु को प्राप्त होते हो, नवद्वारों (नौ रंधों) में नौ नाथ हैं। त्रिवेणी (ईड़ा, पिंगला और सुषुम्ना) में जगन्नाथ हैं और दशवें द्वार (ब्रह्मरंध) में केदारनाथ हैं। यही युक्ति संसार सागर को पार कराने वाला योग है।

यहाँ गोरक्ष की अन्तर्मुखी साधना का स्पष्टीकरण सिद्ध हो चुका है। अब इस गोरक्ष तत्व (आन्तरिक साधना) का प्रभाव कबीर दास जी में देखिए–यही

कबीर दास जी की वाणी में परस्पर देखने को मिलता है कि–

कस्तूरी कुण्डल बसै, मृग ढूंढे बन माहि।
ऐसे घट–घट में राम है दुनियाँ देखे नाहि।।
मन मथुरा दिल द्वारिका काया कासी जाणो।
दशवा द्वारा देहुरा, तामें ज्योति पिछाणो।।

अर्थात् भक्त कबीर जी कहना चाहते हैं कि जिस प्रकार हिरण की नाभी में कस्तूरी होती है और वह सम्पूर्ण बन (जंगल) में ढूंढता रहता है। उसी प्रकार प्रत्येक घट–घट में परमात्मा निवास करते हैं। इसे दुनियाँ देखती नहीं है। मन को मथुरा दिल को द्वारिका तथा काया को कासी (धर्म स्थान) जानो। यह दश द्वारों का मन्दिर है। इस शरीर रूपी मन्दिर में ही परम तत्व (गुरुत्व व परब्रह्म) की खोज करो।

इस प्रकार यहाँ भक्त कबीर दास जी में गोरक्ष प्रभाव से अन्तर्मुखी अर्चना सिद्ध हुई है। इन्हीं शब्दों के साथ अपनी कलम को विराम देते हुये गुरु गोरक्ष के अवतरित स्वरुप महासिद्ध संत शिरोमणि बाबा मस्तनाथ जी एवं समस्त नाथ सम्प्रदाय की ओर से योगी शुक्राईनाथ को एक बार पुनः शुभ शुभाशीर्वाद देते हुए उनके कीर्तिवान भविष्य की गोरक्ष गुरु से कामना करता हूँ। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणी पश्यन्तु, मा कश्चित दुख भागभवेतः

शुभेच्छुक :

(श्री महन्त पीर चाँदनाथ जी महाराज)
वर्तमान लोकसभा सांसद, अलवर (राजस्थान)
वर्तमान उप सभापति (योगी महासभा)
व वर्तमान बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय के कुलाधिपति,
रोहतक (हरियाणा)

आशिर्वचन सहित

प्रिय योगी शुक्राईनाथ शुभाशीर्वाद

आपकी प्रस्तुत पुस्तक 'सर्वोपरि गुरु गोरक्ष' अतीव सराहनीय है। इसे पढ़कर पाखण्ड के लिए कोई जगह शेष नहीं रह जाती क्योंकि आपने बिखरी हुई कड़ियों को जोड़कर एक महत्वपूर्ण श्रृंखला को पूर्ण करने का परिश्रम किया है। आपकी यह ग्रन्थावली कम पढ़े-लिखे वर्ग के लिए भी सार्थक सिद्ध होगी क्योंकि इसमें शब्दों को अच्छी तरह सरल एवं विस्तार से खोलकर वर्णित किया गया है। प्रबुद्ध वर्ग सहित ज्यादातर विद्यार्थियों के जीवन में भी सामान्यतया उपयोगी सिद्ध होकर उनके भविष्य को राष्ट्र तथा धर्म हितेशी का उपदेश सिखाने में सक्षम कृति के रूप में यह प्रस्तुत लेखन प्रकाशमान होगा। हमारी नाथ सम्प्रदाय सृष्टि के आदि से ही विद्यमान है तथा इस गोरक्ष प्रणाली से ही मानव मात्र को योग का उपदेश अर्थात दृष्टान्त हुआ। गोरक्ष सम्प्रदाय में 'नाथ' शब्द की महान महत्ता है। यह शब्द अवर्णनीय एवं पारलौकिक है। इसके सन्दर्भ में **'गोरक्ष सिद्धान्त संग्रह'** में पृष्ठ संख्या 11 पर **'शक्ति संगम तंत्र'** का एक श्लोक संग्रहित है उसमें लिखा है-

श्लोक- श्री मोक्षदानदक्षत्वात् नाथ ब्रह्मानुबोधनात्।
स्थगिताज्ञान विभवात् श्रीनाथ इति गीयते।।

अर्थात् 'नाथ' शब्द का एक मतात्पर्य शक्ति संयम तंत्र से 'ना' का अर्थ तात्पर्य-जो मोक्ष देने में पूर्ण दक्ष (समर्थ) है, मोक्ष मार्ग का बोध कराता है, 'थ' का अर्थ तात्पर्य-अज्ञान के अन्धकार को (सामर्थ्य को) आच्छादित या अवरूद्ध करने वाला, इस प्रकार इस उपरोक्त संक्षेप का तात्पर्य है कि जो जीव को मोक्ष मुक्ति प्रदान करता है, स्वयं नाथ पारब्रह्म का अनुबोधन करता है तथा अज्ञान रूपी अन्धकार का स्थगन करता है। वही नाथ कहलाता है।

अतः इस उपरांत कहना चाहूँगा की नाथ सम्प्रदाय के प्राचीनतम गुढ़ ज्ञान पर रचित आपकी यह "सर्वोपरि गुरु गोरक्ष" रचना भी यही प्रत्यक्ष प्रमाणित करती है दिव्य सनातन नाथ संस्कृति की परिभाषा जाहिर करने वाली इस कृति से पाठक गोरक्ष तथा उनके रहस्यों को आसानी से ग्रहण कर सकेंगे। इन्हीं शब्दों के साथ सम्पूर्ण विश्व की मंगल कामना करते हुये योगी शुक्राई नाथ को एक बार पुनः शुभ-शुभ आशीर्वाद देता हूँ तथा परमात्मा गोरक्ष व श्री सिद्ध बाबा दादा काले पीर जी महाराज से आपके भावी भविष्य हेतु कामना करता हूँ एवं इस ग्रन्थ को पढ़कर किसी भी प्रकार का भ्रम-संदेह या मतभेद ना हो सके। यही मेरी शुभकामना है।

शुभेच्छुक :

(श्री महंत पीर नन्दाई नाथ जी महाराज)
आई पंथियों का सरमत्था व
दादा काले पीर जी महाराज का आश्रम, कोथ कलां, हिसार (हरियाणा)

आशिर्वचन सहित

प्रिय शिष्य योगी शुक्राईनाथ
शुभाशीर्वाद!

जब कभी भी धर्माचार्य गुरु गोरक्ष या उनके द्वारा रचित रचनाओं की पृष्ठभूमि में विश्व कल्याण का कोई कदम उठाता है तो हमें अपार प्रसन्नता होती है क्योंकि गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज द्वारा प्रदत्त दिशा–निर्देश ही सृष्टी के कल्याण हेतु सार्थक व पूर्ण मोक्षदायी है, गोरक्ष कृपा से जीव भयंकर काल जाल के व्यूह को तोड़कर साक्षात् गोरक्ष तत्व को प्राप्त होकर लख–चौरासी की मार को भी बिना किसी भय–पीड़ा के लांघ कर जिस तरह नदियों का भयंकर खतरनाक वेग महासागर से मिलने पर शान्ति को प्राप्त हो जाता है उसी प्रकार जीवात्मा भी गोरक्ष महासागर (पूर्ण परमात्मा गोरक्ष गुरु) में विलीन होकर उस परम पद की प्राकाष्ठा में पूर्णतया मिश्रित हो जाती है, अतः योगी शुक्राईनाथ ने इस प्रस्तुत पुस्तक **'सर्वोपरि गुरु गोरक्ष'** में संक्षिप्तता से व सारगर्भित शब्दों की सरल शैली में इस गूढ विषय का समायोजन कर अत्यन्त सराहनीय परिश्रम किया है जिसमें ज्यादातर विषय–वस्तु सरलता से स्पष्ट बोधगम्य प्रतीत हो रही है। जब से सनातन हिन्दुस्थान के सनातन धर्म पर कुछ तथाकथित धर्मगुरुओं द्वारा चोट पहुँचाने का निन्दक कार्य किया गया है तब से नाथ सम्प्रदाय के योगियों तथा समस्त सनातन धर्म प्रेमी आध्यात्मिक साधकों की अभिरुचि और जिज्ञासा गोरक्ष तत्व को जन–जन तक पहुँचाने में बढ़ी है। निश्चय ही इस प्रकार के लेखन तथा भाष्यों की सम्यकता से समाज को मजबूत शक्ति तथा आध्यात्मिक शुद्धता प्राप्त होगी तथा फैल रही असामाजिक कपोल–कल्पित दंतकथाओं की गति अवरुद्ध होगी और राष्ट्र का बच्चा–बच्चा इस संक्षेप से सत्य, असत्य, धर्म, अधर्म इत्यादि को प्रामाणिकता से पहचानने में सबल व समर्थ होगा जिससे राष्ट्र व धर्म भविष्य दोनों का लाभ होगा, इस कथनांक से जिज्ञासु पाठकों को उचित लाभ मिलेगा तथा प्रस्तुत पुस्तक एक ग्रन्थ रुप में सिद्ध होगी और गुरु गोरक्ष की सनातन सम्प्रदाय व समस्त संसार के जिज्ञासु भक्त मति साधक इस पुस्तक से पूर्ण लाभान्वित होंगे। इसी आशा के साथ प्रस्तुत पुस्तक को समाज में लाने हेतु योगी शुक्राईनाथ को एक बार पुनः शुभ–शुभ आशीर्वाद देते हुए समस्त नाथ योगियों को सृष्टि के हितार्थ सेवा धर्म अपनाते हुये अपने पूर्वजों के सद्कर्मों से फलीभूत धर्म की मूल का रक्षण हेतु आध्यात्मिक दृष्टिकोण अपनी अन्तरात्मा में स्थापित रखने तथा व्यसन पर अर्थात पूर्णतया राष्ट्र को खोखला करने वाली नशाखोरी को त्याज्य कर हिन्दू राष्ट्र को विश्व का गुरु व व्यसन मुक्त बनाने हेतु प्रयासरत रहने का दिशा–निर्देशन देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि सम्पूर्ण नाथ सम्प्रदाय से राष्ट्र लाभान्वित होकर गोरक्ष तत्व (महाशून्य) में केन्द्रित होगा। यही मेरी शुभकामना है।

शुभेच्छुक :

(श्री महन्त योगी डॉ. चेताईनाथ जी महाराज)
महामंत्री
अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

सम्मति व अभिवादन

प्रिय बाल योगी शुक्राईनाथ जी
हार्दिक शुभकामनाएँ

प्रस्तुत पुस्तक 'सर्वोपरि गुरु गोरक्ष' में आपने भक्त कबीर आदि सहित समस्त मध्यकालीन संतों पर पड़े हुये नाथ जी के योग प्रभाव को दर्शाया है तथा साथ ही भारतीय संस्कृति पर भी। गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज तत्ववेता व स्वयं ही परम तत्व पारब्रह्म है। उनका सांगोपांग वर्णन करना किसी के लिए भी पूर्ण संभव नहीं क्योंकि उनकी माया व भेद उनके (स्वयं के) अन्य कोई नहीं जानता। यह कटु सत्य नाथ सम्प्रदाय के गुरु गोरक्ष कृत शब्दियों से प्रकट है। उन्होंने कहा है कि–

अवधू ईश्वर हमारे चेला भणीजे, मछिंद्र बोलिये नाती।
निगुरी पिरथी परलै जाती, ताथै हम उल्टी थापना थापी।

देखिए शब्दी नं. 144 में

अर्थात गोरक्ष अपनी उपर्युक्त टिप्पणी में कहते है कि सृष्टि के ईश्वर (स्वयं शिव) तो हमारे (गोरक्ष के) शिष्य है और मच्छेन्द्र नाथ जी नाती हैं अर्थात् पौत्र हैं। मुझसे उत्पन्न शिव के शिष्य मच्छेन्द्रनाथ हैं। लेकिन सम्पूर्ण पृथ्वी को नुगरी (मनमुखी व गुरु विरोधी) तथा इस आधार से मुक्ति की अभिलाषा हेतु भेषधारी होने से बचाने के लिए मैंने इस प्रकार यानी शिव–मच्छेन्द्र–गोरक्ष योगी की उल्टी रीति अपनाकर सत्य धर्म रूपी गुरु संरक्षण व मर्यादित नाथ सम्प्रदाय की स्थापना की। अतः स्पष्ट है कि गुरु गोरक्ष ही सर्वोपरि पूर्ण समर्थ अधिष्ठाता है। इस कृति को प्रकाशित देखकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है जिसके तहत अनेकों कुरुतियाँ फैलाने वाले तत्वों का भंडाफोड़ सुनिश्चित है। इसके लिए आप मेरी हार्दिक बधाई सहित अभिवादन स्वीकार करें, महाप्रभु गोरक्ष आपको दीर्घायु प्रदान करें। आदेश! आदेश!

शुभेच्छुक :

(महन्त श्री चरण दास जी महाराज)
हनुमान जी का मन्दिर
हनुमान ढाणी भिवानी (हरियाणा)

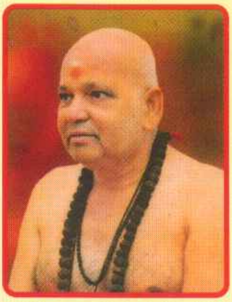

सम्मति व अभिवादन

प्रिय बाल योगी शुक्राईनाथ जी

'सर्वोपरि गुरु गोरक्ष' शीर्षक नामक पुस्तक का अवलोकन किया। पुस्तक के लेखक आदरणीय श्री योगी डॉ. चेताईनाथ जी महाराज के शिष्य योगी शुक्राईनाथ जी द्वारा बहुत लग्न एवं परिश्रम से संग्रह कर प्रकाशित की जा रही है जिसमें अन्य सम्प्रदायों के आचार्यों द्वारा गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज की महिमा करने के प्रमाण दिये गए हैं। इस प्रकार नानक जी, कबीर जी आदि महापुरुषों के द्वारा गोरक्षनाथ जी महाराज का गुणगान करके अपनी वाणी को सफल किया है। नाथ सम्प्रदाय में गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज के बारे में काफी कुछ साहित्य प्राप्त होता है। परन्तु अन्य जितने भी सम्प्रदाय हैं उनके आचार्यों ने तथा उनके शिष्यों ने गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज की बहुत महिमा की है, जो यह दर्शाता है कि गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज अनादि युगों के चिरस्थाई योगी हैं। अन्य सम्प्रदाय अधिकतर 600 वर्षों पूर्व और अधिक से अधिक 2500 वर्ष पूर्व से ही चलते आ रहे हैं। इस कारण गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज ने इस समय में भी बहुतों को दर्शन दिए हैं। भगवान श्री कृष्ण एवं गर्गाचार्य का संवाद गर्ग संहिता में प्राप्त होता है जिसमें गुरु गोरक्षनाथ जी के बारे में भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर गर्गाचार्य ऋषि ने देते हुए कहा है कि गोरक्षनाथ जी अनादि के योगी हैं जिनकी सभी स्थानों पर सभी के द्वारा पूजा होती है।

स्वर्गीय पुज्यन्ति देवा मर्त्यलौके च मानवा।
पाताले नाग लोकाश्च श्री गोरक्षनाथ नमोस्तुते।।

इस प्रकार सनातन साहित्य में इनका प्रमाण मिलना यही दर्शाता है कि वे अनादि परिप्रेक्ष्य योगी हैं। गोरक्ष सिद्धान्त भी अति उत्तम होने से अन्यों के लिए पूजनीय हैं।

रहना तो निर्जन वन में, रूख वृक्ष की छाया।
जीतना तो काम क्रोध, लोभ मोह संसार की माया।
आत्म क्रीड़ा आत्म विचार, योगनिन्द्रा अल्पाहार।
ध्यानी योगी इस विध रहे, अस विचार मत्स्येन्द्र कहे।

कलिकाल में सामान्यत: 600 वर्षों से विभिन्न सम्प्रदाय जो चलते आ रहे हैं उनमें कुछ सम्प्रदाय के लोग पक्षपाती हैं वे लोग अपनी दुकानदारी जमाने के लिए जनता को भ्रम में डालकर उन्हें अपनी बाड़ाबन्दी में लाने के लिए गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज का दुष्प्रचार करते हैं। ऐसे प्रचारक जेल के शिकंजों के पीछे भी चले गए हैं। गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज के अनादि होने के प्रमाण सभी संहिताओं एवं पुराणों में वर्णित हैं जो कि योगी शुक्राईनाथ जी द्वारा संग्रहीत कर प्रकाशित किया गया है।

अन्त में मैं योगी श्री शुक्राईनाथ जी महाराज को साधुवाद देना चाहता हूँ कि समाज के सामने गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज के अनादि होने के प्रमाणों को संग्रहित कर प्रकाशित जो करवा रहे हैं। यह सचमुच नाथ सम्प्रदाय की उत्कृष्ट सेवा है। हम आपसे पूर्ण सहमत हैं।

शुभेच्छुक :

योगी प्रहलादनाथ विज्ञानी

(योगी श्री प्रहलाद नाथ विज्ञानी)
सचिव, श्री नवलेश्वर मठ सिद्धपीठ
नत्थुसर बास, बीकानेर (राजस्थान)

अभिवादन व सम्मति

प्रिय योगी शुक्राईनाथ जी!

हिन्द राष्ट्र एवं नाथ सम्प्रदाय की उद्रिक्त एवं उत्कृष्ठ सेवा में आपकी प्रथम प्रस्तुति **"अतीत का प्रतीक"** अतीव सराहनीय एवं पूर्ण समाज हितैषी रही। तदोपरान्त यह प्रस्तुत **"सर्वोपरि गुरुगोरक्ष"** नामक द्वितीय प्रस्तुती भी उसी प्रकार शास्त्र प्रमाणित एवं नाथ परमात्मा का बखूबी बखान करने वाली ग्रन्थावली है। यह शाश्वत् सत्य है कि गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज की आभा व उनका तेज अखण्ड सृष्टि तथा आदि-अनादि युगों से योगामृत प्रदान करने के लिए कालदण्ड का खण्डन वंचन कर चारों युगों में विद्यमान होकर प्राणीमात्र को गोरक्षपद (ब्रह्मपार स्थिति) में अवस्थित करते रहते हैं। गोरक्ष से सभी **देवादिदेव महादेव** से लेकर समस्त **देवता, सिद्ध, महासिद्ध, ऋषि-मुनि, ज्ञानी, तपस्वी और मध्यकाल के गृहस्थ संतमती, कवियों** ने भी ज्ञान प्राप्त किया है। जब वार्ता मध्यकालीन संतों की आती है तो बताना चाहूँगा कि दास सम्प्रदाय के सभी साधु-संत जैसे भक्त कबीरदास और उनके गुरु तथा दादा गुरु क्रमशः सन्त रामानन्द जी एवं राघवानन्द जी। ये सभी गुरु शिष्य प्रणाली आदिगुरु गोरक्ष से काफी प्रभावित थे और इन्हीं के द्वारा दास पंथ आगे गतिमान हुआ। दास-पंथ में रामानन्द जी के 12 शिष्य हुये-1. **अनन्त दास जी, 2. सुखानन्द जी, 3. सुरसुरानन्द जी, 4. नरहरिया नन्द जी, 5. भावानन्द जी, 6. पीपादास जी, 7. भक्त कबीर दास जी, 8. भक्त सेन जी, 9. धना भक्त जी, 10. संत रैदास उर्फ रविदास भक्त जी, 11. भक्तमती पदमावती, 12. भक्त सुरसुरी जी** आदि।

इन सभी 12 गुरु भाईयों पर कबीर दास जी को गोरक्षज्ञान प्राप्त होने के कारण उनका प्रभाव पड़ा तथा इन सभी ने नाथ भक्ति को अपनाया। इस प्रमाण को इन समस्त संतों के द्वारा रचित रचनाओं में स्पष्ट

पढ़ा व देखा जा सकता है शब्दी-पदों में। कबीर दास जी पर सर्वाधिक नाथ जी का प्रभाव पड़ा। यह नाथ शिक्षा एवं अवधूत संस्कारों का प्रभाव स्वामी राधवानन्द जी से स्वामी रामानन्द जी तथा उनसे होते हुये भक्त कबीर आदि निर्गुणी भक्तों की विचारधारा में उद्धृत हुये भक्त कबीर दास जी अपने गुरु रामानन्द जी को कम और गुरु गोरक्षनाथ जी को ज्यादा महत्वता देते थे। इसका प्रमाण प्रस्तुत पुस्तक में योगी शुक्राईनाथ जी आपने बड़े ही कौशल क्षेम के साथ प्रवृत्त किया है। लेकिन मुझे स्मरण आया है कि एक पद में भक्त कबीर दास जी ने गोरक्षनाथ जी को गोविन्द **(पूर्ण परमात्मा पारब्रह्म)** स्वीकृत करते हुये लिखा है-

मन गोरख मन गोविन्दो, मन ही ओघड़ होई।
जै मन राखै जतन करि, तो आपै करता सोई।।

देखिये प्रमाण-कबीर ग्रन्थावली सा. 13/10 में

इस प्रकार भक्त कबीर में अन्यान्य एवं अनन्य गोरक्ष भक्तित्व प्रेम विराजमान था। इसी आधार से प्रस्तुत पुस्तक गोरक्ष रस को पूर्णतया बखान करने वाली कृति ग्रन्थ के रूप में पाठकों व जिज्ञासुओं के लिए सिद्ध होगी तथा धर्म मर्यादा का गोरक्ष सशक्तिकरण चारों ओर स्थापित होगा यही मेरी शुभकामनायें हैं तथा समाज को नाथ सम्प्रदाय का यह कल्याणकारी उपदेश प्राप्त होगा। यही गोरक्षामृत है।

खड़ेसरी योगीराज
तपस्वी महन्त सुमरनाथ जी महाराज
ग्राम मोहाना, पानीपत (हरियाणा)

अभिवादन व सम्मति

प्रिय मित्र योगी शुक्राईनाथ जी!

आपकी प्रथम रचना "**अतीत का प्रतीक**" तथा द्वितीय प्रस्तुत कृति "**सर्वोपरि गुरु गोरक्ष**" दोनों ही शाश्वत सत्य शास्त्र प्रमाणित विवेचना है तथा आशा करता हूँ कि हमारे भारत की आगामी पीढ़ी अर्थात् छोटे बच्चे भी इस पुस्तक का ज्यादा से ज्यादा लाभ उठायें और परिणामस्वरुप आध्यात्म का दबदबा बढ़ने से तथाकथित धर्मगुरुओं व दन्त कथाओं का प्रचार करने वालों को प्रबुद्ध बच्चों से ही यथायोग्य प्रमाणित शास्त्र का पाखण्ड विरोधी जबाब मिलने लगेगा जिससे धर्मद्रोही व्यूह का भंडा फोड़ व मजबूत अगणित मनस्तत्व की स्थाई स्थापना सुरक्षित रहेगी, अतः आज माहौल डगमगाने का यही कारण है कि मनमुखियों द्वारा धर्म मर्यादा को भूलकर धर्म के चोले को धारण कर उसकी ओट में संस्कृति शास्त्र-ग्रन्थ आदि का निर्दयी होकर अपनी जेब के लिए कत्लऐआम किया जा रहा है। उनकी आत्मीयता नष्ट होकर समाज के लिए घातक सिद्ध हो रही है। भक्त कबीर दास जी आदि कवियों को परमात्मा बताकर भोली-भाली जनता का शोषण किया जा रहा है। इस संक्षेप में आपकी यह **सर्वोपरि गुरु गोरक्ष** शीर्षक की रचना अत्यन्त महत्वपूर्ण और इस पाखण्ड के कैंसर रोग पर काबू पाने हेतु अतिशय औषधि के रुप में सार्थक होगी, कहना चाहूँगा कि कबीर को परमात्मा मानने वाले तथा बकभक्ति के कैंसर रूपी रोग से ग्रस्त व गोरक्ष सनातन प्रतीक के द्रोही जरा ध्यान देवे कि प्रस्तुत निम्नलिखित बीजक के दोहे में स्वयं कबीर दास किस प्रकार गोरक्षनाथ जी को व उनके योग को स्वीकार कर रहे हैं-

गोरख रसिया योग के कोरी मांजी देह।

-प्रमाण देखिए-बीजक ग्रन्थ जो कि पूना के एक प्रकाशन से प्रकाशित हैं।

यहाँ उपर्युक्त दोहे में कबीर दास जी ने गुरु गोरक्ष नाथ जी को योग रसिक कहा है यानि योग के रस का पान करने व कराने वाला योगी तथा कहा है कि उन्होंने कोटी देह (शरीरों में उपस्थित आत्मा को) मांजा (कोरा नवीन परिमार्जित परिष्कृत) है यानि संसार सागर की मायावी गहराइयों से मोक्ष (स्वयं का धाम) प्रदान किया है।

अत: यहाँ नाथ सम्प्रदाय व गुरु गोरक्ष को कोसने वालों के ही पूर्वाचार्यों द्वारा स्पष्ट हुआ है कि गोरक्ष क्या और कौन है। **आओ विचार करें**-यहाँ स्पष्ट हुआ है कि योग का उदय और प्रादुर्भाव करने वाले स्वयं गुरु गोरक्षनाथ जी ही हैं। अब निम्नलिखित एक दूसरे कबीर कृत ग्रन्थ में देखिए-भक्त कबीर द्वारा गुरु गोरक्ष के योग को धारण करना-इस उक्ति में लिखा है-

आत्मा अनंदी जोगी, पीवै महारस अमृत भोगी।
ब्रह्म अग्नि काया परजारी, अजपा जाप उन्मनी तारी,
त्रिकूट कोट में आसण माँडे, सहज समाधि विषे सब दांडे,
त्रिवेणी विभूति करै मन मजंन, जन कबीर प्रभु अलख निरन्जन।

–कबीर ग्रन्थावली 204-5 पद में

अर्थात् यहाँ कबीर जी द्वारा गोरक्ष स्थिति हेतु कहा गया है कि आत्मा में सर्वविदित गोरक्ष योगी महाशुद्ध योगामृत महारस का पान (सेवन) करने वाले हैं वे योग रसिक ब्रह्माग्नि में अपनी नूर (तत्वों से परे स्थाई काया) काया की आहुति देकर कायसिद्धि की विधि से परिपूर्ण हृष्ट-पुष्ट है। योग रस सिद्ध गायत्री जाप द्वारा मन की उन्मनी अवस्था अर्थात अमनस्कता में लीन व सहज समाधिस्थ है-त्रिवेणी (इड़ा-पिंगला व सुषुम्ना) से शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक स्नान करने वाले वे अभेदा निरंजन (पूर्ण परमात्मा) है, मैं (कबीर दास) तो सिर्फ जन (पंच तत्वों की सांसारिक रचना) मानस हूँ। वे प्रभु तो अवश्य निरंजन (गोरक्ष) है।

अतः इस प्रकार स्वयं कबीर द्वारा तथा अन्य संतों व सिद्धों द्वारा काफी ऐसे प्रमाण लिखे हुये हैं जिनके आधार पर देखें तो आपकी यह पुस्तक शाश्वत सत्य भी है और युगदशानुसार जीवन में आज की आवश्यकता भी है। इन्हीं शब्दों के साथ अपनी कलम को विराम देते हुये लिखना चाहूँगा कि **"सर्वोपरि गुरु गोरक्ष"** एवं **गोरक्षनाथो विजयतेतराम्**।। इति शुभम्।। शिव गोरक्ष।।

सन्त बाल योगी ध्यानदास जी महाराज

शिष्य सन्त श्री चरणदास जी महाराज

उत्तराधिकारी हनुमान ढाणी, भिवानी (हरियाणा)

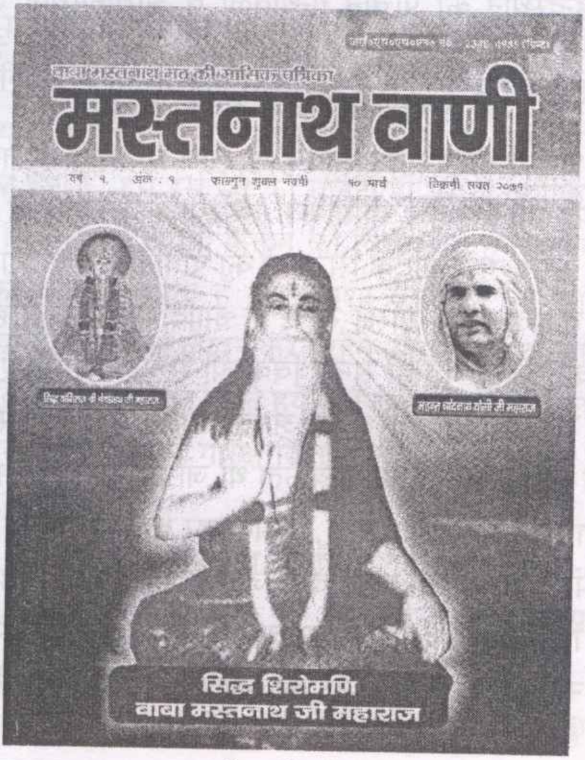

विशेष-बाबा मस्तनाथ मठ की नवीन 'मस्तनाथ वाणी' नामक मासिक पत्रिका की वार्षिक / आजीवन सदस्यता ग्रहण करने हेतु सम्पर्क करें-
फोन : 01262216433, Email : mastnathvaani@gmail.com

अभिवादन व सम्मति

प्रिय योगी शुक्राईनाथ जी!

सर्वप्रथम पूज्यपाद हमारे श्रद्धेय गुरुदेव श्री चैताईनाथ जी महाराज के चरणों में सादर प्रणाम (वंदन, आदेश) करता हूँ जिनकी शरण व कृपा से आपने यह समाज जागरूकता के उपलक्ष्य में शुभ कार्य किया। आदेश तिसें आदेश।। अब कहना चाहूँगा कि यह **"सर्वोपरि गुरु गोरक्ष"** शीर्षक जिसकी जानकारी मिलने पर मुझे बिना पुस्तक पढ़े ही शीर्षक के बोध मात्र से ही अन्तर्रात्मा से महसूस हुआ कि आपकी (योगी शुक्राईनाथ की) यह रचना हिन्दुस्थान की प्राचीन ग्रन्थावली व अधिकाधिक शास्त्रों से प्रकट शोध ही होगी। राष्ट्र को आपका यह योगदान सर्वथा सामयिक समर्पित रहेगा, जिसके प्रभाव से आदर्श व्यक्तित्व तथा भावी पीढ़ी को सद्गुणों का यथार्थ मार्गदर्शन सुलभ होगा, नाथ सम्प्रदाय के तत्वावधान में आपका यह परिश्रम कई सामाजिक समस्याओं को जड़ से नष्ट कर नाथ धर्म को अग्रगण्य व वैदिक सिद्धान्तों का प्रतिनिधित्व करेगा, महाप्रभु योग रसिया व प्रदाता गुरु गोरक्ष सृष्टि के आदि से होने तथा हर युग में विद्यमानता की आपने बड़े ही सुन्दर विकल्पों से पुष्टि की है ऐसा प्रतीत होता है मानो यह ग्रन्थ खुद गोरक्ष की आरती उतारता हो। अतः समाज को एक ऐसी ही रचनावली की आवश्यकता थी जो कि साधारण भाषा शैली व शब्दालंकारों की समन्वयता में हो, जिसका हर वर्ग अध्ययन व अध्यापन कर सके। पीछे प्रस्तुत संत ध्यान दास जी की सम्मति को पढ़ने से मुझे याद आया कि कबीर दास जी वास्तव में गोरक्षनाथ जी से भयंकर प्रभावित ही नहीं बल्कि वे नाथ योग को स्वीकार भी करते हैं। जैसे कबीर जी के एक पद में लिखा है–

गोरक्ष सोई ग्यान गमिग है, महादेव सोई मन को लहै।
सिद्ध सोई जो साधै इती, नाथ सोई जो त्रिभुवन जती।।

अर्थात्–यहाँ भक्त कबीर दास जी स्वीकार करते हैं कि मन जीता

महादेव व इस स्थिति को पाने वाला सिद्ध/पारगामी हो जाता है। इस ग्यान को जानने वाले ज्ञाता गुरु गोरक्ष हैं तथा नाथ वही है जो त्रिभुवन-स्वर्ग, पृथ्वी व पाताल आदि में जती स्वरूप है। अतः यहाँ सब कुछ प्रत्यक्ष प्रमाणित हो चुका है व पृष्ठाभाव में ज्यादा न लिखते हुये बताना चाहूँगा कि सतगुरु गोरक्ष का ज्ञान उनका वैभव किसी ने भी अस्वीकार नहीं किया। यहाँ तक कि अंग्रेजों द्वारा भी नाथ सम्प्रदाय पर अनेकों बार रिसर्च (खोज) किया गया है। उन्होंने भी गोरक्ष को सृष्टि का मूल ही माना है। हमारे काफी हिन्दी के सुविख्यात कवियों व लेखकों द्वारा नाथ सम्प्रदाय पर रिसर्च कर इसी ध्येय को स्वीकार किया गया है कि गोरक्ष ही सर्वोपरि है। नाथ सम्प्रदाय किसी का भी अंश नहीं है। बल्कि अन्य सभी मत पंथ सम्प्रदाय किसी न किसी रूप में गोरक्ष अंश ज्ञात होते हैं। गोरक्ष में सब कुछ समाया हुआ है। अतः यह सब समस्त लोकों की सृष्टि गुरु गोरक्ष की ही विशिष्ट देन है। हमें इस हेतु को मानना ही पड़ेगा क्योंकि ये ही सत्य है। इतना लिखते हुये अपनी कलम को विराम देते हुये आपके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि आगे भी ऐसी शिक्षाप्रद प्रतिलिपियों का लेखन करते रहेंगे और समाज को नाथ सम्प्रदाय की वास्तविकता से अवगत करते हुये अनजान गलियों के खतरनाक मोड़ आदि समस्याओं से अपने गोरक्ष दिशा-निर्देश देकर सफल गन्तव्य का परिचायक बनेंगे।

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

महन्त योगी सुन्द्राई नाथ जी

अध्यक्ष-

श्री बाबा समताईनाथ गौशाला नावां (महे.)

संचालक-

श्री मंगलाई नाथ समाधि मन्दिर

ग्राम अलेवा/जीन्द (हरियाणा)

लेखक की कलम से..........

श्री गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज द्वारा ही योग पद्धति में आसन-प्राणायाम का सरल व सुन्दर तरीके से वर्णन किया गया है। अर्थात् सारी दुनिया इस विक्षेप को स्वीकार करने लगी है कि योग-विद्या श्री योगाचार्य गुरु गोरक्षनाथ जी की ही देन है। योग के बारे में कितना भी लिखूँ या बोलूँ! फिर भी शेष ही रह जायेगा योग के साथ-साथ श्रीनाथजी महाराज ने ध्यान की भी 112 विधियाँ खोज कर अपने अनुसंधान से प्राणी मात्र को दी तथा परमात्म तत्व से ऐकीकरण का सरल एवं सीधा रास्ता हमें प्रदान किया - गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज सम्पूर्ण सृष्टि के अयोनी बीन्द एवं पूर्ण परमात्मा है। क्योंकि आज तक के इतिहास में जितने भी संत, ज्ञानी ऋषि, मुनि एवं भक्त कबीर तक जो कवि आदि हुए है उन सब ने गोरक्ष शक्ति को गुरु एवं परमात्मा मानकर ही नहीं अपितु सर्वे-सर्वा का पद देकर उनकी स्तुतियाँ एवं गुणगान करे है, मुस्लिम ग्रंथ पदमावत ने भी गोरक्ष नाथ जी को महान महत्त्व दिया है। हमारे पुराण साहित्य तो गोरक्ष नाथ जी महाराज का बखान बखूबी करते-करते फूले नहीं समा रहे है सुप्रसिद्ध कवि कबीरदास जी जो कि बहुत बड़े भक्त एवं दास हुए। उन द्वारा भी बार-बार गोरक्षनाथ जी को गुरु एव खुद को उनका दास कहा गया है तथा इस तरह नानक साहेब ने भी गुरु गोरक्ष नाथ जी की गुरु तुल्य महिमा करते हुए नाथजी को गुरु स्वीकार है।

मैं योगी शुक्राईनाथ (लेखक) इन सब तथ्यों से अनभिज्ञ था- लेकिन पुस्तक रूपी ग्रन्थों में जब गुरु गोरक्षनाथ जी के प्रति कुछ कबीर अनुयायियों द्वारा उल्टा-फूल्टा लिखा हुआ मैंने पढ़ा तो मुझे बड़ा दुख हुआ। सन् 2009 में हरियाणा प्रदेश में हमारे गाँव कण्डेला, जिला-जीन्द में कुछ कबीर पन्थी (जो कि नकली कबीर पंथी थे) कुछ पुस्तके बेच कर (10-10 रु. में) प्रचार-प्रसार कर रहे थे। उस दौरान मुझे भी पुस्तक

प्राप्त हुई। मुझे पुस्तके पढ़ने का शौक बचपन से ही ज्यादा था इसलिए मैंने पढ़ी तो बड़ा दुख हुआ कि समाज को गुमराह करने वाले असामाजिक लोग पुस्तकों में मनमर्जी और तथाकथित धर्मगुरुओं की कपोलकल्पित बकवाद लिखकर ये भी भूल जाते है कि भक्त कबीर कौन थे, भगवान श्री योगीराज कृष्ण कौन थे!! और सब कुछ भूलकर अपने आपको भी भूल गये कि वे लिख क्या रहे है क्योंकि पवित्र श्रीमद्भागवत गीता जिसको कोई नहीं ठुकरा सकता। उस पवित्र गीता और गीता ज्ञान दाता कृष्ण दोनों को क्रमशः प्रेतज्ञान व कृष्ण जी को भूत-प्रेत लिखा हुआ था और सारी पुस्तक में कृष्ण ही नहीं अपितु सभी देवी-देवताओं का शिव सहित त्रिदेवों तक का घोर अपमान कूट-कूट भरा हुआ था जो कि मेरे पास आज भी प्रमाण हेतु रखी हुई है। धीरे-धीरे मैंने बहुत सारी कबीर पंथियों की पुस्तकों का अध्ययन करना एवं सनातन नाथ सम्प्रदाय सहित, वेद, उपनिषद, दर्शन शास्त्र व कुछ संहिताओं का अध्ययन करना शुरू किया मुझे बालक होने के कारण देवताओं का अपमान करने वाले मनमुखियों पर क्रोध आने लगा और सन् 2009 के अन्त में धर्म मूल गोरक्षनाथ जी के विषय पर शास्त्रार्थ के लिये उठने की कोशिश की लेकिन नाबालिक होने के कारण मीडिया वालों ने मुझे मना कर दिया।

अन्दर ही अन्दर घुटता रहा और अपने पूज्य गुरु देव श्रद्धेय श्री महन्त चेताईनाथजी महाराज को कुछ कठोर सवाल होते और मुझे समझ नहीं आते तो उनसे पूछता रहता था। सत्गुरु जी हँसते हुए मुझे मेरे हर प्रश्न का जवाब देते थे- मुझे असीम खुशी मिलती - यह मसला 2013 तक चलता रहा- तदोपरान्त मेरी भेंट कुछ कबीर अनुयायियों से हुई तथा भक्त कबीरदास जी एवं पशुपतिनाथ शिव से लेकर काफी सन्तों के विषय पर काफी बहस हुई। बहस में मेरी बात सनातन सम्पूर्ण थी तथा उनकी बात यह थी कि कबीर ही पूर्ण परमात्मा है। बाकी सब पाखण्ड है। अतः मैंने प्रमाण सहित उत्तर दिये और उस उपरान्त दूसरे दिन से वार्ता

ज्यादा बढ़ गई दिन प्रतिदिन बात बढ़ने लगी और हर दिन प्रतिदिन ज्यादा विवाद कबीर पंथियों ने खड़ा कर सनातन को नीचा दिखाने की अपार कोशिश की। लेकिन वे भूल रहे थे कि नाथ सम्प्रदाय क्या है। उनका तथाकथित धर्मगुरु टी.वी. चेनलों के माध्यम से चुनौती दे रहा था। यह शास्त्रार्थ की चुनौती कोई मामूली चुनौती नहीं थी बल्कि विश्व चुनौती थी।

उनकी शास्त्रार्थ हेतु दी हुई चुनौती को मैंने (लेखक) स्वीकार किया जिसमें प्रमाण सहित सवाल जवाब होने थे। मैंने खत अर्थात् पत्र भेजकर उनसे आमने सामने आने को कहाँ लेकिन नहीं आये। नाथ सम्प्रदाय के एक बाल योगी के उठते ही उन कबीर जी को बदनाम करने वालों का तख्त हिल गया और हिम्मत नहीं हुई कि सामने आ जाए। क्योंकि आमने-सामने आने पर जनता के समक्ष खुले आम न्याय होता है उनकी दुकानदारी बन्द होने का डर उन्हें सताने लग गया उनके बरवाला आश्रम से कुछ लोग आये गाड़ियों में तथा मुझे खरीदने की कोशिश की गई अर्थात् पैसे लेकर चुप रहने को कहाँ- उनका ये ऑफर मेरे द्वारा ठुकराने पर उन्होंने मेरी आवाज सदा के लिए बन्द करने की कोशिश की, हमला किया। लेकिन गुरु गोरक्षनाथ जी की कृपा से मेरे कण्डेला गाँव ने मेरी सुरक्षा तथा पंचायत पर पंचायत दिन प्रतिदिन की। अतः कबीर पंथियों ने पंचायत में माफी मांगी कि उन्होंने अन्याय किया।

अब ग्राम पंचायत द्वारा मेरे पूजनीय एवं आदरणीय गुरुदेव की उपस्थिति में पंचायत कर मुझे दो महीने तक प्रचार-प्रसार के लिए रोक दिया गया तथा अगले दिन हमारे गुरु महाराज किसी कार्यवश कुरूक्षेत्र चले गये तथा दोपहर बाद मुझे गुरुजी का फोन आया।

कि अपने गुरुभाई योगी सुन्द्राई नाथजी के साथ तुम अस्थल बोहर रोहतक स्थित श्री सिद्ध बाबा मस्तनाथ मठ में कल सुबह प्रभात काल तक पहुँच जाना। बस! सतगुरु जी महाराज के आदेशानुसार हम दोनों गुरुभाई

अपनी करिज्जमा बाईक लेकर 70 K.M. जीन्द से रोहतक स्थित मठ में पहुँच गये। जाकर समाधि पर बाबा सिद्ध योगीराज मस्तनाथ जी महाराज को शिश नवाकर धूने पर आदेश (नमन) कर अपने पूज्य गुरुदेव जी के कमरे में जाकर गुरुजी को विधिवत प्रणाम (आदेश) किया तथा गुरु महाराज के श्रीमुख से कुछ धर्म चर्चा सुनी और हम दोनों गुरुभाईयों को गुरुजी अपने साथ लेकर मठ के वर्तमान मठाधिश्वर आदरणीय महन्त श्री चांद नाथ जी महाराज के दर्शन हेतु ले गये। आगे जाकर महन्त जी के दर्शन कर उनको भी नाथ परम्परागत प्रणाम (आदेश) किया तथा अपने गुरुदेव एवं महन्त जी महाराज के श्री पवित्र चरणों में बैठ गये-

महन्त जी महाराज का मस्तिष्क मानो साक्षात महासिद्ध योगीराज बाबा मस्तनाथ जी महाराज की तरह चन्द्रमा के समान तेज से हमें आशीर्वाद दे रहा हो इधर दूसरी और विराजमान साक्षात् परमेश्वर स्वरूप पूजनीय गुरुदेव के अंग-प्रत्यंग हमें (दोनों गुरुभाईयों को) अपने प्रभाव से लालायित कर रहे थे। इसी दौरान गुरुजी द्वारा सारा कथनांक महंत जी के समक्ष सुनाया गया तदोपरान्त हमारे पूजनीय महन्त श्री चाँदनाथ जी महाराज अपने श्रीमुख से पवित्र प्रवचनों की बरसात करते हुए कहने लगे अरे शुक्राईनाथ तुम इन झगड़ों से निकलकर अपने मस्तिष्क की एवं शरीर की ऊर्जा को देश हित एवं अपनी नाथ सम्प्रदाय की मर्यादा में रहकर गुरु गोरक्ष नाथ जी महाराज में केन्द्रित हो जाओ और सिद्ध नाथ योगियों का जो चरित्र एवं प्रमाण सहित वर्णन शास्त्रों में लिखा है उसे खोजकर अपनी नाथ सम्प्रदाय की पुस्तकों की रचना करो तथा पवित्र श्रीमद्भागवत गीता तथा कृष्णजी महाराज के बारे में महन्त जी महाराज ने ऐसे उदाहरण दिये कि मुझे वो दिन हमेशा याद रहेगा। महाराज जी ने मुझे ग्रन्थों की ओर ज्यादा गहरा अध्ययन करने की प्रेरणा देते हुए कहा कि बेटे शिव अपार शक्ति है वे भक्ति दाता हैं उन्हीं का रूप गोरक्षशक्ति है। वे आपै ही गुरु और आपै ही चेला है। मैं (लेखक) महाराज श्री महन्त

चांदनाथ जी (वर्तमान बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति एवं बहरोड़ के पूर्व विधायक) के अपार उपदेश जो कि हमारे लिए अनमोल ही नहीं अपितु बड़े ही जन्म-जन्मांतरों के धर्मकर्मों से प्राप्त हुए मानता हूँ तथा महन्त जी महाराज द्वारा दिये गये उपदेशों ने मुझे नई आध्यात्मिक शक्ति प्रदान की और मेरे ऊपर एक ऐसी छाप छोड़ दी कि जीवन में पहाड़ों से भी टकराऊं तो मुझे कोई डर नहीं।

महाराज श्री चांदनाथ जी के मुझे दिये गये कुछ प्रवचन संग्रह।।

1. महन्त जी ने कहा कि गीता ही एक ऐसा सम्पूर्ण सृष्टि का शास्त्र है जो कि स्वयं साक्षात भगवान द्वारा पूर्ण अभीभूत है।
2. आप पवित्र श्रीमद्भागवत का जितनी बार भी पूर्ण अध्ययन 18 अध्याय तक करोगे - हर क्रम में नई शक्ति एवं एक अपार शक्तिशाली ज्ञान प्राप्त करोगे।
3. गीता के समान कोई शास्त्र नहीं-
4. पवित्र गीता में दुनियाँ का कोई ऐसा प्रश्न नहीं है
   जिसका उत्तर ना उपलब्ध हो। इसके पढ़ने और सुनने से मनुष्य श्री गौरक्षमयी (परम-धाम) को प्राप्त हो जाता है।
5. मेरे समक्ष महाराज श्री चांदनाथ जी योगी द्वारा गीता और अपने सर्वस्व ध्यान को केन्द्रित करने हेतु जगत को दिया सन्देश-कि सम्पूर्ण विश्व को कोई भी प्रमाण चाहिए या कोई भी शंका पैदा हो तो अपनी पूर्ण निष्ठा एवं भक्तित्व से लग्नपूर्वक श्रीमद्भागवत गीता का अध्ययन करे- क्योंकि इस पवित्र ग्रन्थ से आगे कुछ शेष नहीं रह जाता।
6. महाराज जी ने बताया कि पवित्र गीता में लिखा है कि

   तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं त कार्याकार्य व्यवस्थितो:

   अर्थात्- कृष्ण भगवान कहते है कि तेरे लिए इस कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही एक मात्र प्रमाण है (जब मैंने इस श्लोक को गीता में खोज किया तो महंत जी के मुखाविंद से निकला यह पवित्र

श्लोक गीता अध्याय नं.16 के श्लोक नं. 24 में मिला)

अर्थात गीता के अनुसार महाराज जी मुझे कहना चाहते थे कि शास्त्रों का अध्ययन करो- वे सत्य सृष्टि के प्रमाण है। शंका मत रखो।

7. सम्पूर्ण सृष्टि पवित्र गीता में भूतपूर्व से ही समाहित है

8. बड़े-बड़े सिद्धों से हर जीव-जन्तु यौगिक साकार-निराकार, संजीव-निर्जीव समस्त ब्राह्मण्ड का जररा-जररा प्रमात्मा का कृत्य है महाराज जी ने सामने रखी मेज की ओर संकेत करते हुए- कहा कि ये हमें निर्जीव दिखाई देती है। लेकिन इसमें भी परमात्मा विराजमान है। इस दौरान मेरे द्वारा प्रश्न किया गया-

प्रश्न-1 महाराज जी! निर्जीव में परमात्मा कैसे ?

महंतजी का उत्तर- जो हमारी आँखों को दिखाई देता है वो भी और जो नहीं दिखाई देता वह भी दोनों ही सताओं में परमात्मा है क्योंकि निर्जीव के अन्दर भी कण-कण को सुसज्जित एवं जुड़े रहने की ऊर्जा देने वाला तथा सृष्टि में नाना प्रकार के फूल-फलों एवं उनके आकार-प्रकार को आकृति प्रकृति तथा सुन्दर-सुन्दर रंग-ढंग वह स्वयं देता है। लेकिन दिखाई नहीं देता। नहीं दिखते हुए भी विराजमान है। वही अदृश्य शक्ति परमात्मा कहलाती है और वही शक्ति सम्पूर्ण सृष्टि का संचालन करती है वही सर्वविदित है।

9. साधुसंतों से लेकर जनश्रुति तक महामहंत श्री चांदनाथजी का मुझे उपदेश-महाराज जी दिनांक 6.10.2013 को हरिद्वार पहुँचे रात्रि में विश्राम किया तथा सुबह हवन पूजा पाठ हेतु चले गये तथा लगभग 10 बजे वापिस श्री गोरक्षनाथ मन्दिर, हरिद्वार पहुँचे। करीब एक घण्टे रहने के उपरांत कुछ नाश्ता किया- अचानक योगी महासभा के महामंत्री योगी श्रद्धेय श्री चेताई नाथ जी महाराज (जो कि मेरे पूज्य गुरुवर भी है।) द्वारा मुझे आवाज दी गई।

कि शुक्राईनाथ तुम महंत जी के साथ गंगा घाट पर जाओ जहां महंत

जी गंगा पूजा करेंगे। गुरु आदेशानुसार में महंत जी के साथ-साथ चला गया रास्ते में एक भक्त की दुकान पर महाराज जी रूके और मुझे पूजा हेतु कुछ फूल-मिठाई व दूध इत्यादि सामग्री लेकर आने का आदेश दिया। जब मैं वापिस लौटा तो महाराज जी कुछ मेरी और देखते हुए किसी संवाद में कह रहे थे- (मानो मुझे अग्र जीवन हेतु तथा राष्ट्र में शिक्षा देने हेतु आदेश दे रहे हो।)

महाराज जी बोले (सामने अनिल दुकानदार था) कि जो मनुष्य अपने घर में पाप करता है। उसका कोई ज्यादा दोष नहीं यानि प्रयत्न करने पर वह पापमुक्त हो सकता है।

2. और जो मनुष्य किसो तीर्थ स्थान या किसी भगवान के दर पर पाप करता है। उसका अल्प फल ही उसे भोगना पड़ता है। (पाप मुक्ति के यत्न से भी)

3. लेकिन जो मनुष्य अपने गुरु स्थान पर पाप करता है उस मनुष्य या जीव का दुनिया में कही कोई भी प्राश्चित हेतु साधन नहीं है और नरक की योनियों में पैदा होना पड़ता है तथा वह ब्रह्महत्या से भी ज्यादा पाप का भागी बनता है।

इसी भाव से महाराज जी का यह संदेश जन-जन को बताना चाहूँगा कि गुरु का सम्मान एवं गुरु प्रेम हमें हर मुश्किल से मुश्किल संकट से भी छुड़ा देता है तथा हम धर्म मर्यादा से ही परम् तत्व को प्राप्त करते हैं। अतः गुरु सदा पूज्य होते हैं।

बाबा सिद्ध मस्तनाथ अवतार महंत श्री चांदनाथ जी महाराज सुशिक्षित एवं शास्त्रों का अध्ययन करने वाले एक महान राष्ट्र संत है तथा हमारे नाथ सम्प्रदाय के मजबूत (मुख्य) स्तम्भ है।

महाराज जी उपदेश देते ही नहीं बल्कि जो उपदेश देते है उसके अनुकूल स्वयं आचरण भी करते है।

।। इति श्री महंत चांदनाथ जी महाराज द्वारा

दिये हुये अल्प प्रवचनो की मोती माला राष्ट्र को समर्पित।।

इसके साथ-साथ इस विषय पर जब मैं अपने गुरु जी के समक्ष अपनी प्रार्थना करता हूँ। तो गुरुजी भी अस्थल बोहर पीठाधीश्वर महन्त श्री चांदनाथ जी महाराज के दिये हुए प्रवचनों को पुष्प अर्पित करते हुए बताते है कि-

1. शास्त्र ही सर्वे सर्वा है। वही सत्य प्रमाण है।
2. भक्त कबीर दास जी से लेकर गरीबदास जी महाराज तथा रविदास, मीराबाई, नानक साहेब, रामदास जी, महर्षि पंतजलि, हृग्रीव, महर्षि गर्ग, पाणिनी व ब्रह्म ऋषि इत्यादि ये सभी एवं अन्य भी बहुत हुए- उपरोक्त सभी संत गुरुदेव श्री साक्षात शिव योगाचार्य गोरक्ष नाथ जी महाराज से किसी न किसी माध्यम से दीक्षित हुए है तथा गुरु गोरक्ष ही इन सबको गुरु बनकर ज्ञान देने वाले तथा मुक्ति तत्व हेतु मार्गदर्शन देने वाले मालिक रूप में मिले है। अर्थात् सर्वेसर्वा समर्थ गुरु गोरक्ष ही इन्हें गुरु रूप में प्राप्त हुए है।

   (नोट :- किसी भी भाई को 2 न. पाईंट पढ़कर पीड़ा हुई हो तो कृपया दिमाग पर ज्यादा जोर मत देवे- क्योंकि इसी पुस्तक में आगे इस पाईंट को विशेष ध्यान में रखकर प्रमाण दिये गये हैं जो कि आप मिलान कर सकते है।)
3. महंत जी के समकक्ष ही पूज्य गुरुदेव, गीता के अनुसार प्रमाण हेतु दिये गये उदाहरण के बाद सत्गुरु देव कहते है कि

   वेदाः प्रमाणं स्मृत्याः प्रमाणं धर्मार्थ युक्तं वचनं प्रमाणम्
   नेत्रयं यस्य भवेत्प्रमाणं कस्तस्य कुर्याद्वचनम प्रमाणम्।।

   अर्थात् जिसमें वेदों का प्रमाण व स्मृतियाँ प्रमाण और धर्म अर्थ युक्त सत्य वक्ता उच्च कोटी के पुरुषों का वाक्य प्रमाण है

   इन तीनों को जो नहीं मानता है। उसके भ्रम को दूर करने के लिए कौन-सा वाक्य प्रमाण शील है। अर्थात् कोई भी वाक्य प्रमाण नहीं है। इस प्रकार के मनुष्यों की आत्मा सड़ी हुई होती है। जो सत्य वेदवित

प्रमाणों को ठुकराता है।

उदाहरण – देवियों और देवताओं को ठुकराना

– पाषाण पूजा को ठुकराना

– मन घड़त और मनमुखी शास्त्र बनाकर जो शास्त्रों का अपमान करता है आदि–

नोट :– जबकि मूर्ति पूजा और देवी–देवता प्रमाणित है हमारे आदर्श है। वेदवित है।

प्रमाण हेतु पढ़े – स्कन्द पुराण के केदार खण्ड में अध्याय न. 45 में

4. जो पुरुष अर्थात् जो मानव शास्त्र विरूद्ध आचरण करता है। वह घोर नरक का भागी बनता है।
5. हमारा अतीत हमारे शास्त्र पुराणों में, उपनिषदों में स्मृतियों में मानो कूट–कूट कर भरा हुआ है।
6. शस्त्र और शास्त्र दोनों में पूर्ण होना ही हिन्दुत्व है।
7. "नाथ" शब्द ही नहीं है बल्कि संस्कृति का नाम है। जिसके असंख्य अर्थ निकलते है।
9. सिद्धों के आचार्य तथा देवो के देव

   मुसलमानों के पीर अनादि काल के फकीर एवं हिन्दुओं के गुरु रूप में पूजे जाते है नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तक शम्भुजति गुरु गोरक्ष नाथ जी महाराज।।
10. नाथ पंथ यानि नाथ सम्प्रदाय के संत, सिद्ध, ज्ञानी तपस्वी इस सम्पूर्ण सृष्टि के संचालन को अनादि काल से संतुलित करते हुए आज भी अपने पथ पर अडिग है।

    ऐसी नाथ सम्प्रदाय को भगवान गोरक्ष नाथ जी की ही असीम कृपा मिल रही है।

    वे गुरु गोरक्ष सगुण साकार एवं निर्गुण निराकार दोनों ही स्थितियों में समाहित है।

    इस प्रकार इस पुस्तक को लिखने के लिए मुझे मेरे परम पूज्य गुरु जी

महंत श्री चेताईनाथ जी महाराज का पावन आशीर्वाद तथा श्रद्धेय महन्त श्री चांदनाथ जी महाराज की सद्प्रेरणा मिली। मैं अपने पूर्ण निश्चय एवं निष्ठा से गुरुजानों के आदेश से भगवान सत्गुरु योगाचार्य गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज एवं शिव से लेकर नाथ सिद्धों सहित सभी देवी देवताओं के शास्त्रों का अध्ययन कर शास्त्र प्रमाण सहित इस पवित्र टीका की रचना कर समाज एवं राष्ट्र को शास्त्रोनुकूल प्रमाण सहित साधना तथा देवीय शक्तियों से एकीकरण का यह शाश्वत ग्रन्थ समर्पित कर रहा हूँ तथा अप्रमाणित पुस्तकों का जिन अधर्मियों ने प्रचार-प्रसार किया है। मुझे आशा है कि यह पुस्तक उनका खण्डन कर शाश्वत सत्य की स्थापना करेगी-

और पाठकगण इस टीका के सत्यार्थ पर विवेकपूर्ण विचार करेंगे। यही आशा करता हूँ

योगी शुक्राईनाथ

श्री स्वामी कृष्णाई नाथ योगाश्रम,

कण्डेला, जीन्द/हरियाणा

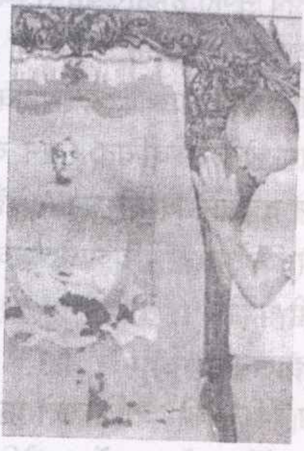

ब्रेन लारा वेस्टीन्डिज खिलाड़ी द्वारा विवेकानन्द जी की प्रतिमा का पूजन

हरिद्वार में नानकवाड़ा में संत नानक साहब की मूर्ति पूजा का सत्य प्रमाण देती पाषाण-मूर्ति

नवनाथों का देव अवतरण

गजाननं भूतगणां दिसेवितं, कपित् जम्बू फल चारु भक्षणम्।
उमा सुतम्शोकविनाशकारकम् नमामि विघ्नेश्वर पाद्पंकजमं।।

1. **गणपति जी महाराज** - सम्पूर्ण ब्रह्मण्ड में सर्वप्रथम पूजा के अधिकारी तथा पूर्ण यशस्वी पार्वती पुत्र लम्बोदर गजाननं को भला कौन नहीं जानता! कौन अपरिचित है उनके यश-पराक्रम से। जो राक्षसी तत्वों का दमन करने वाले एवं अपने दायित्व का पूर्ण पालन करने वाले, सम्पूर्ण जगत को शिवत्व (निराकार शक्ति) से एवं उनकी प्रकाष्ठा से अवगत कराने वाले साक्षात् नाथ स्वरूप है। ऐसे भगवान श्री गजहस्ती को बार-बार प्रणाम है।। नमस्कार है।

वृतान्त - सम्पूर्ण सृष्टि की रचना, पालना तथा संहार तक का श्रेय लेने वाले पूर्ण परमात्मा जो कि ''नाथ'' (नाम से विख्यात है।) नाना रूपों में अवतरित होते रहते है अर्थात् वे साक्षात् गोरक्ष ही है। क्योंकि सृष्टि के सम्पूर्ण देवता नाथ ही है अर्थात् साक्षात् सर्वोपरि श्रेष्ठ शिव के ही नाथ स्वरूप से प्रकट है तथा उन्हीं को भजते है और यह सच्चाई समाज से छुपी रहने का एक ही बड़ा दीर्घ राज है और वो है परतन्त्रता।। हिन्दुस्थान के साहित्य तथा शाश्वत ग्रन्थों को मिटाकर मन्दिरों को तोड़कर भारत को विकसित होने से वंचित रखने की हजारों नाकामयाब कोशिश-जोकि दिल दहलाने वाली घटनाएं है। क्योंकि मुसलमान शासक नहीं चाहते थे कि भारत भविष्य उज्जवल हो- इसलिए इतिहास को बर्बरता झेलनी पड़ी-

उदाहरण - बिहार का नालंदा विश्वविद्यालय-

जिसमें नाथ सम्प्रदाय के एवं शिव गोरक्ष चरित्र को दर्शाने वाले ऋषि महर्षियों के परिश्रम से लिखे हुए गूढ़ ज्ञान देने वाले शास्त्रों का वेदिक भण्डार कोष था- लेकिन मुगलों ने जलाकर राख कर दिया।

दूसरा उदाहरण - मुगल राजा अकबर तथा ओरंगजेब व बाबर इन्होंने

तो हमारे प्राचीन मन्दिरों को ज्यादा से ज्यादा नष्ट करवाया और जहां पर इतिहास से सम्बन्धित धर्म संस्कृति ग्रन्थों का भण्डार होने का इन मक्कारों को पता चला उसी स्थान को इन्होंने जला कर राख करा दिया-

इसलिए सच्चाई को राष्ट्र से गुप्त रहना पड़ा तथा अब हमारी नाथ सम्प्रदाय धीरे-धीरे खोज कर प्रमाण सहित बचे हुए शास्त्रों का अध्ययन कर वास्तविकता समाज एवं देश के समक्ष प्रकट करने का पुण्य कार्य कर रही है।

भगवान गणेश जी महाराज - गणपति जी नाथ परम्परा से दीक्षित है तथा नाथ सम्प्रदाय में विश्व विख्यात नवनाथ प्रणाली में अहम स्थान रखने वाले सिद्ध राज योगी है। अत: ये **सिद्ध योगी गजबेली गज कथंडनाथ जी** नाम द्वारा अलंकृत होकर जग प्रसिद्ध हुए।
(प्रमाणहेतु नवनाथ चरित्र एवं किसी भी पुराण में वर्णित नवनाथ वर्णन में देखे)

2. **आदिनाथ** - स्वयं निराकार (ॐ कार में लीन) ध्वनि रूप तथा पूर्ण समर्थ नाथों के नाथ योगेश्वर पूर्ण परमात्मा सदाशिव जो की सर्व विख्यात तथा प्रकृति के जर्रे-जर्रे में निवास करते है। लोक कल्याणार्थ आदि नाथ स्वरूप धारण करने वाले ये ही साक्षात् शिव भगवान नाना नामों से जाने-जानेवाले योगी है अर्थात् पूर्ण परम पिता है। (प्रमाण हेतु देखिए नवनाथ वर्णन)

3. **माता पार्वती** - जगतजननी नौ दुर्गा तथा आदि शक्ति अम्बा ही शिवा नाम से सुविख्यात देवी है तथा माता पार्वती देवी भी नाथ दीक्षित है। नवनाथ श्रेणी में सर्वप्रथम आदिनाथ का स्थान तथा दूसरे स्थान पर शिवा अपना गौरव रखते हुए **सिद्ध योगी उदयनाथजी महाराज** के नाम से स्थित है तथा नाथ (दर्शनी) योगिनी है। पूर्ण समर्थ शिव प्रिया है।

(प्रमाण-पुराणों में कूट-कूट कर नौनाथ व्याख्या भरी हुई है।)
समाधि स्थल - अलवर, जोधावास गाँव-मई जोड़ में यह स्थल स्वयं प्रमाण है।

4. **प्रभु ब्रह्मा जी** - जल तत्व से अवतरित तथा चारवेद, अठारह पुराण, सर्वशास्त्र, वार, नक्षत्र नवग्रह, व्याकरण, बारह मास, कला तर्पण मंत्र-तंत्र, चौबीस गायत्री, सूतक-पातक इत्यादि के महाप्रचण्ड ज्ञाता ही साक्षात ब्रह्माजी है तथा महाज्ञानी, महायोगी, महासिद्ध नाथ रूप में प्रकट होने वाले ब्रह्माजी ही **योगी सिद्ध सत्यनाथ** नाम से उदयनाथ (पार्वती) से वरदान लेने वाले महायोगी है। नवनाथों की शृंखला में अपना अहम स्थान रखते है। इन्हीं **सिद्ध योगी सत्यनाथ** द्वारा नाथ सम्प्रदाय में ''सतनाथ पंथ'' चलाया गया - जो आज भी सदियों से चला आ रहा है। नाथजी के 12 पंथों में से एक है **सतनाथी पंथ**। प्रमाण हेतु नाथ सम्प्रदाय का प्रचलित पंथ एवं नवनाथों का जहाँ भी वर्णन हो वही सत्यनाथ (ब्रह्माजी) का स्थान देखे (पुराणों में भी)

5. **भगवान विष्णु जी** - विष्णु पुराण में विष्णु जी महाराज का सम्पूर्ण परिचय एवं विष्णु जी का सम्पूर्ण चरित्र बड़े ही सुन्दर ढंग से लिखा हुआ है। शील चरित्र गुण धर्मी भगवान विष्णु शंख, चक्र, पुष्प धारण करने वाले तथा शेष नाग की शैय्या पर विराजने वाले है तथा सृष्टि का पालन हार का श्रेय रखने वाले ''सत्'' गुण को धारण करने वाले है। लेकिन जब निराकार परमात्मा की अर्थात् नाथ पूर्ण परमात्मा के आदिनाथ रूप के दर्शन किये तो विष्णुजी भी नाथ स्वरूप को पाने हेतु आदिनाथ जी से प्रार्थना कर विनती की तथा विनती स्वीकार कर सिद्ध योगेश्वर आदिनाथ जी ने विष्णु जी को नाथ परम्परा से दीक्षित किया। नाथ संस्कृति की परम्परागत नामांकरण संस्कार कर विष्णु जी का योगी सन्तोष नाथ नाम रखा तथा फिर वे आगे चलकर **सिद्ध योगी सन्तोष नाथ (विष्णु जी)** जी के नाम से जग में विख्यात हुए।

(प्रमाण – नाथ सम्प्रदाय में पूर्व से चली आ रही नवनाथ परम्परा में सन्तोषनाथ (विष्णु जी) का स्थान देखें तथा कही भी पुराणों में भी देख सकते है। जहाँ नवनाथ वर्णन हो)

6. **चन्द्रदेव (चन्द्रमा देवता)** – नवनाथों में सिद्ध योगी चन्द्र चौरंगीनाथ जी का एक प्रधान स्थान है तथा वे ही चंद्र अवतार है। नाथ परम्परा के अन्तर्गत वे पूरण भक्त के नाम से भी जाने जाते है। भगवान गोरक्षनाथ जी से नाथ दीक्षा लेने के बाद नाथ वृति में नाथ विधान से संस्कार होने के कारण ही योगी चौरंगीनाथ (चन्द्रदेव) के नाम से प्रसिद्ध होकर सिद्ध गंतव्य को प्राप्त हुए तथा नवनाथों की गिनती में सिद्ध चोरंगीनाथ नाम से प्रकाशमान हुये।

प्रमाण (नवनाथ स्वरूप में सातवाँ स्थान ग्रहण करने वाले नाथ जी)

7. **सिद्ध मत्स्येन्द्र नाथ जी** - शिव अपरम्पार शक्ति से प्रकट तथा योगियों में श्रेष्ठ एवं मछली के माध्यम से अवतरित होने के कारण ही इनका नाम मत्स्येन्द्र नाथ हुआ तथा नाथ स्वरूप पाने के बाद नाथ वर्ण पाने हेतु शिव की घोर उपासना के तत्पश्चात् माया स्वरूपी शिवत्व को पाकर नाथ सम्प्रदाय को अग्रसरता प्रदान करने हेतु। माया स्वरूपी होकर योग साधना से सिद्धिमय होकर नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तक बने एवं नाथ सम्प्रदाय में भगवान शिव स्वयं तपस्वी रूप अर्थात् अघोर रूप धारण कर गोरक्षनाथ बनकर महासिद्ध मत्स्येन्द्र नाथ जी के शिष्य बने इसी हेतु से मत्स्येन्द्र नाथ जी नाथ सम्प्रदाय में दादा गुरु कहलाते है अर्थात् गुरु गोरक्ष नाथ सम्पूर्ण सम्प्रदाय के गुरु है तथा गोरक्षनाथ जी महाराज के गुरु महासिद्ध मत्स्येन्द्र नाथ जी है। (प्रमाण - **अस्थल बोहर स्थित बाबा मस्तनाथ मठ एवं बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति महंत श्री चांदनाथजी महाराज** का पूर्व में दिया हुआ प्रवचन इस हेतु का प्रमाण है।

अर्थात् - **शिव कहते है कि मैं आपे ही गुरु और आपे ही चेला-)**

नोट :- क्योंकि शिव एक और तो स्वयं आदिनाथ बनकर मत्स्येन्द्रनाथ जी के गुरु बन जाते है तथा दूसरी और स्वयं ही योगमार्ग के अभ्यूदय के लिए गोरक्षनाथ स्वरूप धारण कर मत्स्येन्द्र नाथ जी के शिष्य बन जाते है।)

प्रमाण न.2- (कल्पद्रुतंत्रम शास्त्र में तथा नारद पुराण एवं स्कन्द पुराण में यह वृतान्त बड़ी ही सुन्दरता से समाहित है)

8. सतगुरु शम्भुजति योगाचार्य श्री गोरक्षनाथ जी

सम्पूर्ण चल एवं अचल सृष्टि के संचालक गुरुदेव गोरक्षनाथ जी की क्या महिमा है। कोई सीमा ही नहीं क्योंकि आज से पूर्व में जितने भी सन्त हुए है तथा जो उच्च कोटि के विद्वान हुए है। उन सभी ने गोरक्ष महिमा गाई है। गुरु रूप में गोरक्ष कृपा ही पाने हेतु अथाह परिश्रम किया है तथा क्रमशः कहा भी है।

कि-**गोरक्ष कृपा ही केवलम्** अतः अग्रलिखित इस सम्पूर्ण लेखनी में कुछ सन्तों का स्वयं पाठ पढ़कर प्रमाण से मिलान भी करे

-✤-

शिव से गोरक्ष

1. श्री आदि-अनादि अनन्त रूपा करुणामयी भगवान शिव ही अखण्ड सृष्टि एवं ब्रह्माण्ड के संचालन से संहार तक का स्वयं श्रेय लेते है। इसलिए ही मुख्य तथा नाना प्रकार के रूप प्रविष्ठ कर संसार चक्र को गति प्रदान करते है और शिवत्व से सर्व लोकों की रक्षा का हेतु रखते है। जिनका यहां विवरण करना व लिखना कभी पूर्ण विराम तक नहीं जा सकता-ऐसे ही अवर्णनीय कृपालु जगत पिता शिव का एक सर्व भिन्न एवं विशिष्ट और सर्वथा पूजनीय स्वयं शक्ति रूप साक्षात

"योगाचार्य गुरु गोरक्ष नाथ" है। जब भगवान शिव से देवताओं द्वारा पूछा गया कि हे प्रभु! ये अथाह सामर्थ्य और सम्पूर्ण बलशाली तपोनिष्टता के साथ-साथ जगत के कल्याण तक का सामर्थ्य रखने वाला गोरक्षनाथ कौन है? इस प्रकार की देवताओं द्वारा प्रार्थना स्वरूप प्रश्न करने पर जगदीश्वर उमानाथ बोले कि हे देवताओं

अहं मेवाऽस्मि गोरक्षो मद्रूपंतन्नि बोधतः।
योगमार्ग प्रचाराय, मया रूप मिदं धृतम्।।

(प्रमाण - कल्पद्रुतंत्र) से

अर्थात् - मैं ही साक्षात् गोरक्षनाथ हूँ एवं गोरक्षनाथ मेरा ही स्वरूप है योगमार्ग के अभ्युदय के लिए मैंने ही इस रूप को धारण किया है। अर्थात् मैंने ही नाथ रूप से यति रूप धारण किया है।

2. भगवान सत्गुरु श्री योगाचार्य शम्भुजति गोरक्षनाथ जी का बहुत से शास्त्र जैसे-पुराण, साहित्य, संहिता, आयुर्वेद तथा तन्त्र शास्त्रों में भी पवित्र वर्णन मिलता है तथा ऋषि-मुनियों जैसे व्यास जी महाराज, ऋषि अगस्त्य, देवर्षि नारद व ह्यग्रीव आदि जैसे अन्य बुद्धिमान ऋषि-मुनियों ने भी गुरु गोरक्षनाथ जी को पूर्ण परमात्मा तथा सिद्धों में महासिद्ध शिवावतार रूप मानकर अर्थात् खोज पूर्वक वर्णन किया है और गोरक्ष रूप की स्तुतियाँ भी की है। वही प्रमाण हेतु पढ़े बृहद नारदीय पुराण में, इस पुराण के उत्तर भाग के 69 वे अध्याय में संवाद - मधु मोहिनी के कामक्ष्या महात्म्य में जहाँ लिखित है-
कि युग-युगान्तरों के अमर सर्व व सर्वज्ञ सर्व शक्तिमान है जो इस समय समाधिस्थ है। कलि के एक चरण बीतने पर फिर प्रगट होकर उपदेश करेंगे-तीन युग सतयुग, त्रेता, द्वापर में स्वयं बाबा मत्स्येन्द्रनाथ जी व गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज स्वयं उपदेश करते थे।

3. नारद पुराण में लिखा है कि-

आदिनाथो गुरुर्यस्य गोरक्षस्य च यो गुरुः।
मत्स्येन्द्र तमहं वन्दे महासिद्धं जगद्गुरुम्।।

अर्थात् मैं महासिद्ध मत्स्येन्द्र नाथजी को अर्थात् जिनके गुरु आदिनाथ शिव है,वे गुरु गोरक्षनाथजी के गुरु है। इस प्रकार के महासिद्ध जगत्गुरु मत्स्येन्द्र नाथ जी आपको वन्दन करता हूँ। आदेश करता हूँ। प्रणाम करता हूँ।

4. **यस्मात्मत्स्योदराज्ञातो योगिनां प्रवरोह्मयम।**
तस्मातु मत्स्यनाथेति लो ख्यातो भविष्यति।।

(प्रमाण हेतु स्कन्द पुराण)

अर्थात् - हे देवी यह बालक मत्स्य (मछली) से प्रकट (पैदा) हुआ है तथा यह सर्वयोगीजनों में श्रेष्ठ है इस हेतु से इसका नाम मत्स्येन्द्र नाथ प्रसिद्ध होगा।

नोट :- यहाँ स्पष्ट है कि मत्स्येन्द्र नाथ जी महासिद्ध ही नहीं बल्कि अद्भुत लीला से भी प्रकट हुए तथा सर्वप्रथम नाथ परम्परा का बीज बोने वाले और गुरु गोरक्षनाथ जी के गुरु भी हुए है।

ऐसे नाथों का जीवन एवं काल रहस्यमयी है।

जिनका कोई पार नहीं है जिनसे बढ़कर कोई ज्ञान नहीं! यही सत्य है। क्योंकि भगवान कृष्ण जी को सारा जग भली भांति जानता है और उनको पूजा-अर्चना के योग्य भी माना जाता है। श्री कृष्ण जी महाराज पवित्र श्रीमद्भागवत गीता का पवित्र व्याख्यान करने वाले महान यशस्वी एवं अथाह कीर्ति-वैभवशाली और शुद्ध चरित्र वाले व दैवीय शक्तियों का अनन्त कोष रखने वाले होने के साथ-साथ अपने आप में असंख्य सद्गुणों की खान भी है। जो कि श्री मद्भागवत गीता में स्वयं ही हर रूप की भूमिका का श्रेय लेते है। इस प्रकार के भगवान श्री कृष्ण जी ने भी गुरु गोरक्ष नाथ जी योगाचार्य को अपना गुरु स्वीकार किया है अर्थात् दीक्षा ली। इतना ही नहीं जब श्री कृष्ण जी और रूक्मणि जी का विवाह हुआ। उस समय रूक्मणि जी के रूप सौन्दर्य से मोहित सभी देवताओं के असमर्थ होने पर कंकण बाधने

हेतु ऋषि गर्ग द्वारा बताया गया कि इस कठोर कार्य को कोई यति सिद्ध ही कर सकता है और उसकी सामर्थता महायोगी राज सिद्ध श्री योगेश्वर गुरु गोरक्षनाथजी में ही विद्यमान है, यह सुन कर सभी देवताओं ऋषियों सहित महायोगी गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज की स्तुति करने लगे तब कुछ ही समयोपरान्त योगाचार्य भगवाधारी शिवस्वरूपा कानों में कुण्डल धारण किये हुए एकाऐक नाथ जी सबके समक्ष प्रकट हुए। यह दृश्य देखकर सभी देवगण उत्साह एवं खुशी के आंचल में समा गये। तदोपरान्त पूर्ण सन्तुष्ट शील गुणी योगेन्द्र भगवान श्री गोरक्षनाथ जी ने देवादि की प्रार्थना करने पर रूक्मणि को कंकण बांधकर योग को प्रत्यक्ष सिद्ध किया।

इसके बाद भगवान श्री कृष्ण जी और रूक्मणि दोनों द्वारा योगी श्री गोरक्षनाथ जी की स्तुतियाँ की गई। इस प्रकार के महायोगी गोरक्षनाथ जी का रहस्य जानने के लिए सभी देवी-देवता सदैव उत्सुक रहे और गोरक्ष रहस्य को अवर्णनीय ही कहा हैं। जिसका कोई ओर-छोर, आर-पार नहीं वही शिव गोरक्ष शक्ति है।

(प्रमाण हेतु पढे कल्पद्रुतंत्र के उत्तरार्द्ध में वर्णित वर्णन एवं गर्ग संहिता में)

गोरक्षनाथ जी का ऋषित्व एवं राज सिंहासनों पर प्रभाव

5. **राजाओं में नाथ रहस्य**-भगवान आदि-अनादि योगाचार्य श्री गोरक्ष नाथ जी महाराज को सम्पूर्ण देवताओं के बाद ऋषियों-मुनियों तथा सैकड़ों बड़े-बड़े राजा-महाराजा जो अभिमान पूर्वक अपने आपको ही सब कुछ समझते थे-उन सभी ने योगेन्द्र श्री गोरक्षनाथ जी की दिव्य योग-धारा देखकर नाथ जी महाराज को शिरोधार्य किया-जिसके एक नहीं बल्कि बड़े-बड़े असंख्य उदाहरण है।

जैसे उदाहरण स्वरूप नेपाल मण्डल के राजा नरेन्द्र देव, राजा रत्न परिक्षक (जोकि बाद में दीक्षा लेकर रत्ननाथ जी के नाम से प्रसिद्ध

हुए) तथा राजा शीलवान, राजा विरेन्द्र सिंह एवं अन्य भी अनेकों राजाओं ने महायोगी गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज से प्रभावित होकर सन्तोषी योगी को नतमस्तक हुए एवं प्रायः सुना जाता है कि नाथ योगी एवं परम्परा राज योग एवं राजाओं की परम्परा है। क्योंकि यह परम्परा हमेशा से सिद्धों की परम्परा रही है तथा इस नाथ सम्प्रदाय में हमेशा से गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज द्वारा गरीब लोगों को कम और अथाह खानदानी और राजसी राजा-महाराजाओं को ज्यादा दीक्षित किया गया। क्योंकि उस समय राजा महाराजाओं का राज-पाट था और कुछ राजा लंकापति रावण से लेकर लगभग अभिमानी थे। अभिमान पूर्वक किसी के साथ भी मन-माना आचरण और किसी को भी अपनी पद प्रतिष्ठा के अहंकार से लज्जित करते हुए तनिक भी नहीं हिचकते थे।

इसलिए गुरु गोरक्षनाथजी द्वारा इन अहंकारी राजाओं को अपने योग बल से प्रभावित कर उन्हें दयालु बनने पर विवश एवं परमात्म तत्व से अवगत किया गया- महाराज गुरु गोरक्षनाथ जी के चौदह सौ (1400) विरक्त शिष्य थे। लगभग सभी राजा और राजकुमार ही थे। जैसे लोकविख्यात उदाहरण स्वरूप राजा गोपीचन्द और राजा भर्तृहरि जी ऐसे ही सैकड़ों उदाहरण है। जोकि राजा होते हुए भी राज-पाट को छोड़कर नाथों की शरण को प्राप्त हुए और साक्षात् गोरक्षात्मा को प्राप्त हुए क्योंकि गोरक्षनाथ जी को जानने की लग्न ही उन्हें अपार दिखी और गोरक्ष रहस्य का कोई अन्त नहीं पाने पर उन्होंने अपने आप का पूर्ण समर्पण श्री नाथ जी महाराज को किया और कुण्डल धारी होकर भर्तृहरि नाथ (विचार नाथजी) और गोपीचन्द (श्रंगेरीपानाथजी) महाराज के नाम से प्रसिद्ध हुए तथा अनेकों धर्मग्रंथों की भी रचना की।

6. **ऋषियों में नाथ जी** - परशुराम जी बहुत बड़े ऋषित्व वाले और चहुँ

और ख्याति वाले ऋषियों की गिनती में गिने जाते है और उनका प्राक्रम भी हर कोई जानता है। महाप्राक्रमी एवं तेजस्वी होने के साथ-साथ धनुर्धरता में भी पारंगत थे एवं तपस्या के विषय में भी श्रेष्ठ मुनि थे। फिर भी परशुराम जी भगवान गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज के आगे नतमस्तक हुए और उनके दिव्य दृष्टिकोण से प्रभावित होकर नाथजी महाराज के दर्शनी शिष्य बने। पूर्णतया स्वयं को गोरक्ष चरणों में भेंट किया और परशुनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुए। इसके साथ ही दूसरा बड़ा उदाहरण जो कि पवित्र श्री मद्‌भाग्वत गीता से भी जुड़ा हुआ प्रतीत होता है। गीता अ.10 श्लोक 26 में लिखा है-

सिद्धानां कपिलो मुनिः।।

अर्थात्-भगवान श्री कृष्ण जी कहते है कि सिद्धों में मैं कपिल मुनि हूँ।। (जरा गौर से पढ़िये और समझिये) कि कपिल मुनि कोई साधारण और मामूली मुनिवर नहीं थे। अपितु कृष्णवर्णी और सर्वसिद्ध होने के साथ-साथ उच्च कोटी के प्रचण्ड विद्वान एवं पूर्ण संतत्व वाले ऋषि थे। साथ ही भगवान कृष्ण उनकी तुलना स्वयं से करते है। ऐसे महामुनि कपिल जी महाराज कोई छोटी हस्ती नहीं थे। लेकिन फिर भी श्री गुरु गोरक्षनाथ जी के आगे नतमस्तक थे और नाथजी से अति प्रभावित हुए और गुरु रूप में महायोगी महासिद्ध, महापराक्रमी गुरु गोरक्षनाथ जी को उनका विरक्त शिष्य बनकर स्वीकार किया और दर्शन (कानों में कुण्डल) लेकर कपिल मुनि से योगी कपिल नाथ के नाम से प्रसिद्ध हुए तथा गोरक्षनाथ जी के 1400 शिष्यों में से एक शिष्य थे तथा उन्होंने नाथ सम्प्रदाय में कपलानी पंथ भी चलाया है।

7. श्री हनुमान जी एवं भगवान राम द्वारा गोरक्षनाथ जी का स्तवन-

राजा रामचन्द्र जी जो कि महाराज दशरथ के पुत्र रूप में पैदा हुए इनकी चहूँ ओर फैली प्रसिद्धि से कौन अनभिज्ञ है जिनकी कबीर

आदि उपासना करते हैं। राजा राम कोई साधारण राजा या मानव नहीं थे। बल्कि उनपर स्वयं परमात्मा की असीम अनुकम्पा व शील दृष्टि के साथ सभी ऋषि मुनियों की भी शीतल दृष्टि थी और साक्षात् नारायण स्वरूप थे- इस प्रकार के प्रभु राम और उनका परम् शिष्य बजरंगी हनुमान दोनों ने गोरक्ष नाथ जी से मंत्र दीक्षा ली और नाथ योगी बनकर प्रसिद्ध हुए। पवन पुत्र हनुमान जी तो बीड़ भंजन-बीड़ बंक्कनाथ के नाम से प्रसिद्ध है। हमारे प्रबुद्ध वर्ग के ऋषि मुनियों ने तो यहाँ तक कहा है कि जो पूर्ण से भी पूर्ण है वहीं नाथ है। भगवान राम से कृष्ण तक ने भी गोरक्ष नाथ जी को गुरु रूप में स्वीकार किया है। श्रीकृष्ण जी ने तो बार-बार गोरक्षनाथ जी का स्तुतिपूर्वक गुणगान करते हुए नाथ जी को कल्पद्रुम तंत्र में प्रणाम (नमस्कार) किया है। भगवान राम गोरक्ष नाथ जी द्वारा मंत्र दीक्षा देने के पश्चात् जंगल की ओर प्रस्थान करे गये-गुरु गोरक्ष नाथ जी द्वारा श्रीरामचन्द्र जी का नाम अचल नाथ रख दिया गया था वन विचरण करते हुए योगी अचलनाथ जी जब भी अन्न व जल ग्रहण करते। तो वे वृक्षों के पत्तो को जोड़कर पातल (पत्तों की थाल) बनाकर उस पत्तियों से निर्मित थाली में ही सब कुछ ग्रहण करते थे। उस समय जंगलों के निकट ऋषि मुनि ज्यादा निवास करते थे। एवं शास्त्रों का लेखन पठन-पाठन करते रहते थे। इसलिए **अचलनाथ जी** (रामजी ने ऋषि-मुनियों के साथ लम्बा समय व्यतीत किया। ऋषियों ने उनको नाथ स्वरूप के कारण तथा उनके योग से तप से, ज्ञान से प्रभावित होकर उनको महर्षि की उपाधि दी तथा अपने उद्बोधन में उनका नाम रखना चाहा। (जोकि नाथों की बजाय ऋषियों में मिलता जुलता भी हो।)

अतः उन्होंने विचार किया कि इनका नाम इनके लक्षण गुण के अतिरिक्त ही हो- इसलिए भगवान रामचन्द्र (योगी अचलनाथजी) का नाम ऋषियों द्वारा महर्षि पतञ्जलि रख दिया गया अर्थात पत्तों पर

अन्न व जल ग्रहण करने वाला ऋषि।। ये ही **महर्षि पतञ्जलि** नाम से लोकविख्यात हुए इनके साथ लक्ष्मण जी थे उन्होंने भी गोरक्षनाथ से दीक्षा ग्रहण की।। लक्ष्मण जी का नाम जती स्वरूप **योगी नागनाथ जी** प्रसिद्ध होकर प्रकाश में आया एवं **हनुमान बीड़बंक्क-बंकनाथ** के नाम से प्रसिद्ध हुए। ज्ञान दीक्षा के उपदेश पाकर नाथ सम्प्रदाय में वर्तमान तक उस समय का प्रचलित **पंथ 12 पंथों में से एक है** जिसका नाम भगवान श्री राम के ही नाम पर आधारित है। अर्थात् **''राम पंथ'' यही दीर्घ प्रमाण है।**

-✤-

भक्त कबीर जी एवं उनके शिष्य द्वारा स्वयं के ग्रंथ रत्नसागर में गोरक्ष नाथ स्तुति

1. सन्त कहलाने वाले महान कवि रूप में प्रकाशमान हुए भक्त कबीर दास जी।।

अर्थात् इनके तो नाम से ही साफ स्पष्ट होता है। जैसे-

नाम है भक्त कबीर दास =

भक्त = भक्ति या आराधना करने वाला (या हम कह सकते है कि यह शब्द अर्थात् भक्त शब्द आराधना या साधना करने वालों का सांकेतिक शब्द है)

कबीर = जन मानस में सांकेतिक रूप से अलंकृत करने का देह भूत शब्द।।

दास = जो संतों की सेवा करने हेतु सेवक बनकर या अपने से बड़ों का सेवा भाव से सेवक बनकर आज्ञापूर्वक जो कहा गया- उसे किया और जो इष्ट द्वारा दिया गया उसे ही खाया-पीया और उसी के इशारे पर कर्म करते हुए अपने इष्ट को

आत्मिक सुख देने वाला ही दास कहलाता है।

उदाहरण - स्वरूप देखिये-कबीर पंथियों का गुरु ग्रन्थ साहिब, मोटा टाईप, पृष्ठ नं. 981 तथा दोहा नं. 15 को एवं कबीर पंथ का मुख्य ग्रन्थ रूपी पुस्तक कबीर बीजक का दोहा नं. 271 पर जहाँ लिखा है। अर्थात् कबीर जी स्वयं कहते है-

कबीर कुतिया राम की मोतियाँ मेरो नाम।
गले रामकी जेवड़ी, जित खिंचे तित जांव।।

अर्थात् - भक्त कबीर जी स्वयं कहते है कि मैं तो राम का कुत्ता हूँ, अर्थात् कुत्ता शब्द से अभिप्राय है कि मुझे राम जी द्वारा जो कुछ भी किसी भी प्रकार का रूखा-सुखा दिया जाता है। मैं उसे ही ग्रहण करने वाला हूँ तथा मेरे गले में रामजी की जेबड़ी (रस्सी) है। राम जी मुझे जिधर भी खींचते है। मैं उधर ही जाने वाला हूँ। अर्थात् रामजी की आज्ञा मानकर चलने वाला मैं उनका दास हूँ। सेवक हूँ। उनसे प्रतिबंधित हूँ।। मैं उनका वफादार सेवक हूँ।। (यहाँ कबीर में राम भक्ति का रंग स्पष्ट दिखाई पड़ता है।)

दूसरे उदाहरण में कबीर जी द्वारा गोरक्षनाथ जी को गुरु स्वीकार करना - भ्रान्तियों तथा कपोलकल्पित कथाओं में आश्रित जन मानस जरा ध्यान देवे कि शास्त्र क्या कहता है। संत गरीबदास जी कृत एवं भक्त कबीर दास जी द्वारा ग्रन्थ रत्न सागर में गुरु गोरक्षनाथजी को भगवान आदिनाथ शिव शक्ति का ही अमर रूप होने का वर्णन किया है। जरा देखे-

दोहा - **गोरख उपजे ज्ञान से विभूति दीवी महादेव**

अर्थात् गोरक्षनाथ जी महाराज ज्ञान से उत्पन्न हुए है इसलिए वे स्वयं ज्ञान रूप है। क्योंकि शिव-पशुपति नाथ ने ही अपनी भभूति देकर दूसरा गोरक्षरूप धारण किया है। पृष्ठ नं. 67 पर

उदाहरण - दोहा नं. दूसरा जरा देखिए-

दोहा - **ॐ जाप जपत हंसा ज्ञान योग सत्गुरु कहे।**
गोरक्ष दत जुगाद के योगी नाम जलंधर अहे।।

ऐसा योग विशेष बता। ॐ शिव गोरक्ष कीन्हा।।
नाग फणी से काया पलटे सोंह सत्गुरु दीन्हा।।
वहाँ गोरखदत दिगंबर दुर्वासा परम प्रकाश भया उजियासा।
कहे कबीर मै तुमरा दासा।।
राम निरंजन आरती अवगत गति कुछ समझ न पड़े क्या पहुँचे मेरी गति।।

प्रमाण - पृष्ठ नं. - 137, 140, 143, 271, 271 पर देखे अंडर लाईन में उदाहरण 3 दोहा जरा देखिए-

दोहा 1. शिव द्वारे एक तपे निराला, पद गोरक्ष नाथ उचरीला।
2. जटा-जूट योगी जगत तन तापै, रहे भस्मी भूत।
कौन जाने शंभू लीला, स्वयं शिव गोरक्ष अवधूत।।

- प्रमाण देखे- गरीबदास जी कृत प्राचीन शिव की आरती में

3. गरीब गोरक्ष तो चिन्तामणि, शिव साक्षात् समर्थ।
ब्रह्मा विष्णु महेश की ओट कुशल अवलत।।7।।
4. गरीब शिव की सुरति विभूति से, गोरक्ष उपजे ज्ञान।।
राजा कोटी निनानवे, गोरक्ष पद परवान।।6।।
5. गरीब गोरख भली बिचारी रहणी करणी रंगसीर।
सिद्धो मे गोरक्ष बड़े, दत्त दिगम्बर धीर।। 1 व 8 में।।

प्रमाण -(अथ सरबंगी साक्षी का अंग। में देखे।)

6. तुही मेरे ब्रह्मा शेष महेषा।
तू ही मेरे विष्णु राम जय जय गोरक्ष आदेशा।।
तुही मेरे पिण्डा, तु ही मेरे श्वासा।
तेरा ही ध्यान राम धरे गरीब दासा।।

नोट :- उपयुक्त दोहे नं. 6 में ''आदेश'' शब्द का प्रयोग हुआ है। जो कि नाथ सम्प्रदाय में नमन (नमस्कार) का प्रतीक है।

(प्रमाण हेतु देखिए- आन्चार्य गरीबदास जी द्वारा रचित ''रत्नसागर''

ग्रन्थ के ''अथ राग घनासरी में'')

ये सभी प्रमाण पढ़कर साधारण मानव भी समझ सकता है कि वास्तव में शिव गोरक्ष ही कल्याणकारी अर्थात् मोक्षदायी है। एवं किसी भी दोहे की व्याख्या मेरे द्वारा (लेखक द्वारा) करना मैंने उचित नहीं समझा क्योंकि प्रत्येक दोहा खुद ही अर्थ पूर्ण व्याख्या सहित स्वयं बखुबी बखान कर रहा है। तथा ऐसा प्रतीत होता है कि मानो भक्त कबीर जी एवं आचार्य गरीब दास जी स्वयं ही शिव गोरक्ष स्तुति हमारे प्रत्यक्ष कर रहे हो।।

इतना ही नहीं यहाँ कुछ और भी भक्त कबीर एवं गरीब दास जी का रचित शास्त्र प्रमाण देखिए-

देखिए- रत्नसागर ग्रन्थ के ''कर्म डण्डमोक्ष पुराण में।'' पुरानी में पृष्ठ-136 पर तथा नई प्रकाशन के पृष्ठ - 131 पर) रत्नसागर ग्रन्थ कबीर एवं गरीबदास दोनों ही परम्पराओं में मान्य है-

(अ) **सत् सुकृत श्री सूरजबाला।**
जप तप सजंम के रखवाला।।
हाथ खड़ग गल पुष्प की माला।
कानों में कुण्डल रूप विशाला।
ऋद्धि सिद्धि दीजो कर प्रतिपाला।
मोक्षमुक्ति के तुमही दयाला।
हम पर सूरज कर कृपाला।
दास गरीब चितावन वाला।।

नोट :- इस उपरोक्त दोहावली के प्रमाण हेतु देखे- ग्रन्थ रत्नासागर के ''अथसूरज गायत्री'' में तथा

भावार्थ- समझिये-

आचार्य गरीबदास जी द्वारा नाथ जी को सूरज की उपमा दी गई है। तथा संजम का रखवाला बताकर नाथ जी की शस्त्र सहित, गले में फूलों की माला धारण किये रूप की महिमा गाई है तथा कानों में कुण्डल (नाथ

****

चिन्ह) धारण करने वाले बताकर उनके विशालकाय होने का भी जिक्र किया है।

(अब जरा सोचिए- कि कानों में कुण्डल कबीर जी एवं गरीबदास जी दोनों के ही नहीं थे सिर्फ कुण्डलधारी तो नाथ योगी ही होते है अर्थात् गरीब दास जी शिव गोरक्ष की महिमा बखान कर रहे है) रिद्धि सिद्धि मांग रहे है गरीबदास जी गोरक्ष को मोक्ष मुक्ति देने वाले तथा हम पर कृपा करने वाले तुम्ही हो जागृति देने वाले! इस प्रकार सूत्रालंकार सहित स्तुति कर रहे है। / न्यू प्रकाशन के पृष्ठ नं. - 128 पर

(ब) दूसरी और गरीबदास जी द्वारा - पृष्ठ नं. 128 -131 पर

।। अथ गीता गायत्री में एवं कर्मडंड मोक्ष पुराण में।।

हर हर हर हर उचार।
शिव योगी गति अपार ।।
महादेव कैलाश कुन्ज।।
सुर नर मुनि जन, सिर करे पुन्ज।।
दास गरीब धर शिव का ध्याना।
भक्ति मुक्ति जिन दीन्हीं दाना।।
कपीलं लक्ष्मण हनुमन्तं। अम्बरीष ध्रू प्रह्लाद।
बाल्मीकं बिलोकत।।25।।
गोरक्ष गोपीचन्द्र भृतहरि।
ध्रूव प्रह्लाद सतजुग आचार्य।
नामदेव कबीर कलिजुग आचार्य।।26।।

भावार्थ - आचार्य गरीबदास जी, हर हर हर हर उचारण करते हुए कहते है कि शिव योगियों की अपार गति (अभेद) है। महादेव कैलाश में विराजमान है तथा सुरनर मुनिजन का वर्णन करते हुए स्वयं भी शिव का ध्यान धरने की बात स्वीकार कर रहे है। अर्थात् शिव जी को भक्ति और मुक्ति दान में देने वाले देव बताकर महिमा मंडित कर रहे है और आगे

महापुरूषों का वर्णन करते हुए - 26 नं. दोहे में बताया है कि गोपीचन्द, भर्तृहरि, ध्रुव प्रह्लाद इत्यादि महाज्ञानी एवं तपस्वियों के सतयुगी आचार्य सद् गुरु गोरक्ष नाथ जी है तथा नामदेव व कबीर दास जी गरीबदास जी के अनुसार केवल कलयुगी आचार्य ही है।

(स) गरीब रतन अमोली फूल है, शिव साहिब के शिश।

इस उपरोक्त दोहे में गरीबदास जी आचार्य द्वारा भगवान शंकर को **शिव साहिब** कहकर पुकारा गया है। यानि शिव को साहिब (परमात्मा) बताया है।

पृष्ठ-25 पर दोहा नं.-49

तथा इस दोहे में भी देखे-

(2) **शिव साहिब के लिंग पर परि, गिरी गंगा आनी** पृष्ठ - 30 दोहा नं. 112 में

(3) **गरीब साहिब तेरी साहिबी कहां कहूँ करतार।।** वही - 23 के 19 में

(4) **गरीब साहिब मेरी विनती सुनो अरज अवाज।** वही-22 के 2 में व

देखिए पृष्ठ-22, दोहा-22

(5) "**अथ बिनती का अंग**" में शिव को गरीबदास जी द्वारा कण-कण में रमा रहने वाला बताया है एवं अलग-अलग प्रकार से महादेव गंगाधर भोले नाथ की महिमा बखान की है।

रत्नसागरे ग्रंथ में (गहरी नजर-)

धाम तलवंडी खुर्द लुधियाना से प्रकाशित ग्रन्थ के पृष्ठानुसार निम्नलिखित नाथ जी का पूजन एवं अहम स्थान रखने वाले दोहे - जरा देखिए

(1) **गरीब गोरखनाथ सुनाथ है, यंत्र-मंत्र जोग।**

- पृष्ठ नं.-50, दोहा नं.-14

(2) **नवनाथ और सिद्ध चौरासी, संगी उपजे थे दोय।**

-पृष्ठ 16, दोहा नं-70

(3) **गोपीचन्द भरथरी योगी निश्चय राज विराजी।**

-पृष्ठ-59, दोहा नं.-7

(4) **गोरख जनक विदेही** - पृष्ठ-61,

भगता परम स्नेही।। दोहा नं. -27

(5) **गरीब जहां साधुजन उतरे तहाँ भक्ति का भेव।**

गोरख उपजे ज्ञान से भभूति देई महादेव।।

-पृष्ठ-67, दोहा नं. 5 पर

(6) **गरीब द्वादश कोटी निनानवे, गोरख जनक बिदेह।**

यौ त्यारै यौ डोबिदे, यामै नहि संदेह।।

-पृष्ठ-82, दोहा नं. 13 में।

(7) **गरीब जहां ऋषि करी फिलाद। चक्र मोहि मारत आवै।**

मैं आया तुम स्याम। विशंभर नाथ छुटावे।।

-पृष्ठ-103, दोहा नं. -15

(8) गोरक्षनाथ जी का वर्णन देखिए संकेत में-

गरीब मस्तक चढ़ी भभूति, जमीन बिछी मृगछाला।

अगर नाद सुर पुरी, रहे बहुरंगी बाला।। पृष्ठ-105, दोहा-9

(सिद्धों व नाथ जी के लिए ही हमेशा अवधुत, योगी, योगेश्वर बहुरंगी वाला इत्यादि शब्द लगाये जाते है।)

(9) **गरीब, धरी बहुरंगी रूप, कहा से आये योगी।** पृष्ठ - 106, दोहा-13

(10) **गरीब कानों मुद्रा बिलोर, गले में डारे सैली।** वही दोहा नं. 14 में

पृष्ठ-106, दोहा नं. 14

-इन दोनों प्रयुक्त दोहों में नाथ जी का ही वर्णन है। जैसे, कहाँ से आये योगी तथा कानों में मुद्रा (कुण्डल व सैली) में नाथ जी के श्रृंगार का विवरण एवं योगी उनकी पहचान का संकेत चिन्ह है तथा आज भी नाथ पंथियों में यह योगी शब्द प्रयुक्त होता है।

(11) **गोरख दत जुगादि योगी नाम जलंधर लीजिए।**

भरथरी गोपीचन्द सीखें, ऐसी दीक्षा दीजिए।।

(भावार्थ - इस रत्न सागर ग्रन्थ के पृष्ठ नं. 140 के दोहा नं. 41 में)

अर्थात् – आचार्य गरीबदास जी जो कि बहुत बड़े विद्वानों एवं आचार्य की पदवी ग्रहण करने वाले तथा भक्त कबीर के प्रिय शिष्य है व इनके गुरु कबीर द्वारा ही प्रदतज्ञान का अनुसरण करने वाले महान संत है।।।

इस उपरोक्त दोहे में गरीब दास जी का कहना है कि हे, गोरक्ष नाथ जी आप और दतात्रेय जी युगों के आदि के योगी हो तथा ऐसे ही जलंधर नाथ जी हुए है मुझे आप ऐसी दीक्षा दो कि जैसी आप से राजा भर्तृहरी जी तथा राजा गोपी चन्द्र ने ग्रहण कर भर्तृहरी (सिद्ध विचारनाथ जी) तथा गोपीचन्द्र (सिद्ध श्रंगेरीपानाथ) बने।।

नोट :- दीक्षा = यह शब्द गुरु शिष्य के मध्यस्थ स्थापित बन्धन का नाम है अर्थात् गुरु द्वारा शिष्य को मन्त्र या कोई अन्य मार्ग से ज्ञान दिया जाना ही दीक्षा कहलाता है।

तथा देखिए पृष्ठ नं. 143 पर दोहा नं. 18 में तथा देखिए पृष्ठ नं. 183 पर दोहा नं. 72 में एवं पृष्ठ नं. 183 पर दोहा नं. 87 में।।

पृष्ठ नं. 184, दोहा नं. 101 में – **नाथ जी की महिमा।**

यहाँ विचार करें कि कबीर के सुशिष्य संत गरीब दास जी महाराज कबीर (अपने गुरु के अलावा) को छोड़कर गोरक्षनाथ जी से दीक्षा व शिक्षा क्यों मांग रहे हैं?

भक्त कबीर को आचार्य गरीबदास जी द्वारा परमात्मा नहीं बल्कि खवास (सेवक) बताने का प्रमाण- पवित्र-रत्न सागर में-

जरा देखिए निम्नलिखित दोहा-

साहिब तखत कबीर खवासा।।

पृष्ठ नं. 184, दोहा नं. 110

अर्थात् परमात्मा को साहिब की उपमा दी है तथा कहा है कि परमात्मा के तख्त का कबीर खवास यानि सेवक है।।

नोट :- ''खवास'' शब्द का अर्थ किसी भी हिन्दी शब्द कोश में आप देख सकते है। खवास यानि = सेवक

दूसरी और आचार्य गरीबदास जी ने वही पृष्ठ नं. 62 के दोहा नं. 40 में सन्त रैदास जी को कबीर का सेवक बताया है।

देखिए दोहा–

गरीब रैदास खवास कबीर का युगन युगन सतसंग।
मीरा का मुजरा हुआ, चढ़त नबेला रंग।।

तीसरा प्रमाण – देखिए जरा – वही पृष्ठ–नं. 168, दोहा नं. –50

अर्थात् – **अविगत महल अगाध है, जहाँ तख्त खवास कबीर।।**

(यहाँ भी कबीर जी अविगत अभेदा नाथ प्रभु के तख्त के सेवक प्रत्यक्ष हो चुके है।)

इस प्रकार उपरोक्त सभी प्रमाण स्वयं कबीर दास जी एवं उनके शिष्य गरीब दास जी कृत ग्रन्थों से ही लिये गये है तथा इनसे यह कटु सत्य सिद्ध हुआ है कि कबीर दास जी व उनके गुरु महाराज व सभी गुरु भाई और उनके सभी शिष्य सत्गुरु गोरक्षनाथ जी की आराधना तथा भक्ति करने वाले ही थे ! न कि परमात्मा।।

–✤–

मीराबाई व आचार्य गरीबदास जी की मूर्ति पूजा का शाश्वत सत्य

1. **मीराबाई**– सुप्रसिद्ध एवं लोक विख्यात मीराबाई का जीवन अति संघर्ष एवं कष्ट दुःखों से परिपूर्ण था–कितने ही दुःख दर्दों का सामना करने वाली मीराबाई का जन्म राजस्थान प्रान्त में हुआ तथा कृष्ण भगवान को ही उन्होंने प्रिय मानकर उम्रभर कृष्ण भक्ति की। **कृष्ण** भक्ति में विलीन मीरा ने तो विष (जहर) का प्याला भी कृष्ण जी में श्रद्धा रखकर विश्वासपूर्वक पी लिया था और मूर्तिपूजक मीरा का भगवान श्री कृष्ण द्वारा ही विष प्रभाव नहीं होने देना एक अहम प्रमाण है। दूसरी ओर मीराबाई की शादी हो रही थी उस समय मीरा ने कृष्ण

जी महाराज की मूर्ति को ही अपने पल्लू में बांधकर अग्नि देव की उपस्थिति में विवाह मण्डप में फेरे लिए और श्री कृष्ण जी की मूरत को ही समर्पण कर दिया।

(यह लम्बी चौड़ी इतिहास की गाथा है। इसे हम नहीं बल्कि प्रचीन इतिहास प्रमाणित करता है।)

(1) प्रमाण हेतु – देखे– राजस्थान के इतिहास के वे पेज जहां मीराबाई का जीवन वृतान्त लिखित है। इसे हर कोई जानता है।

(2) दूसरा प्रमाण – देखे रत्नसागर ग्रन्थ के पृष्ठ न.62 दोहा नं. 44 पर जहाँ आचार्य गरीबदास जी ने भी प्रमाणित किया है।

दोहा – **गरीब, मीरा हाथ सुतार था, पद गावे ल्यौ लाय।**

पत्थर की थी प्रतिमा, जामै गई समाय।।

इस दोहे से प्रमाणित हो चुका है। कि मीराबाई ने मूर्ति (पाषाण) की पूजा कर परम धाम को प्राप्त किया और इस तथ्य से आचार्य गरीबदास जी स्वयं भी सहमत है।

कि मीराबाई पत्थर में अन्तर्ध्यान हुई।। एवं गरीबदासी ग्रंथ रत्न सागर के पृष्ठ नं. 62 तथा दोहा नं. 44 में यह लिखित प्रमाण है।

आइये विचार करे – भक्त कबीर दास जी महाराज ने कोई भी पंथ या सम्प्रदाय नहीं चलाया था क्योंकि वे जानते थे कि वे स्वयं पंथ या सम्प्रदाय चलाने में पूर्ण समर्थ नहीं है और सिर्फ एक सेवक ही है ना कि परमात्मा! इसलिए उन्होंने अपना कोई पंथ नहीं चलाया और आज कुछ लोग समाज में भक्त कबीर जी को बदनाम कर रहे हैं क्योंकि अपने आप को कबीर पंथी लिखते हैं और अलग से नकली सम्प्रदाय चला रहे है तथा आचार्य गरीबदास जी एवं भक्त कबीर दासजी महाराज की बड़े-बड़े धाम एवं मंदिरों की स्थापना कर उनकी मूर्ति पूजा भी करते है। अतः इस तथ्य से जरा विचार कीजिए कि क्या ये मूर्ति-पूजा नहीं है?

हमारे सनातन धर्म का खण्डन करने के लिए कोई भी अन्य धर्मी बिल्कुल भी हिच किचाहट नहीं करते और मूर्ति पूजा को मूर्खों की संज्ञा देने के साथ-साथ बड़ी-बड़ी बहस भी कर लेते है। इस तथ्य से हम (सम्पूर्ण नाथ मतावलम्बी) मूर्ति पूजा की खिलाफत करने वालों से पूछना चाहते है कि आप स्वयं की और क्यों नहीं देखते हो और आपको हमारा सनातन धर्म ही बार-बार खण्डन का हेतु क्यों मिलता है?

जबकि - गरीबदास जी महाराज की हरियाणा प्रान्त के अन्तर्गत गाँव - छुड़ानी में सुबह-शाम बड़ी-धूम धड़ाके से बाबा श्री श्रद्धेय गरीबदास जी महाराज की मन्दिर में स्थापित मूर्ति की पूजा आरती नियमित होती है और सभी मत पंथी अपने-अपने आचार्यों की इसी प्रकार पूजा अर्चना करते है। यह प्रमाण स्वयं छुड़ानी धाम बयां करता है। क्या यह पाषाण पूजा नहीं है? शेष पृष्ठ 88 से 99 तक अवश्य पढ़ें।

-❖-

सन्त नानकदास जी द्वारा गोरक्ष गुणगान (गहरी नजर गुरु ग्रंथ साहब में)

आज हमारे समाज में नाथ सम्प्रदाय को लुप्त करने के लिए कुछ तथाकथित धर्मगुरुओं एवं लेखकों द्वारा बड़ा भारी मात्रा में मूल शब्दार्थ का अनर्थ किया जा रहा है। क्योंकि नाथ सम्प्रदाय आदि-अनादि है और इस पंथ में कोई किसी भी प्रकार का पाखंड-झूठा शृंगार व किसी भी प्रकार का ढोंग नहीं है। अत: इसलिए इन तथाकथित धर्मगुरुओं की इस पंथ में दाल नहीं गलती और आज सिर्फ ज्यादातर पाखंड की ही पूछ हो रही है। इसलिए उन तथाकथितों को नाथ सम्प्रदाय से डर लगा रहता है कि कहीं तुम्हारी पोल पट्टी सामने ना आ जाये। इस हेतु से नाथ सम्प्रदाय का विरोध तथा शास्त्रों का कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा गला घोटा जा रहा है कही कोई कह रहा है कि कबीर जी ने गोरक्षनाथ जी को शास्त्रार्थ में हराया तथा कही

कोई संत श्री नानक दास जी के लिए कह रहा है कि उन्होंने गोरक्षनाथ जी को हराया था। इस प्रकार की अफवाह फैला कर ये लोग सिर्फ अपना उल्लू सीधा करने का षड़यंत्र रच रहे है और अपनी धर्म की आड़ में दुकानदारी चला रहे है तथा अपनी सुरक्षा तथा बचाव में नाथ पंथ से जनता के मन में जहर भरने का काम किया जा रहा है। ताकि जनता नाथ सम्प्रदाय के योगियों के सद्ज्ञान से वंचित रहे और उन धर्मद्रोही धर्मगुरुओं का बचाव होता रहे।। लेकिन हर चीज की हद होती है चाहे वह प्यार हो या बैर भरी कूट-नीति! इसलिए आईये अब हम चलते है गुरु ग्रन्थ साहब में लिखित एवं प्रमाणित उन पृष्ठों पर जोकि मानवता के मार्गदर्शक, समाज सुधारक एवं अच्छे शुभचिंतक और सिख धर्म के प्रथम प्रवर्तक श्री नानक देव जी के वचन एवं वाणी पर आधारभूत है और यह गुरु ग्रन्थ साहिब नानक दास जी का (सिक्खों का) मुख्य ग्रन्थ है। देखिए इस ग्रन्थ में सत्गुरु पूर्ण परमात्मा परमेश्वर योगाचार्य भगवान श्री गोरक्षनाथ जी की किस प्रकार संतों द्वारा महिमा का बखान किया गया है।

1. प्रत्येक गुरुद्वारा हर नित्य दिन-दिन गोरक्ष गुणज्ञान करते करते थकता ही नहीं क्योंकि नित्यप्रति गुरुद्वारों में गुरुग्रंथ साहिब का पवित्र पाठ होता है और जहां से पाठी इस ग्रंथ को आरम्भ करता है। वही से ही नाथों का गुणगान आरम्भ हो जाता है। जरा देखिए - दोहा-

गुरु ईश्वर गुरु गोरक्ष ब्रह्म गुरु पार्वती माई

इस उपरोक्त कथन में नानक जी द्वारा सत्गुरु गोरखनाथ जी को गुरु का दर्जा स्वयं दिया गया है।

प्रमाण हेतु देखे गुरु ग्रन्थ साहिब

जोकि "भाई जवाहर सिंह कृपाल सिंह ऐन्ड को." पुस्तक वाले बाजार माई सेवा, अमृतसर से प्रकाशित हुआ है।

पृष्ठ नं. 2 पर, ऊपर से 12वीं लाईन में

दूसरा प्रमाण इसी ग्रन्थ से

सुनियै सिद्ध पीर सुरीनाथ।।

नीचे कह रहे है।–

नानक भगता सदा विगासु।।

इस कथन में नानक जी नाथ सम्प्रदाय के सिद्ध योगी श्री सुरीनाथ जी से कह रहे है कि मेरी अरज सुणिये नाथ जी ये नानक भगत सदा आपकी आस का प्यासा है। पृष्ठ – 2 पर, नीचे से छटी लाईन में

आईपंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु। आदेश तिसे आदेश।।

नोट :– नाथ पंथ की यह सम्प्रदाय 12 पंथों की सम्प्रदाय है। अतः उपरोक्त कथन में प्रयोग "आईपंथी" शब्द नाथ सम्प्रदाय के एक पंथ का नाम है। तथा "जमाती" शब्द नाथ सम्प्रदाय में आदि काल से प्रयोग में लिया जाने वाला शब्द है जो कि सम्प्रदाय के द्वारा चुनित 12 पंथों के कुछ–कुछ मात्रा में कुछ साधुओं की टोली निर्धारित होती है तथा वे साधु पूरे भारत वर्ष में धर्म प्रचार करते हुए भ्रमण करते रहते है। उस टोली का नाम "जमात" है।

अतः इस प्रयुक्त कथन में नानक दास जी कहते है कि– जो नाथ सम्प्रदाय के आई पंथ तक के सभी योगेश्वर अपने मन को जीत कर अर्थात मन पर विजय पाकर सम्पूर्ण संसार को जीतने वाले है। उन जमाती नाथों को में आदेश करता हूँ। प्रणाम करता हूँ। (नमन करता हूँ)

"आदेश" शब्द ही नाथ सम्प्रदाय में नमस्कार वाचक शब्द की संज्ञा में प्रयुक्त होता है।

प्रमाण – पृष्ठ नं.6 के नीचे से पाँचवी लाईन से पृष्ठ 7 के ऊपर से नौवी लाईन तक नाथों की महिमा का गुणगान करते हुए बार–बार नाथ जी महाराज की संस्कृति को आदेश तिसै आदेश से अलंकृत किया है। नाथों को नानक दास जी ने वंदन किया है। पूजनीय माना है।।

केते सिद्ध बुद्धनाथ केते केते देवीवास।।

प्रमाण–पृष्ठ –7 पर

ऊपर से नवमी तथा नीचे से चौथी लाईन में नानकदास जी नाथ परमात्मा का बखान कर रहे है। कि वे ही हर युग में स्थाई वास करते है। कभी सिद्ध व बुद्ध तथा कभी-कभी देवी बनकर वास करने वाले है।

नानक प्रभु सरणागति सरब घटा के नाथ।।

यहाँ नानक दास जी कहते है कि मैं उस प्रभू की सरणागति (अनुसंधान, सानिध्य) में हूँ कि जो सम्पूर्ण घटा के नाथ है। स्वामी है।

विचार करे - यहाँ नाथ कौन है?

यहाँ नाथ से गुरु गोरक्ष की ओर ही इशारा है। क्योंकि अगली लाईन में कह रहे है कि ''गुरु होया किरपाला'' किरपाला शब्द आगे इसी गुरु ग्रन्थ साहिब में गुरु गोरक्षनाथ जी के लिए प्रयोग किया है। जो कि सुखमनी में है।

प्रमाण-पृष्ठ नं. -48 पर

ऊपर से दूसरी एवं तीसरी लाईन में! अत: सिद्ध है कि गोरक्ष ही सम्पूर्ण घटा के मालिक है।।

दीनानाथ सरब सुखदाता।

अर्थात् हम दुखियों को सम्पूर्ण सुख की अनुभूति देने वाला एक वही नाथ है (गुरु गोरक्ष नाथ ही दु:खियों को सुख प्रदान करते है)

प्रमाण- वही पृष्ठ नं. 154

नीचे से छठी लाईन म

-❖-

सुखमनी में नाथ जी महाराज की महिमा

गुरु ग्रंथ साहिब में पृष्ठ नं. 262 से 296 तक सुखमनी व्याप्त है। वही गहरी नजर............

सरब निधान प्रभु तेरी माया।।

जितु जितु लावहु तितु लगहि हरि नाथ

पृष्ठ संख्या - 271, ऊपर से 2, 3, 4 लाईन में

ब्रह्म ज्ञानी को करू सदा आदैसु।।

नानक जी ने इस कथन में गुरु गोरक्ष नाथ जी महाराज को ब्रह्मज्ञानी की उपमा दी है। क्योंकि "करू सदा आदैसु" पंक्ति से साफ साबित होता है। क्योंकि **आदेश** सिर्फ नाथ योगियों को ही किया जाता है।

प्रमाण-पृष्ठ सं. - 273

नीचे से नवमी लाईन में

अब देखिए - कुछ और शाश्वत संकेत से........... श्री गुरु गोरक्ष नाथ जी में नानक जी की स्पष्ट श्रद्धा

1. **नानक ब्रह्मज्ञानी आप ही परमेश्वर।।**
2. **ब्रह्मज्ञानी की कीमत नाहीं।।**
3. **ब्रह्मज्ञानी का कौन जाने भेद।।**
4. **नानक ब्रह्मज्ञानी को सदा नमस्कारू।।**
5. **ब्रह्मज्ञानी अनाथ का नाथ।।**
6. **ब्रह्मज्ञानी सदा निरदोष।।**
7. **ब्रह्मज्ञानी निरमल तै निरमला।।**
8. **ब्रह्मज्ञानी उच्च तै उच्चा।।**
9. **ब्रह्म ज्ञानी का नहि विनास।।**
10. **नानक उस पण्डित कू सदा आदेसु।।**
11. **आपै करन करावन जोगु।।**
12. **कई कोटी सिद्ध जति जोगी।।**
13. **करन कारन प्रभु ऐकु है।।**
14. **इस का बल नाही इसु हाथ।।**
    करण करावण सरब को नाथ।।
15. **कबहु सिद्ध साधिक मुखी ज्ञान।।**

अर्थात् - मैंने (लेखक-योगी शुक्राईनाथ ने) यहाँ नानक दास जी की "**सुखमनी**" के 15 कथन जारी किये है जरा इन्हें गुरु ग्रंथ साहिब के पृष्ठ नं.-272 तथा 273 एवं 274- 75, 76, 77 पर देखे।

आईये विचार करे-यदि नानक दास जी महाराज ब्रह्मज्ञानी को आदेश कर रहे है। तो इस तथ्य से साफ प्रमाणित होता है कि ब्रह्मज्ञानी की संज्ञा गुरु गोरक्षनाथ को ही समर्पित है तथा फिर नाथजी की महिमा में आगे कह रहे है कि आप ही परमेश्वर है, आपकी कोई कीमत नहीं हो सकती। हे ब्रह्मज्ञानी (गोरक्षनाथजी) आप का भेद कौन जान सकता है, आपको सादर नमस्कार (आदेस) है, आप अनाथों (असहायों) के नाथ है, आप सदा (हर स्थिति में) निर्दोष हो आप हमेशा निर्मल (शुद्ध) से भी शुद्ध हो, आप उच्च से भी उच्चे हो, आप का कोई विनाश नहीं अर्थात् आप अविनासी हो, आप सम्पूर्ण कर्ता-धर्ता हो, आप अनन्त कोटी सिद्ध जति योगी बनकर रहते हो सब कुछ करने वाले आप ही एक प्रभु हो, आपका बल-क्षेम किसी के भी हाथ नहीं है आप सभी के नाथ हो, आप कभी-कभी सिद्ध (नाथ योगाचार्य) बनकर मुख से शुद्ध ज्ञान का उपदेश देने वाले हो- इस प्रकार आप अपार महिमा मय पण्डित हो-आपको नानक सदा नमस्कार (आदेश) करता है।

इस प्रकार नानक साहब द्वारा नाथों की महिमा का बखान बड़े ही सुंदर ढंग से हुआ है।

यहाँ ओर देखिए- पृष्ठ - 290 व 291 पर-

(1) **अनाथ नाथ गोविदं गौपाल।।**

अर्थात्- हे नाथ आप असहायों के, अनाथों के प्रभु है। नाथ है। (स्वामी, रक्षक है।)

पृष्ठ - 291 से (2) **अबिनासी सुख आपन आसन**

अर्थात् - नानकदास जी कहते है कि हे नाथ जी आपके आसन में अविनासी का सुख है। अर्थात् आप अविनाशी हो (आप का जन्म-मरण नहीं) अर्थात आप चीर स्थाई हो।

(3) **जब अविगत अगोचर प्रभु ऐका।।**

तब चित्रगुप्त किसु पुछत लेखा।।

जब नाथ निरंजन अगोचर अगाधे।।
तब कौन छूटे कौन बंधन बांधे।।
जहं निरंजन निरंकार निरबान।।
तह कौन को मान कौन को अभिमान।।
जह स्वरूप केवल जगदीश।।

अर्थात् - नानक दास जी कहते है कि जब वह जिसकी कोई गति नहीं है जो अव्यक्त है, जिसको समझा ही ना जा सकता हो, जो इन्द्रियों से परे हो (अगोचर) वह एक नाथ प्रभु हो-तो लेखा-जोखा लिखने वाला चित्रगुप्त किससे लेखा पूछेगा।

जब वह गुरु गोरक्ष नाथ निर्लेप और अथाह है जब उन्हें कौन बंधन में बांधे और कौन बन्धन मुक्त कर सकता है। वे परमेश्वर साक्षात् पूर्ण महासमर्थ एवं निराकार ईश्वर है तो उन्हें क्या मान और क्या अभिमान हो सकता है। ये स्वरूप केवल जगदीश (परमात्मा, कर्ता-धर्ता, जगनाथ का है।)

प्रमाण- वही पृष्ठ नं. 291 पर, ऊपर से लाईन नं. - 9, 10,11,13,14 में

(4) **जहाँ अछल अच्छेद अभेद समाईयाँ।।**
ऊहा किसहि बिआपत माइआ।।
आपस कउ आपहि आदेसु।।
तिहु गुण का नाही परवेसु।।

जरा ध्यान देवे- इस कथन में तो नानक साहेब ने सभी अपभ्रंश वादियों की शंका का बड़े ही अनूठे अंदाज में समाधान कर दिया- अर्थात् नानक साहब फरमा रहे है कि जो निश्छल है, अविभाज्य (अविनासी) है और जो बिना भेद (जानकारी) के सम्पूर्णतया समाया हुआ है। सर्वव्यापक है, उसमें किसकी माया व्याप्त हो सकती है। इस प्रकार के अवर्णनीय नाथ जी को में आप ही आदेश करता हूँ। नमन करता हूँ (प्रणाम करता हूँ) और उसमें तीनों शक्तियों (रजोगुण-ब्रह्मा, सतोगुण-विष्णु, तमोगुण-शिव) का

भी प्रवेश नहीं है अर्थात् वे नाथ प्रभु इन तीनों गुणों से भी परे हैं।

अर्थात् संकेत में ही बताया है कि गोरक्ष परमात्मा सर्वअंतर्यामी है तथा वे ही घट-घट में रमण करते है। वे होते हुए भी नहीं है तथा नहीं होते हुए भी उपस्थित है। इस प्रकार की आभा वाले विशाल सामर्थ्यवान गोरक्षनाथ जी को मैं नानक आदेश (प्रणाम) करता हूँ।

देखिए- पृष्ठ नं. 291 पर

नीचे से लाईन नं. 5, 6, 7 में गुरु ग्रन्थ साहिब में

(5) जीव जंत सब ता कै हाथ।।
दीन दयाल अनाथ का नाथ।।
जिसू राखै तिसू कोई ना मारै
जिसू तजि और कहा को जाई।।
सब सिरी एक निरंजन राई।।
जीव की जुगति सब जा के हाथ।।
अन्तरी बाहरी सब जानहू साथ।।
गुण निधान-बेअंत अपार।
नानक दास सदा बलिहार।।
पूरन पूरी रहे दइयाल।
सब ऊपर होवे किरपाल।।

अर्थात् प्रस्तुत कथन से नानक दास जी महाराज कह रहे है कि हे प्रभु, हेनाथ.....

जीव जंतु (कण-कण) सब आपके हाथ है। अर्थात् सबके आप ही स्वामी हो।

आप दुखियों पर दया करने वाले और अनाथों के नाथ हो-
जिसको आप रखना चाहो, बचाना चाहो उसे कोई नहीं मार सकता। इस प्रकार की छवि वाले आप प्रभु को तजकर (छोड़कर) हम और कहाँ जाऐ। सब के सिरी (साथी) आप एक ही प्रभु हो, हर जीव की जुगति-मुक्ति

सब आप प्रभु के हाथ है। आप अन्दर बाहर की सब जानने वाले हो, आपके गुणों की बड़ाई अनन्त है, बेअंत है। आप पूर्ण से भी पूर्ण दयालु हो।। सभी के ऊपर आपकी कृपा होती है। हे प्रभु (गुरु गोरक्ष) ये नानक दास सदा-सदा आपको समर्पित है।

देखिए-पृष्ठ -292 पर

पढ़िये पृष्ठ के ऊपर से लाईन 16, 17, 18, 19, 20, 21 में

-सुखमनी ग्रन्थ प्रमाण सम्पूर्णम् इति

पवित्र आत्मा नानक दास जी के "राग आसा महला" में गोरक्ष प्रतीक

1. **तूं आपै दाता आपे भुगता जी हऊ तुधु बिनु और न जाणा।।**
तू पारब्रम्हु बेअंतु बेअंतु जी तेरे किआ गुण आखि बखाणा।।

उसी ग्रंथ में प्रमाण - पृष्ठ नं. - 348 पर,

देखिए ऊपर से लाईन नं. 9 व 10 में

आईये इस विषय पर चिन्तन करे-

इसी गुरु ग्रन्थ साहिब के पृष्ठ नं. 2 पर पीछे प्रमाणानुसार देखे। कि गोरखनाथ जी को नानकदास जी द्वारा "गुरु" शब्द की उपमा से अलंकृत किया गया है। वही दूसरी और पृष्ठ नं. 193 पर नीचे से दूसरी एवं चौथी-पांचवी लाईन में गुरु शब्द को पारब्रह्म के साथ जोड़ कर एकीकरण किया है। अत: इस तथ्य से सिद्ध हो चुका है कि जहाँ गुरु पारब्रह्म की चर्चा है वहाँ गुरु गोरक्षनाथ जी को ही अलंकृत किया गया है। अत: उपरोक्त कथन में नानकदास जी महाराज नाथजी से कह रहे है कि आप स्वयं ही दाता हो (दान करने वाले हो) और आप स्वयं ही उस दान का भुकतान करने वाले हो, हम आपके बिना और किसी को भी नहीं जानते। आप ही पूर्ण परमात्मा हो, अपरम्पार हो, हम आपके गुणों को क्या बखान

कर सकते है।

2. तू जुगु जुगु ऐको सदा सदा तू ऐको जी
तू निहचलु करता सोई।।

देखिए प्रमाण - पृष्ठ नं. 348 पर, नीचे से पांचवी और चौथी लाईन में तथा पुन: विचार करें।

प्रस्तुत पंक्ति में चर्चा है कि- जुगु-जुगु सदा सदा तू ऐको जी.............. इस पंक्ति के मिलान हेतु चलिए इसी ग्रन्थ साहिब के पृष्ठ नं. 7 पर जहां नाथ जी महाराज को पूजनीय नानकदास जी महाराज बार-बार वंदन करते हुए अर्थात् आदेश करते हुए लिखते है कि "**आदि अनिल अनादि अनाहति जुगु-जुगु ऐको वेसु।।" आदैश तिसे आदैश**

इस उपरोक्त पंक्ति से साफ साबित हो चुका है कि पूज्य नानक दास जी महाराज हर युग में एक नाथ जी महाराज के ही अनादि होने तथा रहने (वेसू) का जिक्र कर रहे है।

और इसलिए नाथ जी के संकेत से कह रहे है कि "आदेश तिसै आदेश।।"

यानि-प्रणाम आपको प्रणाम।।

नमस्कार आपको नमस्कार।।

अत: इसलिए यहां दो नम्बर बिन्दु में प्रयुक्त शब्द भी नाथ जी को हर युग में एक ही भेष में प्रमाणित करते है और नाथ जी को स्वयं निश्चय करने वाले कहा है।

(3) अति विशेष - नानक दास जी का आसा महला

- तिसु रूप न रेख अनाहदु वाजै सबदु निरंजनी कीआ।। करे वेखिआणु जाणै जे कोई।। अमृत पिवै सोई।।

सरब ज्योति रूपू तेरा देखिआ
सकल भवन तेरी माईया।।
बीणा सबदु बजावै, जोगी दरसनि रूप अपारा
अनाहति सो सहु राता नानक कहै विचारा।।

देखिए वही पृष्ठ नं. 351

लाईन पृष्ठ के ऊपर से 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10 में

अर्थात् -

नानकदास जी महाराज प्रस्तुत पंक्तियों में सोच विचार कर रहे है। कि जो "शब्द" परमात्मा से प्रकट है। उसका कोई रूप नहीं है नाही कोई रेखा, वह अनहद (निरन्तर) बजता है। जो कोई उसे देखकर जानता है वही मानो अमृत पान करता है। आगे कहते है। सब कुछ तेरे अन्दर है और तेरा रूप ज्योति स्वरूप हैं अर्थात् ज्योति स्वरूप में तूझे देखा जाता है। सम्पूर्णतया सब कुछ तेरे अन्दर समाहित है। मानो तू वीणा की धुन (शब्द) बजाने वाला योगी है। जिसका दरसनि रूप (कानों में कुण्डलधारी रुप-नाथ रुप) अपार है। यही नानक का विचार है।

नोट :- यहाँ "दरसनी रूप" से अभिप्रायः क्या है? यहां "दरसनी रूप" का संकेत नाथ सम्प्रदाय में कनफटे नाथ योगी की ओर इशारा है। संकेत है।

गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज की अलबेली सम्प्रदाय में जिन संतों के कानों में कुण्डल होते है। उन्हें दर्शनी योगी कहा जाता है और कुण्डलों को दर्शन कहां जाता है। नाथ पंथ के अलावा किसी भी अन्य पंथ के योगी को दर्शनी योगी नहीं कहा जाता है। यह सिर्फ नाथ जी महाराज की ही प्राचीन नाथ परम्परा का अखण्ड प्रतीक है।

(4) जोगी हरि देहु मती उपदेसु।।
जुगु जुगु हरि हरि एको बरतै तिसु आगै हम आदैसु।।

देखिए प्रमाण - पृष्ठ नं.-368 पर
ऊपर से तीसरी एवं चौथी लाईन में

अर्थात् - नानक साहब प्रस्तुत उपरोक्त कथन में योगियों को हरि का उपदेश देने वाले बताकर महिमा का मंडन कर रहे है कि हर युग-युग में रहते है योगी और एक परमात्मा (गोरक्ष की ओर संकेत) का ही उपदेश देते है। उनके आगे हम (नानक दास जी का "हम" शब्द सूचक है) आदेश करते है। अर्थात् उन योगियों को नानकदास जी महाराज नमन करते है। प्रणाम करते है।।

नोट :- यह उपरोक्त नानक दास जी का महला भी गुरु ग्रन्थ साहिब के पृष्ठ नं. 348 एवं पृष्ठ नं. 7 पर अंकित कथनों से साक्षात् मेल खाता है। तथा शास्त्र साफ-साफ नाथ योगियों का हर युग में होने का प्रमाण बयां कर रहा है।।

क्योंकि कबीर जी और नानक साहब जी का लघु प्रमाण वर्तमान से लगभग भूतकाल के 550 से 600 वर्ष का ही मिलता है।

(5) नाथ नरहरि दीनबधंव पतितपावन देव।
भय त्रास नास गुणनिधी सफल स्वामी सेव।।

देखिए गुरु ग्रन्थ साहिब के पृष्ठ नं. 508 पर
गुजरी महला में ऊपर से प्रथम एवं दूसरी लाईन में।।

अर्थात् - प्रस्तुत गुजरी महला के कथन से संत श्री नानक दास जी फरमाते है कि जो नाथ दीन दुखियों के लिए नरसिंह बनकर महापापियों को, आचारच्युत एवं धर्मद्रोहियों को पवित्र करने वाला देव है। वही भय त्रासदी मिटाने वाला सर्वश्रेष्ठ सम्पूर्ण गुणवान और सफल स्वामित्व एवं कृपा रखने वाला है हमें उसी नाथ (स्वामी) की सेवा करनी चाहिए।। वही गुरु स्वरूप में गोविन्द गोपाल (ईश्वर, परमात्मा है।।) वह ही हरि है।। पूर्ण समर्थ हैं।

(6) सून्य मण्डल इक योगी बसे।।
नारी ना पुरूष कहू कोऊ कैसे।।
तृभवन ज्योति रहे लिव लाई।।
सुर नर नाथ सच्चे सरणाई।।

देखिए प्रमाण-वही ग्रन्थ पृष्ठ नं. 685
घनासरी- नीचे से - 2, 3, 4 लाईनों में

अर्थात् - संत शिरोमणि आदरणीय नानक दास जी इस उपरोक्त कथन से ''घनासरी महला'' में पूर्णतया स्पष्ट कर रहे है कि महाशून्य से ही समस्त चराचर की उत्पत्ति करने वाला एक योगी वहां (शून्य मण्डल में) विराजमान है और कह रहे है कि वह योगी ना ही नारी है तथा ना ही पुरूष है कोई

कैसे कह सकता है कि वे नर है या नारी।। वह योगी (गोरक्षनाथ जी की ओर संकेत) अपनी सम्पूर्ण कृति में ध्यानस्त (लौ लगाए) है। समस्त देवगण (सुरनर) उन्हीं सच्चे सच्चिदानन्द (गोरक्ष) की ही शरण में विराजमान है।।

(7) ''गुरु ग्रंथ साहिब'' इस पवित्र ग्रन्थ के पृष्ठ नं. 760 पर - राग सूही महला-5 घरू 3 में देखिए-

लिखा है- ''**चरण कमल सरणाई नारायण।।**

दीनानाथ भगत परायण।।''

अनाथा नाथ भगत भैय मेटन।।

व्याख्या - उपरोक्त प्रस्तुत ''महला'' के चरण में संत नानक दास जी महाराज कह रहे है कि हे प्रभु हम आपके चरण कमलों की ही शरण में है हे दीनानाथ (गोरक्ष) भगतों को आप पार लगाने वाले हो आप असहाय एवं दुखियों के और भक्तों के भय का नाश करने वाले नाथ हो अर्थात् आप दु:ख-दरिद्र को मेटने वाले नाथ (प्रभु) हो।।

(8) सिख ग्रंथ ''गुरु ग्रंथ साहिब'' के पृष्ठ नं - 886-87 व 889 पर एक टक-टकी-

विशेष - यहां इस प्रस्तुत पृष्ठ पर महाराज सन्त नानक दास जी उस समय का गुणगान कर रहे है जिस समय सत्गुरु देव शम्भुजति योगाचार्य गुरु गोरक्षनाथजी महाराज भ्रमण करते हुए, सुन्दर छवि के साथ नानक साहब से भेंट करते है तथा संत नानक जी पूज्य नाथ जी महाराज को अपने महल (कुटियाँ, निवास स्थान) में बुलाते है। अत: उस दौरान
नानकदास जी लिखते है-

(अ) **जोगीआ मतवारो रे।**

(ब) **गहरी भभूति लाई बैठा ताड़ी।**
मती तेरी मुंद्रा धारी।।

(स) **गुरु गोरख की तै बुझ न पाई।**
फीरी-फीरी जोगी आवै जाई।।

जिसनो होआ नाथ कृपाला।
रहरासि हमारी गुरु गोपाला।।

(द) इउ जपिआ नाथु दिनु रैनाई।
हुणि पाइआ गुरु गौसाई।।
करण-करावण सोई।
आन न दिसै कोई ।।

(य) गुरु किरपा तै निचु निवाजिआ।
खोलि किवारा महलि बुलाइयाँ।।

(र) काज हमारे पूरे सत्गुरु।
बाजै अनहद तूरै सत्गुरु।

(ल) गुरु परब्रह्म एक ही जानै।
जो जो कीनो हम तिस के दास।।
भु मेरे का सगल निवास।।

(8) आपै आपी सरब प्रतिपाल।।

(9) भ्रम भय मोह ना माया जाल।
सुन्य समाधि प्रभु किरपाल।
ताका अंत ना पारावारू।
आपै गुपतु आपै पासारू।
जाके अंतरी हरि हरि सुआदु।।
कहनु ना जाई नानक बिसमासु।
भेंटत संगी पार ब्रम्हु चिति आईया।
संगति करत संतोषु मनि पाइयाँ।
संतह चरण माथा मेरो पउत।
अनेक बार संतह डंडोत।
मन संतन के बलिहारी।
जाकी गही सुख पाईयाँ राखे किरपाधारी।।

संत चरण धोई-धोई पीवा।
संत दरसु पेखी-पेखी जीवा-
संत की मेरे मन को आस।
संत हमारी निर्मल रास।।
संत हमारा राखिआ पड़दा।
संत प्रसादी मोही कबहू न कड़दा।
संत संगु दीआ किरपाल।
संत सहाई भयै दईयाल।

पृष्ठ नं. - 886 पर रामकली महला - 5 घरू 2 से पृष्ठ 887-88-89 से लगातार पृष्ठ संख्या - 900 तक के पृष्ठों में श्री गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज का ही पूर्ण विवरण संत नानक दास जी कृत ठोक-ठोक कर भरा हुआ प्रमाणित है।।

अर्थात् - उपर्युक्त लिखित संत नानक दास जी की सदुखड़ी में नाथ जी गुरु जी (श्री गुरु गोरक्षनाथजी) की बड़ाई करते हुए लिखा है कि "हे योगी तुम्हारा कोई भेद नहीं है। आप सुंदर मती वाले हो, आप का ही नाम हमें दिन रात जपना है। आपने आभूषण की जगह पर गहरी भभूति को ही शरीर में धारण किया हुआ है।" अर्थात् आपका दिव्य आभूषण भभूत ही बनी हुई है। आपकी छवि कानों में मुंद्रा (कुण्डल) सहित शोभायमान है। हे सत्‌गुरु गोरक्षनाथ जी आपकी तो समझ (जानकारी) किसी ने भी नहीं पाई।। आप जैसे योगी रमते हुए (भ्रमण करते हुए) आ ही जाते है, नाथ आप जिस पर कृपालु हो जाते हो वहाँ आपका आवागमन हो ही जाता है। इस प्रकार योगाचार्य गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज की बड़ाईयाँ करते हुये, नानक जी आगे लिखते है कि "हे नाथ ना मेरे पास खिंथा है ना ही बिछाने के लिए बिस्तर है।" हम तो यू ही स्थिर हो नाथ जी का जाप दिनरात करते है। इसलिए हमने (हुण) आपको गुरु गौसाई पाया है। क्योंकि आप

ही करने कराने (सर्वज्ञ) वाले हो आपके बिना हमें ओर कोई नहीं दिखाई देता है। गुरु की कृपा से नीच भी सद्गति को प्राप्त हो जाते है इसलिए हमने महल के किवाड़ (दरवाजा) खोलकर आप को बुलाया है। अब आप मुझे (नानकदास जी को) आपकी (गुरु गोरक्ष जी और संकेत से) सेवा में सेवक बनाईये (लाईयो) और मुझे अमृत्व का नाम दान दीजिए।

''सगली चिंता आपी निवारी'' तिसु गुर को हम सदा बलिहारी।।

अर्थात् अमृत्व के नाम से मेरी सारी शोक-चिंताओं का आप ही निवारण हो जायेगा और ऐसे कृपालु गुरु देव (गोरक्ष) को हम (नानक) सदा (हर दम) पूर्ण समर्पित (बलिहारी) है।

इस प्रकार से अन्यत्र भी संत नानक दास जी ने स्वयं के ग्रंथ ''गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु गोरक्षनाथ जी की महिमा बखुबी बखान की है।'' जोकि आप प्रमाणानुसार - पृष्ठ संख्या दी हुई में पढ़ सकते है। मैंने पृष्ठा अभाव में कलम को सीमितता में ही रखा है।- लेखक

(9) (देखिए पृष्ठ संख्या- 927 पर, उपर से तीसरी लाईन गुरु ग्रन्थ साहिब में)

लिखा है- **धर्म अर्थ और काम मोक्ष, मुक्ति पदार्थ नाथ।**
सकल मनोरथ पूरिआ नानक लिखिआ माथ।।

अर्थात् - इस दोहे में नानक दास जी महाराज कहना चाहते है कि सम्पूर्ण सृष्टि में धर्म-अर्थ-काम और मोक्ष इन चारो पुरूषार्थों के साथ सभी मनोरथपूर्ण करने वाला भक्ति दाता सिर्फ एक नाथ योगी ही है। मुक्ति पदार्थ केवल नाथ (गोरक्ष) है इस कथन को मैं (नानक दास जी) अपने पूर्ण सद्विवेक (माथ) से लिख रहा हूँ।।

आगे पाठक स्वयं विचार करे-

-✤-

सिद्ध चरपटु V/s संत नानक सिद्ध गोष्ठी पृष्ठ-938 से

1. **दुनिया सागरू दुतरू कहीए कैसे पाये पारो।**
   चरपटु बोले अवधु नानक देहु सचा बिचारो।।

अर्थात् - इस गोष्ठी में नानक जी प्रथम पक्ति कह रहे है कि दुनियाँ (संसार) को अथाह सागर समझिये। इसका पार कैसे पाया जा सकता है।

इस दौरान दूसरी पंक्ति में चरपट नाथ योगी बोलते है कि नानक जी अपने देह (शरीर में स्थित आत्मा) को ही शुद्ध रखकर इस पर विचार करो। इस पर नानक दास जी का कथन देखिए-

2. **आपै आखै आपे समझे तिसु क्या उत्तर दीज्ये।।**
   सचु कहू तुम पार गामी तुझे क्या (किआ) बैसुणदीजै।।
   - जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नैसाणे।।
   सुरति सबदि भवसागरू तरीऐ नानक नामु बखाणे।।
   रहहि इकांत ऐको मनि बसिया आसा माही निरासो।।
   अगम अगोचर देखि दिखाए नानक ता का दासो।।

आईये विचार करे- उपरोक्त प्रथम कथन में नानक दास जी महाराज को महायोगी चरपट नाथ जी संसार सागर का अनन्य उपदेश दे रहे है तथा इस दूसरे कथन में नानक जी द्वारा योगी राज सिद्ध चरपट नाथ जी के लिए लिखा है। कि जो आप ही अंकन करने वाले है और आप ही समझने वाले है। उन्हें कोई क्या उत्तर देगा - सच कहु (नाथ जी के लिए) कि आप पारगामी (शून्य भेदी) हो आपको हम क्या बिसरा देगे...............।।

सुरति सबदि............................नामु बखाणै।।

अर्थात् - शब्द की सुरति (स्मरण शक्ति) इस संसार सागर से पार तैरा देती है। उस नाम को ही नानक बखान करेगा-एकांत में रहकर मन में बसी आशाओं को निराशित कर मन पर विजय पाने का और उस निर्लेप तत्व (गुप्त शून्य पूर्ण परमात्मा) का दर्शन दिखाया है। अतः मैं (नानकदास)

आपका दास (सेवक, शिष्य, आज्ञाकारी) हूँ।।

अर्थात् **नानक ताका दासा।।**

विचार करे-

प्रश्न 1. नानक दास जी किसको कह रहे है? कि नानक ता का दासा।

उत्तर - स्वयं को गोरक्ष के शिष्य चरपट नाथ महासिद्ध राज योगी का दास यहाँ सम्पूर्णतया प्रमाणित हो चुका है।

प्रश्न 2. जब गोरक्षनाथ जी महाराज के शिष्य श्री चरपट नाथ जी को ही नानक जी पूर्ण समर्पित होकर नाथ जी का दास स्वयं को स्वीकार करते है? तो विचार कीजिए कि क्या यह कपोल कल्पित दंत कथा सत्य होगी कि नानक दास जी द्वारा गोरक्ष नाथ जी परमात्मा को ज्ञान-गोष्ठी में पराजित किया गया-?

मुझे आशा है कि पाठक इस पर विचार करेंगे।।

-✤-

।। एक मत तत्वदृष्टा नाथों की वाणी।।

1. पवित्र गुरु ग्रन्थ साहिब के पृष्ठ नं. 2 पर गुरु को ईश्वर (प्रभु) तथा गोरक्ष को गुरु माना है। अब यहाँ पृष्ठ नं. 952 को पढ़ते हुए, पृष्ठ नं 2 पर भी एक नजर अवश्य रखे-

वाणियाँ निराकार की।।

1. बोले ईसरू सति सरूप।।
परम तत्व में रेख ना रूप।।

2. बोले गोरख सति सरूप।
परम तत्व में रेख ना रूप।।

3. बोले गोपी चन्द सति सरूप।।
परम तत्व में रेख ना रूप।।

4. बोले चरपटु सति सरूप।।

परम तत्व में रेख ना रूप।।

5. बोले भृर्तहरि सति सरूप।।

परम तत्व में रेख ना रूप।।

अधोलिखित नाथ सम्प्रदाय के पाँच महान महायोगियों की एकमता का दिग्दर्शन।।

देखिए गुरुग्रन्थ साहिब के पृष्ठ नं.-952 व 953 पर क्रमशः नीचे से ऊपर की ओर

एक, चार, सात-नौ-दश व अगले पृष्ठ के ऊपर से तीसरी-चौथी लाईन में।।

आईये विचार करें - इन तथ्यों पर -

1. यहाँ सभी नाथ पंथियों के मत एक है और नाथ सम्प्रदाय के किसी ग्रंथ विशेष में ही नहीं बल्कि सिख ग्रन्थ में प्रत्यक्ष प्रमाणित है-

2. यहाँ बात आती है। परमतत्व की और निराकार परमात्मा की तो जरा विचार कीजिए कि नाथ सम्प्रदाय के महानायक एवं विश्व गुरु योगी गोरक्षनाथ जी का रूप अर्थात् उनका आकार-प्रकार क्या है-

आईए जानते है-

नाथ जी का स्वरूप - नाथ संतों के कानों में कुण्डल एवं नाना प्रकार की श्रृंगी-नाद-रूद्राक्ष भभूति आदि उनका आभूषण है और अलबेली छवि जो कि निराकार प्रवृत्ति की उनमें विराजमान होती है और सम्पूर्णतया इनमें सर्वस्व स्थापित भी है। पाखण्ड से दूर और शिव का अघोर रूप जिसे हम आकार में नहीं गिनते। वह दिव्य छवि है। इनकी प्राकाष्ठा सभी संत एवं सम्प्रदायों से हमेशा भिन्न है। अपनी मस्ती में अलमस्त योगी नित्य शाश्वत शताका ध्यान करते है। जो कि सर्वाभिन्न है। अवर्णनीय है। किसी भी ढंग को अपनाने वाले नाथ पूर्ण हठयोगी एवं शून्यवादी है। अयोनी अवतार में स्वयं स्थाई स्वामित्व वाला प्रभु जिसका तेज सम्पूर्ण तेजों (प्रकाश) से असख्यं एवं महान-विराट प्रकृति वाला है। तथा

प्रज्जवलित अखण्ड ज्वाला का प्रचण्ड निराकारी धुणा ..... नाथ जी का मुख्य बिन्दु नित्य शाश्वत है। पूर्णपिता गोरक्ष अनादि काल से ही रज-वीर्य की शक्ति से दूर एवं नूर-स्वेच्छादित है।। ब्रह्मज्ञानी गुरु गोरक्ष नाथ जी महाराज साकार और निराकार दोनों ही द्वंद्वों में प्रधानता वाले महासिद्ध-महाज्ञानी-महायोगी -शून्यभेदी पूर्ण परमेश्वर है। वे पूर्ण समर्थ एवं पारगामी व अनन्त है। अपूर्व से पूर्व-पूर्ण भेदी व नित्य सच्चिदानन्द परमात्मा है। शास्त्रों में यही गूढ़ रहस्य छिपा हुआ है।

देखिए गुरु ग्रंथसाहिब तथा आचार्य गरीबदास जी कृत रत्न सागर के प्रस्तुत लिखित प्रमाणों में एवं

ब्रह्मलीन व शास्त्रार्थ महारथी योगी नरहरिनाथ जी महाराज द्वारा विरचित ग्रंथ **''गोरक्ष कल्प द्रुमः''** में।।

गोरक्ष शब्दी में भी गुरु ग्रन्थ साहिब के पृष्ठ न. 952 तथा 953 की पंक्तियों का सुमेल देखिए-

नाथ वचन - शब्दी की झलक।।

बदंत गोरक्ष सति सरूप! तत विचारै ते रेष ना रूप

(अर्थात् - जति स्वरूप महाशून्य के तत्व सत्गुरु गोरक्षनाथ जी अपनी शब्दी में भी कह रहे है कि मुझ परम् तत्व में कोई भी रूप और रेखा नहीं है।।)

- शबदी -154 म

-❖-

भक्त कबीरदास जी के विषय पर उनका स्वयं शंका समाधान

आज चारों ओर कपोल कल्पित दंत कथा जोर-शोर से मानव पर अपनी छाप छोड़ रही है। जिसके अंतर्गत दंतकथाओं में आश्रित मानव किसी भी सत्य प्रमाण को समझ नहीं पा रहा है ओर तो ओर कुछ तथाकथित

धर्मगुरुओं ने भक्त कबीर को अपना व्यापार चलाने का सुंदर एजेण्डा बना लिया और भक्त कबीर दास जी को पूर्ण परमात्मा बताकर अपना उल्लू सीधा करने में लगे हुए है। गरीब जनता का शोषण करने वाले ये कलियुगी चेहरे संतों की आड़ में आकर जनता का पूर्ण मोक्ष का ठेका लेने वाले बड़ी-बड़ी ऐसी जालसाजी फैला रहे है। जोकि शाश्वत सता सनातन धर्म के खिलाफ है तथा शाश्वत ग्रंथों के साथ छेड़खानी एक बार पूर्व में भी हम भारतीय सह चुके है। जोकि इस्लाम तथा अंग्रेजी सत्ता ने की थी। जिसकी बर्बरता आज भी स्मरण आने पर रोंगटे खड़े करने वाली स्थिति है तथा उसका घाव अभी भरा ही नहीं, उन घावों पर मरहम अभी लगा ही नहीं कि आज वर्तमान में अपने आपको तत्वदर्शी बताकर धर्म का ठेका लेने वाले तथाकथित धर्म गुरु पैदा हो गये और हमारे देश की संस्कृति पर कुठारघात् कर जनता को भ्रमित मंत्र से दीक्षित कर अपनी जेब गर्म करने में अतिव्यस्त है। मैं (शुक्राईनाथ) आपको बताना चाहूगां कि कबीर के विषय में कोई भी हस्तक्षेप स्वीकार ना करे- तथा समझने की पूर्ण कोशिश करे कि क्या वाकई में कबीरदास परमात्मा है या सब अंधी अधूरी स्वयंभू कथाऐं- आईऐ जानते है। भक्त कबीर दास जी द्वारा स्वयं इतिहास के पृष्ठों से प्रमाणित कटु सत्य-

दोहा सिख ग्रंथ "गुरु ग्रंथ साहिब से..........."

1. **कहु कबीर मेरे माधवा, तू सरब बिआपी।**
   तुम समान नहीं दयालु, मोही समान पापी।।

- देखिए- गुरु ग्रंथ साहिब के पृष्ठ नं. 856 पर ऊपर से द्वितीय एवं तृतीय लाईन में

-आओ विचार करे-

यदि भक्त कबीर परमात्मा है तो....

(1) इस प्रस्तुत उपरोक्त कबीर कृत दोहे में कविराज भक्त कबीर अपने से अलावा किस परा शक्ति को सर्वव्यापी कह रहे है?

(2) किसको ! आखिर किसको अपना माधव कह रहे है?

(3) इस दोहे में कबीर जी किसे कह रहे है कि आपके समान कोई दयालु

नहीं है?

उत्तर- 1. इस दोहे में कबीर जी अपने आप से कहीं दूर ब्रह्मज्ञानी शून्य भेदी गुरु गोरक्षनाथ जी को ही सर्वव्यापी कह रहे है। क्योंकि गुरु ग्रन्थ साहिब के पृष्ठ नं. 685 पर घनासरी में नीचे से 2, 3, 4 लाईनों में शून्य मण्डल में एक योगी के निवास का जिक्र प्रकाशमान हुआ है। तथा वह ना नारी है ना नर है। उस नाथ योगी के ही शरण में सब सुर-नर होने का प्रमाण है। अब पाठक स्वयं विचार करे कि क्या कबीर जी सुर-नर जीव आत्माओं से भिन्न है?- नहीं।। अतः स्पष्ट है सब गोरक्ष की ही शरण में विद्यमान है। और वह योगी शब्द नाथ सम्प्रदाय के योगी गोरक्ष के लिए ही प्रयुक्त है।। अर्थात् कबीर जी का सीधा संकेत इन्हीं सर्वव्यापी गोरक्ष की ओर है।

भक्त कवि कबीर जी यदि परमात्मा है तो जरा आईये यहाँ पुनः विचार करें-

1. कहि कबीर राम नाम ना छोडू, सहजे होऊ सोऊ रे।।

वही पृष्ठ नं. - 870 पर

स्वयं यहां भक्त कबीर जी स्पष्ट कर रहे है कि वे राम का नाम नहीं छोड़ सकते (अर्थात् छोड़ना नहीं चाहते) इसलिए इस संसार में सोच समझकर चल रहे है।

2. कहत कबीर सुनहु रे लोई।। राम नाम बिन मुक्ति न होई।।

वही-पृष्ठ नं. - 481 पर

- यहाँ पाठकगण विचार करे- कि स्वयं कबीर कह रहे है कि प्रभु राम बिना मुक्ति असम्भव है।। तो कबीर जी राम भक्त ही प्रमाणित हुए/ परमात्मा नहीं।।

3. कहत कबीर राम गुन गाऊ! हिंदु तुरक दोऊ समझाऊँ।।

देखिए वही पृष्ठ नं. 479 पर प्रथम लाईन में

- इस कथन में साफ स्पष्ट हो रहा है कि कबीर के समय में भी मुस्लिम

****

और हिन्दु दोनों धर्मसता थी तथा दोनों को राम भक्त कबीर जी राम भक्ति हेतु सत्वचन कहा करते थे तथा यहाँ इस दोहे में भी कबीर द्वारा राम की भक्ति करने का लावण्य प्रत्यक्ष झलक रहा है।

– विचार करेंगे– (यदि भक्त कबीर जी पूर्ण परमात्मा है तो यहाँ वे राम भक्ति स्वीकार क्यों कर रहे है।।)

4. कहे कबीर राम नाम पछाना।।

5. कबीर को स्वामी गरिब निवाज।। वही पृष्ठ नं. 331 पर

(इस पंक्ति में जरा विचार करे कि यहां प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता ही नहीं है। क्योंकि स्पष्ट स्वयं कबीर द्वारा मोटे अक्षरों में वर्णित है कि उनका (कबीर का) भी कोई और स्वामी (प्रभु) है।)

6. कहै कबीर निरंजन ध्याऊँ।। वही पृष्ठ नं. 327 पर

(यहाँ निरंजन शब्द नाथ निरंजन का बोध कराता है।)

7. कहे कबीर प्रभु किरपा किजै।।

वही पृष्ठ नं. 226 पर

(यहाँ प्रश्न बनता है कि भक्त कबीर दास जी किस अपने से अलग प्रभु से कृपा की प्रार्थना कर रहे है)

8. राम रसायन पिऊँ रे कबीर।। वही पृष्ठ नं. 325 पर

(स्वयं अर्थ पहचाने)

9. कहे कबीर भजो सारंग पानी।। वही पृष्ठ नं. 323 पर–

(भगतां की वाणी में)

यहाँ सारंग पानी का जाप करने की स्वयं कबीर सलाह दे रहे है। हिन्दी शब्द कोश में **सारंग पानी का अर्थ–विष्णु मिलता है** तथा विष्णु जी को नवनाथ दीक्षा में **सिद्ध संतोष नाथ** के नाम से जाना जाता है। अत: स्पष्ट है कि नाथ जी का ही स्मरण करने हेतु भक्त कबीर जी वचन फरमा रहे है। कबीर विष्णु को भजते है तथा विष्णु जी हमेशा नाथ जी को भजते हैं। इसी नवे बिन्दु के कथनानुसार भक्त कबीर दास जी के शिष्य संत नानक

दास जी महाराज भी इसी ग्रन्थ के पृष्ठ नं. 833 व 834 पर वर्णित बिलावल महला-4 अष्टपदिया धरू-11 में अगले पृष्ठ पर ऊपर से द्वितीय लाईन में भक्त कबीर दास जी की ही वाणी से उनके शिष्य ने क्या हुबहू लेखन कर गोरक्षनाथ जी की महिमा को महामण्डित किया है। देखिए-

नानक जी लिखते है- **जपि जगंनाथ जगदीश गुसाइयाँ।।**

अर्थात् - ऊपर कबीर जी ने संकेत पूर्वक सारंगपानी लिखकर नाथ जी के लिए लिखा तथा यहाँ उनके शिष्य ने वाक्य को सुन्दरता प्रदान करते हुए साफ प्रत्यक्ष किया है कि "उसी जग (संसार) नाथ (मालिक) का जाप करो जो स्वयं पूर्ण जगदीश (परमात्मा) गौसाई है। उसी को जपो।।" (इसे पढ़कर कुछ शेष नहीं रह जाता है।)

10. जैदेउ नामा बिप सुदामा तिनकू कृपा भई है अपार।।
कहे कबीर तूम समर्थ दाता चारि पदार्थ देत ना बार।।

देखिए- गुरु ग्रन्थ सा. पृष्ठ नं. - 856 पर

आओ यहाँ विचार करे- भक्त कबीरदास जी कृत यह दोहा क्या सत् सत् बखान कर रहा है? प्रस्तुत दोहे में कबीर दास जी खुद बखुबी बखान कर रहे है कि जयदेव-नामदेव पण्डित सुदामा इन सबको आपकी अपार कृपा मिली है और आप पूर्ण सामर्थ्य वाले सृजनहार दाता हो आप चारों पदार्थ (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष) देने वाले हो तथा देते हुए समय (बार) भी नहीं लगाते हो।

आगे लिखा है। **डंडा मुद्रा खिंथा आधारी।।**

यानि आप डंडा तथा कानों में मुंद्रा (कुण्डल) तथा खिंथा धारण करने वाले हो।।

(यहाँ कबीर जी का सीधा संकेत नाथों के नाथ गुरु गोरक्षनाथ जी की ओर है।)

प्रश्न-1 ऊपर कबीर जी स्वयं अपने से अलावा किस अन्य प्रभु को

सुदामा आदि पर कृपा रखने वाला तथा चारों पदार्थों के दाता व पूर्ण समर्थ कहा है ?

(स्वयं अग्र विचार करे-)

11. भक्त कबीर दास जी का प्रसिद्ध एवं वस्तुत: ज्यादातर प्रकाश में रहने वाला यह दोहा देखिए-

- **गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागु पावं।**
बलिहारी गुरु आपने, गौविंद दियो बताय।।

देखिए- कबीर वाणी में

पुन: विचार करे-यदि कबीर जी सम्पूर्णता के पूर्ण परमेश्वर एवं परमात्मा है। तो इस दोहे के अनुसार मुझे (नाथ सम्प्रदाय के योगी शुक्राईनाथ को) कबीर पंथी इन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र.1 प्रस्तुत दोहे में गुरु कौन है ?

प्र.2 प्रस्तुत दोहे में गोविन्द कौन है?

प्र.3 यहाँ कबीर स्वयं कौन है ?

प्र.4 क्या यह कहना अनुचित होगा कि इस कबीर कृत दोहे में कबीर से अलग परमात्मा कोई ओर ही है ?

सब स्पष्ट हो चुका है इन प्रश्नों के उत्तर में-

गुरु - भक्त कबीर जी के गुरु (श्री रामानन्द जी)

गोविन्द - जो रामानन्द जी का भी प्रभु है (कबीर से अन्य)

कबीर स्वयं - प्रार्थना करने वाले (अरदासी)

इस तात्पर्य से सिद्ध हुआ है कि कबीर सिर्फ अरदास करने वाले है तथा अपने गुरु (स्वामी रामानन्द जी महाराज) के साथ-साथ जगतपिता जगन्नाथ को खड़े देखकर कबीर जी के मन में शंका पैदा हुई कि पहले अपने गुरु को प्रणाम करू या जगन्नाथ (परमात्मा) को। इसी संश्यानुसार उन्होंने कवि होने के कारण इस घटनाक्रम को प्रस्तुत दोहे का रूप प्रदान कर शंका का निवारण किया। अत: यह कहना कदाचित् भी असत्य नहीं

होगा कि पूर्ण परमात्मा कबीर नहीं बल्कि कोई और (गुरु गोरक्ष) ही है। यह दोहावली भी यही निर्दिष्ट एवं स्वयं प्रमाण देती है।। यदि कबीर स्वयं परमात्मा है तो यहाँ देखिए कि दोहा कबीर खुद कह रहे है। तथा आगे शब्द आया - कि **दोऊ खड़े।** दोनों में से एक तो उनके गुरु तथा दूसरा ऐसा कौन है जिसके लिए कबीर जी जैसे विद्वान कवि को भी प्रणाम करने हेतु सोचना पड़ा तथा उसे गोविन्द (परमात्मा) बताया तथा फिर उन्हें कबीर जी द्वारा प्रणाम (पांव स्पर्श)(नमस्कार) किया गया-

आगे देखिए - वो गोविन्द (परमात्मा) कबीर जी को बताते है कि प्रथम अपने गुरु के चरण स्पर्श करो- जो मुझ (परमात्मा) तक पहुँचने का रास्ता बताते है। अतः यहाँ पूर्ण सिद्ध हो चुका है कि कबीर को रास्ता बताने वाले उनके गुरु है। जहाँ वह रास्ता जाता है। वह परमधाम प्रभु (नाथ, स्वामी) का है। अतः कबीर से ही स्पष्ट हुआ है कि उन्हें नाथ धाम प्रिय है।।

12. जैसा कि मैं पहले भी एक बार पैम्पलेट के माध्यम से बता चुका हूँ और अब दोबारा भी देखिए- कबीर जी का एक और बड़ा खुलासा - इस दोहे से...............

- **कबीर कुतियाँ राम की, मोतिया मेरो नाम।**
  गले राम की जेवड़ी, जितखिंचे तित जाऊं।।

प्रमाण देखिए - आचार्य गरीब दास कृत
गुरु ग्रन्थ साहिब के पृष्ठ नं. 981 पर दोहा नं. 15 में।।
तथा कबीर बीजक के दोहा नं. 271 में।।

इससे स्पष्ट है कि यह दोहा हमारे नाथ सम्प्रदाय का नहीं बल्कि स्वयं कबीरदास जी का है। उन्हीं के ग्रंथों में- इस दोहे में भक्त कबीर जी कहते है कि मैं तो राम का कुत्ता हूँ। अर्थात् वफादार सेवक हूँ।। मोती मेरा नाम है। मेरे गले में उन्हीं प्रभु राम की जेवड़ी (रस्सी) है। वे मुझे जिधर भी खींचते है मैं आज्ञानुसार उधर ही गतिमान हो जाता हूँ।। अर्थात् रामजी मुझे जो आज्ञा देते है मैं वही करता हूँ।। (यहाँ सिद्ध हो चुका है- राम शरणागति

में कबीरदास जी का भक्तित्व)

नोट :- यहाँ भी प्रमाणित हो चुका है कि कबीरदास जी केवल एक कवि व प्रभु के भजन करने वाले एक महान राम भक्त तथा संतों की शरण मे आकर उनकी सेवा कर पुण्य लाभ प्राप्त करने वाले यशस्वी महापुरूष थे।। ना की परमात्मा।।

[यहाँ पर लेखक द्वारा जिज्ञासु पाठकों को एक दर्जन ऐसे प्रमाण दिये गये है जिनको पढ़कर किसी भी शंका का स्थान कपोल कल्पितता के लिए अहम नहीं रह पायेगा।।] - योगी बचनाई नाथ (छोटे गुरुभाई)

[प्रस्तुत पुस्तक में लिखित कोई भी प्रमाण असत्य एवं मनघड़त नहीं है तथा इसकी पुष्टि हेतु हम लेखक सहित जिम्मेदार है।।]

-योगी गंगाई नाथ

(छोटे गुरुभाई)

-❖-

पूर्ण परमेश्वर गोरक्ष नाथ जी में कबीर की श्रद्धा का स्पष्टीकरण

हमारे इतिहास का हर प्रत्येक पन्ना (पृष्ठ) मध्यकाल के शासकों की क्रूरता झेलकर भी काफी हद तक वही सत्यता उगल रहा है जो कि शाश्वत है। अखण्ड है। सच्चाई हमारे ग्रंथों में मानो कोडवर्ड में छिपी हुई है। कुछ लेखक और अनुवादक शास्त्रीय भाषा को तोड़-मरोड़ कर पेश करते है। जिससे की नाथ योगियों का वास्तविक स्पष्टीकरण लगभग गुप्त ही रहा लेकिन प्रबुद्ध वर्ग यहाँ दिये गये कुछ कबीर एवं अन्य संत भक्तों के दोहे व पद पढ़कर नाथ जी का प्रत्यक्ष ब्रह्मज्ञान एवं गूढ़ रहस्य समझने का प्रयत्न करे-

(1) ता मन कौ खोजहु रे भाई।

तन छुटे मन कहाँ समाई।।

(2) सनक सनंदन जयदेवनामा। भगति करी मन उन्हूँ न जाना।।
शिव विरंचि नारद मुनि ज्ञानी। मन की गति उन्हू नहि जानी।।
(3) ध्रूव प्रह्लाद विभीषन सेखा, तन भीतर मन उन्हू ना पेखा।
ता मन को कोई जानै न भैऊ, ता मनि लीन भया सुखदेऊ।।
(4) गोरक्ष भरथरी गोपी चंदा, ता मन सौ मिली करै अनंदा।।
अकल निरंजन सकल शरिरां, ता मन सौ मिली रहौ कबीरा।।

प्रमाण - देखिए - सुन्दर सार, ना.प्र.स. के पृष्ठ नं. - 49 पर

अर्थात् - यहाँ प्रस्तुत पद्यांश में संत मत के भक्त कबीर दास जी लिखते है कि सनक-सनंदन, जयदेव व नामदेव सभी ने भक्तित्व धारण किया - किंतु मन को नहीं पहचाना। शिव, ब्रह्मा, नारद, ध्रूव-प्रह्लाद, विभीषण, शेष इत्यादि ने भी शरीर के भीतर स्थित (विद्यमान) मन को नहीं पहचाना। इस मन का भेद कोई नहीं जानता।

सुखदेव मुनि इस मन में लीन हुए थे। गुरु गोरक्षनाथ जी, भर्तृहरि और गोपीचंद ने इस मन को स्थिर कर (जीतकर) आनन्द की अनुभूति की थी यह शुद्ध मनस्तत्व (मन) निराकार (अकल) एवं निरंजन रूप है यह सब में स्थित है। (विराजमान है) इस मन में अब यह (कबीर जी का खुद की ओर संकेत) कबीर भी मिल रहा है अर्थात् अब कबीर भी इस मन में लीन हो रहा है।। **आईए विचार करे**-यहाँ भक्त कबीर जी ने अपनी श्रद्धा को गोरक्षनाथ जी के प्रति स्पष्ट किया है कि गोरक्ष नाथ जी अपने शिष्यों (गोपी चन्द, भर्तृहरि) सहित मन जीता है तथा वे कण-कण में समाहित निराकार तत्व के आनन्द की अनुभूति के अनुभवी है तथा स्वयं ही निरंजन रूप में समाहित है।

जिनके मार्ग दर्शनानुसार अब मैं (कबीर) प्रशस्त हो रहा हूँ।

-✤-

गुरु गोरक्षनाथ जी की वाणी का कबीर पर पूर्ण प्रभाव

गोरक्ष वाणी- पद

तत बैलो लो तत बेली लो, अवधू गोरक्षनाथ जाणी।

डाल ना मूल पुष्प नाहि धाया, विरधि करै बिन पाणी।।

- देखिए प्रमाण - गुरु गोरख वाणी के पद -17 में।।

अर्थात् - प्रस्तुत पद्यांश में गुरु गोरक्षनाथ जी फरमाते है कि तत्व रूपी बेल को स्वयं गोरक्ष जानते है। इस बैल की ना तो कोई शाखाऐं है ना जड़ है। ना फूल और नाही छाया। यह तत्व की बैल बिना जल के ही वृद्धि करती रहती है।

इसी के फल स्वरूप भक्त कबीर दास भी अपनी वाणी में अल्प बदलाव कर यही स्वीकार करते है। देखिए उनके पद में-

कबीर वाणी-

राम गुण बैलड़ी रे अवधू, गोरक्ष नाथि जाणी।

नाति सरूप न छाया जाकै, बिरध करे बिन पाणी।।

कबीर भक्त जी यहां खुलकर स्वीकार कर रहे है कि उस तत्व की बैलड़ी (बैल) को सिर्फ अवधूत गुरु गोरक्षनाथ ही जानते है। जिस बैल का ना कोई स्वरूप है ना ही उसकी कोई छाया वह बिना जल (पानी) के ही वृद्धि करती रहती है।

(यहाँ कबीर द्वारा गोरक्षनाथ जी को तत्वदृष्टा अवधूत योगी कहा गया है। इसी से नाथ जी के प्रति कबीर जी की आंतरिक श्रद्धा साफ झलकती दिखाई देती है। अत: एक बार गोरक्ष एवं कबीर दोनों की उपरोक्त वाणियों को बिना हिन्दी अर्थ के क्रमश: एक साथ अवश्य पढ़कर देखे)

देखिए - प्रमाण- कबीर ग्रन्थावली में पद- 163 में।।

नाथ सम्प्रदाय पर भक्त कबीर व नानकदास वाणी का ऐक्य

सभी अपभ्रंश नष्ट कर रहे है। दास कबीर ।
देखिए - प्रमाण यहाँ - शिष्य नानक दास जी सहित।।
कबीर वाणी-

(अ) **हे प्रभु नेरे खोजे दूरी, ज्ञान गुफा में श्रंगी पूरी।**
अपर बेलि जो छिन्न-2 पावै, कहे कबीर जो जुग-जुग जीवै।।

(ब) **चित कर बटुआ त्वचा मेखली, भस्मै भस्म चढ़ाई।।**

(स) **तजि पाषंड पांच करि निग्रह, खोजी परम पद राई।।**

(द) **हिरदे सीगीं ग्यान गुणि बांधो, खोजि निरंजन साचा।**
कहै कबीर निरंजन की गति, जूगति बिना पिंड काचा।।

देखिए प्रमाण - कबीर ग्रंथावली
पद- 205, 206, 208 तक में

अर्थात् - यहाँ प्रयुक्त भाग (अ) से अलंकृत कबीर पद में जहाँ हर युग में विराजमान रहने वाले योगी की और साफ संकेत हुए है। इसमें कबीर दास जी कहना चाहते है कि हे प्रभु! जो सम्पूर्णतया की दूरी को स्वयं के अंदर ही खोजने वाले तथा गहरी गुफा रूपी ज्ञान में पूर्ण दक्ष तथा उसका प्रसार करने वाले अपार तत्व रूप बैलड़ी का कण-कण (पल-पल) का ज्ञान रखते है। वे ही नित्य है। यहाँ प्रयुक्त "युग-युग जीवै" का अर्थ है। कि जो नाशवान नहीं है वो ही नित्य शाश्वत है (अर्थात् गोरक्ष नाथ जी)

युग-युग जिने (रहने) की बात यहाँ मुख्यत: प्रकाश में आई- यही बिन्दु गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज के लिए कबीरदास के शिष्य सन्त ज्ञानी श्री नानक दास जी महाराज दोहरा चुके है। देखिए गुरु ग्रन्थ साहिब के पृष्ठानुसार

(अ) पृष्ठ नं.-7 में - ऊपर 8वीं व 9वीं लाईन में-
आदैश तिसै आदैशु। आदि अनीलु अनादि अनाहति

जुगु-जुगु ऐको वेसु।।

अर्थात् - (आदेश उन्हें आदेश, गुरु गोरक्षनाथ जी के लिए नमस्कार सूचक शब्द प्रयोग हुआ है तथा आगे नानक जी द्वारा उन्हें (नाथजी को) युग-युग (प्रत्येक युग में) बसने वाले अर्थात् चीर स्थाई कहा है।)

(ब) पृष्ठ नं.-368 में - ऊपर से तीसरी एवं चौथी लाईन में -

जोगी हरिदेहु मति उपदेसु! जुगु-जुगु हरि-हरि
ऐको वरतै तिसु आगै हम आदैसु।।

अर्थात् - जो महायोगी (गोरक्ष) स्वं मति से हरि उपदेस देने वाले है। जो हर युगों-युगों में एक ही गुरु मन्त्र (हरि उपदेश) देते है। उनके आगे हम (नानक) आदेश (नमस्कार) करते है।

नोट :- यहाँ दो पदों में प्रमाणित भी हुआ है तथा कबीर जी के पद (वाणी) से मेल भी हुआ है कि युगों के चीर से ही गोरक्ष नित्य शाश्वत है।।

उपर्युक्त मुख्य (अ) भाग का मेल पूर्ण होने के बाद
जरा आगे देखिए - भाग ब,स और द में-
इन तीनों का विश्लेषण पृष्ठ भाव मैं नहीं दे पा रहा हूँ

आप स्वयं विश्लेषण यहां दिये गये शब्दार्थो से करे- तथा मिलान कीजिए कि किस तरह कबीर दास जी द्वारा संकेत में ही नाथ स्वरूप योगी के वेश के कतिपय उपकरणों का उल्लेख-साज किया है।-

देखिए सारणी में नाथ सम्प्रदाय के प्रतीक शब्दार्थ

पद क्रम अंक		**शब्द**		**अर्थ**
(अ)	-	नेरे	-	नजदीक, निकट।
	-	श्रंगी (सिंगी)	-	हिरण के सिंग का चूड़ीदार भाग-जो की बीच से खोखला होता है। - बजाने की तूरी, नाथ सिद्धों के शृंगार का अंग।।
	-	बेलि	-	बैल (तत्व की बैल)

	– जुग-जुग	– युग-युग
(ब)	– चित	– मन या हृदय।।
	– बटवा	– अपने नियंत्रण में, वश में करना
	– तुचा	– त्वचा, चमड़ी
	– मेखली	– नाथजी के श्रृंगार का अंग (मूंज से बना हुआ-कमर बन्ध)
	– भसमे भस्म	– भभूति शरीर में चढ़ाना (मलना)
	– तजि	– त्यागकर
	– पांषड	– पाखण्ड, बकभक्ति, ढोंग
	– निग्रह	– समझना-शोध
	– परम पद	– परमात्म तत्व का स्थान (गोरक्ष धाम)
	– राई	– गोरक्षराई (गोरक्षनाथ जी की और संकेत)
(स)	– ज्ञान	– बोध
	– निरंजन सांचा	– परमेश्वर - ब्रह्म पिता-गोरक्ष
	– निरंजन की गति	– परमात्मा का भेद
	– जुगति	– युक्ति या साधन, तरिका - ढंग
	– प्यंड	– पिंड या शरीर
	– काचा	– अधूरा, अधपक्का।।

यहाँ प्रस्तुत सभी ''शब्द'' उपरोक्त पद अ, ब, स, द में कबीर दास जी द्वारा प्रयोग हुए है। जो कि नाथ सम्प्रदाय की और संकेत का ही हिस्सा है। अर्थात् भक्त कबीर द्वारा नाथ जी के वेश का बखान श्रद्धा से किया गया है और गोरक्ष को बक भक्ति से दूर तथा परम् पद में स्थिर रहने वाला बताकर कबीर जी ने अपनी श्रद्धा प्रकट की है।।

–✤–

****

संत मलूक दास की दृष्टि में गुरु गोरक्ष तथा भक्त कबीर

हमारे मध्यकालीन संतों में एक से एक महान राष्ट्र संत हमारे भू-भाग पर प्रकाशमान हुए तथा उनकी ख्याति पूर्ण प्रशंसनीय और आदर्शवान व्यक्तित्व वाली सिद्ध हुई- संतों का समाज में- अर्थात् राष्ट्र के जिस प्रकार राष्ट्र ध्वज में केसरिया रंग का स्थान सर्वोपरि होता है उसी तरह संतों का स्थान भी समस्त चराचर-जगत के देवताओं में भी तथा उसके तत्पश्चात राजा-महाराजाओं में भी सर्वोपरि होता है। हमारे संत मार्ग में एक संत मलूक दास भी हुए है। जो कि अपने ख्यातित्व से पूर्णतया सुप्रसिद्ध भी है। उन्हीं महान राष्ट्र संत की एक रचना गुरु गोरक्ष व कबीर पर सत्यता भाषित एवं प्रमाणित प्रकाश में आई है। जरा यहाँ देखिए- संत मलूक दास कृत उल्लेख-

हमारा सत्गुरु विरले जानै।
सूई के नोक सुमेर चलावै, सौ यह रूप बखाने।।
की तौ जानै दास कबीरा, की हिरण्याकुश पुता।
की तौ नामदेव और नानक, की गुरु गोरक्ष अवधूता।।

प्रमाण देखिए- संत बाणी संग्रह के दूसरे भाग में पृष्ठ नं. 102 पर

भावार्थ - प्रस्तुत लेखनी में संत मलूक दास जी महाराज इस लेख को सुन्दरता प्रदान करते हुए छन्दरोपण कर लिखते है कि हमारे सत्गुरु (तत्व-बिन बीजके महाशून्य से प्रकट तत्व को) को कोई विरला ही जानता है। वह (परमात्मा) चाहे तो सूई की नोक में सुमेर (पर्वत) को चला (स्थित) कर सकता है। वही उसके रूप का बखान कर सकता है। उसे या तो कबीर दास जानते है या हिरण्याकुश दानव का पुत्र प्रह्लादभक्त।। और या संत नामदेव व नानक! या जानते है। पूर्ण एवं सर्वस्व के गुरु परमेश्वर अवधूत गोरक्षनाथ जी।। इनके अलावा कोई नहीं जानता।।

नोट :- यहाँ गोरक्षनाथ जी के लिए गुरुत्वता भी प्रकट की गई है।

-✤-

सत्गुरु गोरक्षनाथ जी के सान्निध्य में संत कबीर दास- प्रमाण-

-सबदी बनाम सबदी-

मैं (लेखक -योगी शुक्राईनाथ) आप सभी पाठकों को सत्गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज का संत कबीर पर गहरा प्रभाव किस प्रकार पड़ा- ? इस करारे एवं कटु सत्य को प्रमाण सहित दे रहा हूँ। कृपया किसी भी शंका पर क्रोध आए तो प्रमाण मिलाकर शांतित्व का परिचय दे। या फिर संत कबीर दास जी की सबदी को गोरक्ष गूढ़ ज्ञान स्वीकार कर गुरु गोरक्ष कृपा का अंश प्राप्यर्थ प्रार्थना करे- आईए मिलान करे - भक्त कबीरदास पर गोरक्ष सबदी का पूर्ण हस्तक्षेप- क्रमानुसार-

- दूध का दूध - पानी का पानी

प्राचीन गोरक्ष सबदी-

(अ) **गगन मण्डल में ऊंधा कूवाँ, तहां अमृत का वासा।**
सुगरा होई सो भरि-भरि पिवै, नुगरा जाई प्यासा।।

-प्रमाण- गोरक्ष शब्दी में पढ़े

इस सबदी से निम्नलिखित कबीर की उल्ट फेरी इसी आधार पर देखिए-गोरक्षानुसार

भक्त कबीर दास कृत सबदी - (550 से 600 वर्ष पूर्व कबीर हुए तब की)

- **आकासे मुखि ओधा कूवाँ, पाताले पनिहारी।**
ताका पाणी कोई हसाँ पिवै, बिरला आदि बिचारी।।

- **प्रमाण-कबीर शब्दी में पढ़े।।**

गोरक्ष की दूसरी सबदी तथा कबीर पर प्रभाव-

(ब) गोरक्ष सबदी (प्राचीन)

वेदे ना शास्त्र कतेब ना कुराणे, पुस्तके ना बाच्यां जाई।
ते पद जाना बिरला जोगी, और दुनी सब धंधे लाई।।

भावार्थ :- गुरु गोरक्षनाथ जी अपनी इस प्रस्तुत सबदी में लिखते है अर्थात् कहना चाहते है कि चारों वेदों में, सम्पूर्ण शास्त्रों में, धार्मिक पुस्तकों में तथा कुरान आदि ग्रन्थों में जिस (परम तत्व-परम पद) को नहीं बांचा (पढ़ा) जा सकता। उस परम पद को किसी बिरले योगी ने ही जाना है। बाकी समस्त दुनिया (संसार) तो धन्धों में ही लगी हुई है।।

इसी आधार पर कबीर द्वारा रचित शब्दी देखिए

दोहा - पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ, पण्डित भया ना कोय।
ढाई अक्षर प्रेम के, पढ़े सौ पण्डित होय।।

अर्थात् - भक्त कबीर जी कहना चाहते है कि पुस्तके पढ़-पढ़ सारा जग (संसार) चला, लेकिन इन धार्मिक पुस्तकों- ग्रन्थों, शास्त्रों को पढ़ने से पण्डित (तत्वज्ञानी) कोई नहीं हुआ! जो ढाई अक्षर (तत्व) को निरखता है। वही सम्पूर्ण विद्वान है। पूर्ण है।

(कबीर से पूर्व की गोरक्ष सबदी में अर्थ मेल पूर्णता से प्रतीत हो रहा है।
देखिए ढाई अक्षर - त, त् व = तत्व (तत्+त्व)
प्रमाण हेतु - देखिए - गोरक्ष शब्दी व कबीर रचनाओं में

गोरक्ष शब्दी -

(स) **तत् बेलो लो तत बेली लो, अवधू गोरक्षनाथ जाणी।**
डाल ना मूल पुष्प नहि छाया, बिरधि करे बिन पाणी।।

नोट :- इसी आधार पर कबीर रचना देखिए -

- **कबीर वाणी**

– **राम गुण बैलडी रे अवधू गोरक्षनाथि जाणी।**
नाति सरूप न धाया जाकै। बिरध करे बिन पाणी।।

- इसी में पीछे प्रमाण देखिए

(इस प्रकार के अनगिनत उदाहरण हम पेश कर सकते है जो कि प्रमाणित है तथा जिनसे स्पष्ट है कि सब पर नाथ ही कृपालु है। नाथ ही रक्षक है।)

(द) गुरु गोरक्ष नाथ जी की सबदी-पद-दोहे-वाणियाँ एवं अन्य ग्यानगौदड़ी जैसी सभी कृतियाँ मेरे शोधन से ही नहीं अपितु सन्त कबीर दास जी के कृत्यों से भी साफ स्पष्ट होती है। कि ये सब कबीर इत्यादि के पूर्व की रचना है तथा इनमें नाद-बिंद, अनहद नाद, शून्य समाधि शून्य मण्डल, योग ऐक्य, स्थाई चित वृत्ति व मन की नियता पर विशेष जोर स्पष्ट है। ये सभी प्रतिकात्मक शब्द गुरु गोरक्षनाथ जी से ही अन्य उनके शिष्यों एवं सम्पूर्ण नाथ पंथियों तथा संत कबीरदास व उनके गुरु रामानन्द जी व दादा गुरु राघवानन्द जी सहित सभी मध्यकालीन संतों में प्रभावशील सिद्ध हुए है। इसके प्रमाण हेतु जरा एक नजर प्रस्तुत पुस्तक में दिए जा रहे दोनों पक्षों के श्लोक, शब्दी-पद-शब्दार्थ में भी देखे एवं सबदीयाँ आपस में भक्त कबीर दास जी महाराज एवं योगी गुरु गोरक्ष नाथ जी महाराज की पुस्तकों-ग्रंथों में मिलान कर इस तथ्य को समझे कि 600 वर्ष पूर्व में कबीर दास जी हुए! तो उनकी रचनाएं भी लगभग 550 या 600 वर्ष पूर्व की ही होंगी। जबकि गुरु गोरक्ष नाथ जी महाराज का तो भगवान श्री कृष्ण जी एवं राम चन्द्र जी - हनुमान जी सहित काफी लाखों हजारों सालों का प्रमाण तो हमारे सद्ग्रन्थों में ही मिलता है।

प्रमाण - गर्ग ऋषि की रचित रचना गर्ग संहिता में एवं नारद पुराण, स्कन्द पुराण के केदार खण्ड, कल्पद्रुम तंत्र तथा भगवान कृष्ण कृत राजगुह्य शास्त्र में तथा अन्य भी सैकड़ों प्राचीनतम ग्रन्थों में।।

अतः इन सब प्रमाणों से स्पष्ट हो चुका है कि सर्वप्रथम गुरु गोरक्षनाथ की प्राचीन रचनाएं प्रकाशमान थी तथा उनके बाद अन्य भक्त कबीर जैसे भक्तों, संतों ने उन्हीं के सानिध्य को पाकर गुरु गोरक्षनाथानुसार शब्द मिलान किये तथा रचनाऐं रची। यही सत्य है।

-✤-

चित पर भी गोरक्ष अनुसार कबीर

गुरु गोरक्षनाथ जी की बाणी-सबदी-।।

(अ) **अवधू मन चंगा तो कठौती में भी गंगा।**
बांध्या मेला तौ जगत्त चेला।।

- गोरक्ष शब्दी- 153 पर

अर्थात- मन के विषय पर गुरु गोरक्ष कह रहे है कि हे अवधू ! यदि अन्दर से मन साफ हो तो कठोति (छोटा काष्ठ का कठौता) में ही गंगा मानो कि विद्यमान है। क्योंकि गंगा स्नान से जो लाभ होता है वह मन की शुद्धिकरण से ही प्राप्त होता है। यदि माया के जाल में पड़े हुए मन को स्वतंत्र कर दिया तो सारा जगत शिष्य (अपना) हो जायेगा।

इसी मन पर हूबहू गुरु गोरक्ष की तरह शरीर शुद्धि को कम तथा चित शुद्धि को ज्यादा महत्व निम्नलिखित रचना से भक्त कबीर द्वारा दिया गया है। देखिए- कबीर कृत ये अंश-

काया मांजसि कौन गुना, जो घट भीतर है निगुना।।

अर्थात् - भक्त कबीर दास प्रस्तुत उपरोक्त अंश में कह रहे है कि इस शरीर को कितना मांजसि (साफ शुद्ध) करोगे- जब तक मन में दूषित विचार अनगिनत भरे है अर्थात् मन के भीतर शुद्ध संयमित तथा पवित्र विचारों का समावेश ही स्पष्ट शुद्धि करण है।

-✤-

माया मोहनी पर गोरक्ष के बाद-कबीर व दादू के भी तीखे तेवर

माया रूप पर गोरक्ष हस्तक्षेप (कबीर से पूर्व की रचना)

(अ) **बिंद और भग बाछिणी औरे, बिन दंत्या जग षाया।**
प्राण पुरूष का मरम न पाया, छोड़ी बिगुते माया।।

(ब) अरधे जाता उरधे धरै, काम दगध जै जौगी करै।
तजै अल्यंगन काटे माया, ताका विष्णु पषाले पाया।।

क्रमानुसार अर्थात **(अ)** प्रस्तुत गोरक्ष सबदी में गुरु गोरक्ष नाथ जी कहते है कि जो लोग माया रूपी बाघिन में आसक्त है। वे इस बाघिनि मायाद्वारा बिना दांतों के ही खाए जा रहे है। माया के द्वारा वे लोग ब्रह्मतत्व से प्रतिकर्षित किये जा रहे है और इसके परिणाम स्वरूप वे "अंतर प्राण व तत्व बेलि" का रहस्य प्राप्त करने में असमर्थ रहते है।

(ब) गोरक्षनाथ जी यहाँ उपरोक्त 'ब' भाग से कहना चाहते है कि जिन्होंने अधगामी शुक्र (वीर्य) को ऊर्ध्वगामी बनाकर काम को दग्ध कर दिया है। योनि स्पर्श का विच्छोह कर माया के बन्धन को काट दिया है। उनके पैर तो स्वयं विष्णु भी पूजने के लिए तैयार हो जाते है।।

नोट - (इन दोनों "अ तथा ब" भागों में गुरु गोरक्ष नाथजी द्वारा माया का स्वरूप तथा गुण-अवगुण से होने वाले फल का बखान किया गया है तथा माया का त्याग करने की प्रेरणा देते हुए माया का तिरस्कार किया है।) इसी आधार पर गोरक्ष के पश्चात् भक्त कबीर दास द्वारा माया पर आघात - आईये देखते है-

कबीर वाणी - पद - पंक्तियाँ-

"माया महाठगनी हम जानी।।"

- माया को नाथजी ने बाघिन तथा कबीर द्वारा यहाँ महाठगनी कहकर तिरस्कार किया गया है तथा संत दादू जी ने भी इसी आधार से माया पर कुठार घात किया-

- **संत दादू दास वाणी** -
- **माया सांपणी सब डंसे, कनक कामणी होय।।**

अर्थात् - प्रस्तुत वाणी संत दादूदास जी की वाणियों के संग्रह से ली गई है। इसमें संत दादू दास जी ने माया मोहनी को विषधारी नागिन की उपमा (संज्ञा) देकर कड़वे तेवर से अपमानित तथा सम्बोधित किया है।

-✤-

कबीर जी का नाथ जी के शब्दों से ही साम्य नहीं बल्कि भाव साम्य भी

गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज के तत्वज्ञान को सभी संतों द्वारा ग्रहण किया गया है लेकिन गोरक्ष के तत्वधान में उनके बाद मध्यकालीन संत साहित्य में दूसरा सामर्थ्यवान भक्त "कबीर" ही महापुरूष के रूप में प्रकाशमान हुए है। भक्त कबीर जी का गुरु गोरक्ष नाथ जी के रचनाओं के साथ शब्द साम्य तो मिलता ही है। लेकिन जरा गौर फरमाने पर ये भी सिद्ध होता है कि उनके भाव भी नाथ जी से मेल खाते हुए नजर आते है। अत: यह लिखना या कहना कदापि अनुचित नहीं होगा कि भक्त कबीरदास अपने गुरु रामानन्द जी के कम और गुरु गोरक्ष नाथ जी के सान्निध्यपात में ज्यादा रहे है। इसीलिए नाथ वाणियों और रचनाओं से भाव सहित कबीर जी का पूर्ण साम्य प्राप्त होता है। आईए देखते है कैसे ? (प्रमाण सहित)

गोरक्षवाणी पद-

(अ) **"सहज पलाण पवन करि घोड़ा, लै लगाम चित चबका**
चेतनी असवार ज्ञान गुरु करि और तजो सब ढबकाई।"

- देखिए प्रमाण - गोरख वाणी, पद 13 में-

अर्थात् सत्गुरु गोरक्षनाथ जी स्पष्ट कर रहे है कि सभी तरीकों/उपायों को छोड़ दो/परित्यागित कर दो केवल पवन रूपी घोड़े पर सहजता की काठी कसकर उसे लय की लगाम लगाकर गुरु का सद्ज्ञान प्राप्त करो-

- अब इसी के समकक्ष कबीर भाव-साम्य देखिए-

कबीर कृत रचना -

कबीर तूरी पलाँणियाँ, चाबुक लिया हाथि।
दिवस थका साई मिलौ, पीछे पडि है राति।।

- प्रमाण देखिए - कबीर ग्रन्थावली-

डॉ. पारस नाथ तिवारी पृष्ठ नं. 160 पर

अर्थात् - भक्त कबीर जी गुरु गोरक्ष नाथानुसार इस अंश की रचना करते हुए कहते है कि प्रेम रूपी चाबुक हाथ में पकड़कर विचार रूपी घोड़े पर काठी (गद्दी) कसकर शाम तक अर्थात् दिन का रात में परिवर्तन होने से पूर्व की पहर में अपने साई (प्रभु या गुरु भी और संकेत) या स्वामी से अवश्य मिल लूगाँ।।

तथाकथित धर्मगुरुओं की बोलती बन्द करने वाले कुछ और प्रमाण

स्वयं शब्दार्थ करे एवं सत्य को निरखै'

गोरक्षवाणी

(अ) **नीझर झरणै अमीरस पीवणां षटदल बैध्या जाई।**
चंद बिहूंणां चांदीणा तहाँ देख्या श्री गौरक्षराई।।

प्रमाण - गोरखवाणी

अर्थात् - प्रस्तुत शब्दी सत्गुरु आदि योगाचार्य गोरक्षनाथ जी महाराज की 'गोरक्षवाणी' नाम की कृति से ली गई है। इस उपरोक्त शब्दी में आदि गुरु गोरक्षनाथ जी कह रहे हैं कि मैंने षटदलों (छ चक्रों जैसे-मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मनीपूरक, अनाहत, विशुद्ध और आज्ञा इत्यादि) को बेंध कर कुण्डलिनी शक्ति को जाग्रत कर मन की गति से बिना झरने के पानी (अमृत) का पान अर्थात् अमर तत्व का सेवन कर ब्रह्मरन्ध्र में (स्वयं गोरक्ष ने गोरक्ष तत्व का) बिना चन्द्रमा के ही चाँदनी (गोरक्ष तत्व, आत्म तत्व अर्थात् अमृत अमर तत्व) का अनुभव किया-अर्थात् गोरक्ष ने स्वयं की अमृत तत्व में उपस्थिति का अनुभव किया।

अब इस गोरक्ष वाणी का कबीर दास जी पर गहरा प्रभाव देखिए-

देखिए - निम्नलिखित कबीर वाणी में

(अ) **मन लागा उनमन सौ गगन पहुँचा जाई।**
देख्या चंद्र विहूंणां, तहा अलख निरंजन राई।।

यहां स्थित कबीर ग्रंथ के अंश में कबीर बड़ी ही हर्षोल्लासता के साथ

कह रहे है कि ब्रह्मरन्ध्र में बिना चन्द्रमा के ही मन की गति से चांदनी का अनुभव उन्होंने (कबीर ने) किया है। जहाँ (महाशून्य के केन्द्र में) अलख निरंजन राई (सत्गुरु गोरक्षनाथ विद्यमान है।) अर्थात् पूर्ण परमात्मा गोरक्षनाथ की आभा (गोरक्षतत्व) को बिना चन्द्र की चांदनी में ही कबीर ने अनुभव किया है।

प्रमाण हेतु देखिए- कबीर ग्रन्थावली पृष्ठ नं. - 167 पर

इस प्रकार गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज सृष्टि के आदि से ही महाशून्य में विद्यमान परम पिता परमात्मा है। इनका भेद किसी ने भी नहीं जाना - इनकी महानता को स्वयं भक्त कबीर ने तो क्या। बल्कि स्वयं महादेव ने भी नमस्कार किया है। देवों के देव महादेव- माता पार्वती एवं महात्मा बालगुदांईनाथ जी, संत श्री सिद्ध दत्तात्रेय जी व स्वयं श्री गुरु गोरक्ष के शिष्य गोपी चन्द्र व भर्तृहरि जी, संत हणुवंत जी, सिद्ध जलेन्ध्रपाव जी, सिद्ध योगी चरपट्टनाथ जी एवं अन्य सभी नाथ पंथी योगी तथा कण-कण में महासिद्धो ने भी महायोगी गुरु गोरक्षनाथ जी के शब्दों एवं पदों, काव्य-छन्दों-वाणी लेखन इत्यादि का अनुसरण करते हुए उन्हीं को आधार मानते हुए अपनी ऋचाऐं रची। इतना ही नहीं अपितु एक समय की बात मुझे (योगी शुक्राईनाथ) स्मरण आई तो बताना चाहुँगा कि हम (लेखक योगी शुक्राईनाथ व मेरे आदरणीय बड़े गुरु भाई योगी महंत सुंद्राई नाथ जी) अपने पूजनीय गुरु महाराज श्री योगी डॉ. चेताई नाथ जी महाराज के साथ राजस्थान प्रांत के फतेहपुर शेखावाटी के निकट योगी श्री शम्भुनाथ जी महाराज द्वारा बाबा श्री सिद्ध उत्तमनाथ आश्रम कारंगा ग्राम में नाथ सम्प्रदाय के नियमानुसार अस्थल बोहर मठाधीश्वर महन्त श्री चांद नाथ जी महाराज की अध्यक्षता में 32 धुणी का विशाल तीन दिवसीय नाथ आयोजन (भण्डारा) दिनांक 11.12.13 मार्च 2013 तक किया गया। उस दौरान 13 मार्च की शाम को जब हम आयोजन के सकुशल सम्पन्न होने के उपगंत वापिस अपने गंतव्य को लौट रहे थे तब

मैंने (लेखक) अपने गुरु जी से बहुत विविधतापूर्ण आध्यात्मिक चर्चा (सीखने के प्रयोजन से) की तथा गुरु उपदेश ग्रहण किये। उस दौरान जब वार्ता संत कबीर तक पहुँची। तो गुरु महाराज कहने लगे- (हरियाणवी भाषा शैली में) कि **बेटे – ज्यादा चक्करों (उलझनों में) नहीं पड़ा करते** और इतना कहते ही मैंने कबीर के विषय पर अपनी शंका समाधानार्थ गुरुजी के समक्ष और ज्यादा आठ-दस प्रश्न रखे – (क्योंकि मैं जानता था कि गुरु द्वारा ही सम्पूर्ण शंका और भ्रम का निवारण हो सकता है।) इसलिए अपनी आंतरिक सतुष्टि हेतु गुरु चरणों में हृदय रूपी थाली पेश की अतः इस दौरान संत्गुरु देव द्वारा मुझ बालक (योगी शुक्राईनाथ) के हृदय की विडम्बना को समझते हुए मुझे एक ही उपदेश दिया गया- जो कि सर्वकष्ट एवं शंका निवारण यंत्र से कम नहीं था- उन्होंने (सत्गुरु श्रद्धेय श्री योगी चेताईनाथ ही महाराज) कहा! कि बेटे! भक्त कबीर दास जी व उनके गुरु, दादा गुरु एव सभी गुरु भाई और उनके सारे शिष्य सनातन गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज के ही चेले (शिष्य) हुए है। जिनमें प्रमुखतः कबीर ही नहीं अपितु संत तुलसी दास जी संत धरणीदास जी, संत धर्मदास जी, संत चरणदास जी, संत दरिया दास जी, संत पलटुदास जी, संत हणुवत जी, संत पीपा, नामदेव तथा सहजोबाई, संत मीराबाई इत्यादि ही नहीं बल्कि सिद्ध योगी दत्तात्रेय तक भी सतगुरु गोरक्षनाथ जी के चेले (शिष्य) हुए है। **तुम्हें गहरे अध्ययन में यही सत्य प्राप्त होगा।**

इस दौरान आगे भी बहुत कुछ उपदेश गुरु जी द्वारा प्राप्त होते रहे और हम अपने निवास स्थान बाबा चन्द्राईनाथ योगाश्रम ग्राम पथरवा (महेन्द्रगढ़-हरि.) में पहुँच गये। रात्रि विश्राम के बाद गुरु जी सुबह को हरिद्वार को प्रस्थान कर गये और हम सभी (गुरुभाई) भी अपने निर्धारित गंतव्य को प्रस्थान कर गये। अब गुरुजी का उपरोक्त उपदेश दिन प्रतिदिन मेरे अंतर में बार-बार पुनरावृति करने लगा। मुझे जिज्ञासा होने लगी कि मैं इस गुरु उपदेश को ग्रन्थों-शास्त्रों में टटोलू। बड़ी-रात-दिन की मेहनत

के बाद यह गुरु उपदेश सत्य सिद्ध भी हुआ और मेरी मेहनत भी रंग लाई- कि कैसे ? आखिर कैसे सभी भक्त कबीर से मीराबाई तक ने गोरक्ष को गुरुत्व का अधिकार दिया- इस प्रस्तुत पुस्तक में आपको सभी संतों के पद-शबदी दोहे गुरु गोरक्षनाथ जी के आधार पर बनाए हुए मिलेगें। जोकि पीछे मैं आपको बहुत से प्रमाण दे भी चुका हूँ।

तथा देखिए कुछ और - यहाँ- जब मैंने भी यह पढ़ा तो मेरी भी आँखे खुली की खुली रह गई-

कुछ उदाहरण पेश करता हूँ

[गुरु गोरक्ष वाणी/ पद से अन्य संतों-भक्तों का हूबहू पद/वाणी आदि का निर्माण देखिए]

।। गोरक्ष ज्ञान दत्तात्रेय में।।

गोरक्षवाणी/ पद

(अ) **एकाएकी सिद्ध नाऊं, दोइ रमति ते साधवा।**
चारि पंच कुटुम्ब नाउं दस बीस ते लसकरा।।

देखिए प्रमाण - गोरख वाणी।।

इसी उपरोक्त गोरक्ष वाणी के अनुसार निम्नलिखित सिद्ध देव दत्तात्रेय जी की वाणी देखिए-कितना मेल खाती है।

दत्तात्रेय कृत

ऐकाऐकी सिध्या नाउ। दुतीए नामं साधवा।
च्यारि पांच केटूबा नाऊं। दस बीस ते लसकरा।।

- देखिए प्रमाण- नाथ सिद्धों की बानियां
पृष्ठ संख्या - 89 पर

।। गोरक्ष ज्ञान संत तुलसीदास में।।

गोरक्षवाणी

(ब) **गगन मण्डल में ऊधाँ कूवाँ, तहाँ अमृत का बासा।**
सगुरा होई सौ भर भर पिवै, नुगुरा जाई प्यासा।।

देखिए प्रमाण - गोरक्ष वाणी में

तुलसी दास जी की शब्दावली का मेल देखिए-

तुलसीकृत –

लखि आकाश ओधाँ कूवाँ, तामै सूरती समाना हो
गगन गिरा गरजत भई, फूटा असमाना हो।।

प्रमाण देखिए – तुलसी साहब की शब्दावली पृष्ठ – 30 पर प्रथम भाग में।।

(गोरक्ष टिप्पणी का प्रभाव देखिए)

।। गोरक्ष ज्ञान संत हणवंत जी में।।

गोरक्षवाणी

(स) **पंथ चले चलि पवनां टुटै। तन छीजै तन जाई।**
काया तै कछु अगम बतावै। ताकी मूंडू माई।।

देखिए – प्रमाण – गोरक्ष वाणी – 291 में

हणवंत जी की वाणी-इसी आधार पर –
पंथ चले चलि पवनां टूटै। तन छीजै तत जाई।
काया ते कछु दुरि बतावै! तिसकी मूंडो माई।।

अवश्य देखिए प्रमाण – नाथ सिद्धों की बानियाँ – पृष्ठ नं. 127 पर

(ड) **गोरक्ष ज्ञान संत चरणदास व संत धर्मदास व दरिया दास जी में**

गोरक्ष वाणी-

-भ्रमर गुफा में मन धरि ध्यानै बैश्या आसण बाली।
- उल्टै कमल सहस्त्रदल बास, भ्रमर गुफा महि ज्योति प्रकाश।।

जरा देखिए प्रमाण – गोरक्षवाणी पृष्ठ – 122 व 124 पर.....

इसी आधार पर देखिए संत चरणदास जी में गोरक्ष ज्ञान.........

चरन दास वाणी-

- भवर गुफा में है तिरबैनी, सुरति नीरति ले धावो।

प्रमाण – संत चरनदास की बाणी

पृष्ठ नं. 48 – भाग –1 में

****

इसी उपरोक्त शब्दाधार पर देखिए संत धर्मदास (कबीरजी के शिष्य) की वाणी–

– धर्मदास वाणी–

– भवंर गुफा में उठत बुलबुला, सौ अंजन पिय नैन लगावौ।

प्रमाण – धर्मदास की शब्दावली – पृष्ठ सं. –32 पर

उपरोक्त आधार पर ही देखिए दरिया दास जी के विचार–

– दरिया दास वाणी–

– गगन मंडल बिच रच्चो चौतरा भवर गुफा के घाटे।।

देखिए प्रमाण – दरिया साहब की शब्दावली पृष्ठ सं. –41 पर

इस प्रकार सभी संतों द्वारा अपने–अपने विवेक द्वारा पूर्व रचित गोरक्ष वाणियों पदों एवं अन्य गोरक्ष कृतियों द्वारा ही संसार को ज्ञान दिया गया है और नाथ जी का ही पूर्ण अनुसरण कर अपने भक्ति मार्ग में प्रशस्त हुए है।

गोरक्ष ज्ञान सन्त सहजोबाई में

गोरक्ष वाणी का सहजोबाई की वाणी पर प्रभाव

गोरक्ष वाणी

– ईला प्यंगुला सुषमन नारी, अहनिसि बहै प्रनाली।

– ईला, प्युंगुला जोगण भेंटी, सुषमन मिल्या घर बासा।।

– ईली सोधि धरि प्यंगुली पूरी, सुषमनी चढ़ असनानं।।

देखिए– गोरक्ष वाणी– पद में तीनों

इन पदों का प्रभाव निम्नलिखित पदों पर देखिए

सहजोबाई का पद–मामूली शब्दान्तर में

इड़ा–पिंगला ऊपर पहुँच सुखमन पार उधार।

देखिए – सहजोबाई की बाणी में पृष्ठ नं–51 पर

इस प्रकार यहाँ तक सम्पूर्णतया सिद्ध हुआ है कि सभी संत–महात्माओं ने गुरु गोरक्षनाथ जी का ही शब्द साम्य एवं अर्थ भाव साम्य अपनाया है और

सभी संतों द्वारा गोरक्षनाथ जी का सानिध्य स्वीकारना प्रमाणित हुआ है। यहाँ हमारे श्रद्धेय एवं प्रात: स्मरणीय गुरुदेव (श्री महामंत्री योगी चेताईनाथ जी महाराज) का उपदेश भी स्पष्ट सत्य सिद्ध हुआ है कि संत कबीर ही नहीं अपितु समस्त महान एवं आत्मज्ञानी सिद्धों-योगियों-महात्माओं तक सभी ने भी गोरक्ष को गुरु स्वीकार किया है। अर्थात् सभी संत नाथ सम्प्रदाय के आचार्य एवं ब्रह्मपिता पूर्ण परमेश्वर गुरु गोरक्षनाथ जी के ही चेले (शिष्य) है और यह गुरु महाराज का उपदेश यहाँ प्रमाणित भी हो चुका है। इसमें यहाँ आनन्द एवं विस्मयता की मुख्य बात तो यह है कि इस प्रस्तुत पुस्तक में दिए गये प्रमाण नाथ सम्प्रदाय से अलग दूसरों पर व्यंग्य कसने वाली सम्प्रदाय एवं पंथों के ग्रंथों का ही स्वयं स्पष्टीकरण उन्हीं की बोलती बन्द करने वाला सिद्ध हो चुका है। अत: सिद्ध हुआ है कि सर्वोपरि गुरु गोरक्ष!!

-✤-

गोरक्ष पर स्पष्टीकरण

महायोगी योगेन्द्र श्री शम्भुजति सर्वस्व के गुरु गोरक्षनाथजी के विषय में मैं (लेखक) मेरी तरफ से कुछ भी नहीं कहते हुए आईये जानते है कि अन्य प्राचीन मध्यकालीन संतों के प्रमाणित विचार-नाथ सम्प्रदाय से अन्य दूसरी सम्प्रदाय के संतों का ही विवेचन स्पष्ट करेगा कि गुरु गोरक्ष का स्थान कहाँ है।

सर्वप्रथम भक्त कबीर का स्पष्टीकरण देखिए-

(1) कबीर दास की पद वाणी से..............

लिखा है.......**राम गुण बैलड़ी रे अवधूगोरक्ष नाथि जाणि।**
नाति सरूप न छाया जाके विरधी करै बिन पाणी।।

- देखिए - कबीर ग्रन्थावली
पद - 163 में

यहाँ कबीर दास जी प्रस्तुत उपरोक्त पद के अंश में स्पष्ट कर रहे है

कि राम गुण (तत्व रूप) की उस बैल को सिर्फ गोरक्षनाथ अवधूत योगी ही जानते है कि वो बिना स्वरूप और छाया बिना, कैसे बिना ही जल के वृद्धि करती है। इस तत्व ज्ञान को गोरक्ष ही जानते है।)

– आईये विचार करे– इस उपरोक्त अंश को पढ़कर क्या यह कहना अनुचित होगा कि स्वयं कबीर ने स्वीकार किया है कि गोरक्ष ही पूर्ण तत्वदृष्टा अवधूत योगी है?

(2) महान आत्मा संत सुन्दर दास जी महाराज की दृष्टि में नाथ योगी (योगी शुक्राईनाथ की गहरीनजर सुन्दर सार ग्रन्थ में)

संत सुन्दर दास जी महाराज एक महान एवं अविरल छवि के साथ हमारी भू भारती पर प्रकाशमान होने वाले एक यशस्वी संत थे उनकी प्रकाष्ठा चहु दिशाओं में फैली हुई है। प्रायः सुना जाता है कि सुन्दर दास जी महाराज ने बहुत ही गहरा विद्याभ्यास किया था तथा शास्त्र दृष्टि से सन्त जी प्रचण्ड विद्वान भी थे। इस प्रकार के महान संत सुंदर दास जी का गुरु गोरक्षनाथ जी के प्रति प्रेम एवं श्रद्धा उन्हीं के ग्रंथों में साफ झलकती हुई प्रतीत होती है। उन्होंने **"सर्वांग योग"** तथा दूसरा **ज्ञान समुद्र** इन दो प्रमुख प्रसिद्ध ग्रंथों में योग साधना तथा हठ योग का काफी मात्रा में विस्तारपूर्वक वर्णन किया है तथा नाथजी महाराज का भी वर्णन कुछ कम नहीं किया – इस प्रत्यक्षता एवं शाश्वतता से कोई भी कह सकता है कि महाज्ञानी संतस्वामी सुन्दर दास जी महाराज हमेशा नाथ सम्प्रदाय के नाथ योगी एवं सिद्धों के प्रति पूर्ण श्रद्धालु एवं महान नाथ भक्तित्व वाले महापुरूष थे उन्होंने हठयोग का विस्तार वर्णन करते हुए हठयोग के प्रसिद्ध प्राचीन नाथ आचार्यों का दीर्घ सूची में वर्णन करते हुए लिखा है कि–

संत सुन्दर दास कृत दोहा

आदिनाथ मत्स्येन्द्र अरू गोरक्ष चर्पट मीन।
काणेरी चौरंग पुनि हठ सुयोग इनि कीन।।

अवश्य प्रमाण हेतु देखिए – सुन्दर सार ग्रन्थ के पृष्ठ नं. 49 पर

अर्थात् - नवनाथों के मूल एवं प्रथम नाथ श्री आदिनाथ जी महाराज, महासिद्ध मत्स्येन्द्र नाथ जी और अमृत तत्व गोरक्षनाथ जी, चर्पटनाथ जी, मीननाथ जी। सिद्ध श्री काणेरी नाथ जी और चन्द्र स्वरुपी महासिद्ध चौरंगी नाथ जी (पूर्ण भगत जी) इत्यादि नाथ सिद्धों के पूर्वाचार्यों ने ही योग एवं हठयोग से सापेक्ष होकर एक्य किया अर्थात संत सुन्दर दास जी महाराज कह रहे हैं कि इन्हीं पूर्ण आचार्यों को ही योगाचार्य कहा जाता है क्योंकि इन्होंने ही योग तथा हठयोग को पूर्ण स्वरूप दिया है अत: ये ही पूर्ण महा योगी हैं।

-संत सुन्दर दास जी

-✤-

संत गुलाल साहब द्वारा गोरक्ष पर टिप्पणी

संत गुलाल साहब द्वारा गुरु गोरक्ष नाथ जी को तत्व ज्ञाताओं की श्रेणी में अहम स्थान तथा श्रेष्ठ मन ध्यानियों में सुसज्जित कर महिमा मण्डित इस प्रकार किया गया है। देखिए-

संत गुलाल साहब की बाणी-

गोरक्ष दत्त वशिष्ट व्यास मुनि, सुखदेव जाति जनाया है।
अनेक साधु संतोष सत्य लिय मनको ध्यान लगाया है।।

अर्थात् - सर्व प्रथम सत्गुरु गोरक्ष नाथ जी महाराज का ही वर्णन करते हुए। प्रस्तुत उपरोक्त कथन में संत ज्ञानी श्री गुलाल साहब कहते है कि गुरु गोरक्षनाथजी, सिद्ध दत्तात्रेय, महर्षि वशिष्ट, व्यास मुनि जी और सुखदेव मुनि इन्हीं तत्वदृष्टाओं (जनों) ने उस सत्य संतोष तत्व को जाना है। इनके बाद ही अनेकों साधु-सन्तों ने तत्व को जानने के लिए अपने मन को ध्यान में लीन किया है। अर्थात् लगाया है।

विशेष - इस उपरोक्त दोहे में तत्वज्ञों की परम्परा में संत गुलाल साहब द्वारा सतगुरु गोरक्षनाथ जी को सर्वप्रथम गिना है तथा भक्त कबीर जी का यहाँ

नामोनिशान तक भी नहीं दिया - जबकि अन्य चार ऋषि-महर्षियों का चयन दोहा कृत संत जी द्वारा भली-भांति किया गया है-

अब स्वयं विचार करे- कि एक नाथ परम्परा से भिन्न संत ने ऐसा लिखा है। तो आखिर क्यो- ? अत: आपको इसका अपनी अन्तात्मा यही जवाब देगी कि लिखा वहीं गया है जो संत जी द्वारा सत्य निरखा गया है और यही सत्य है लेकिन यह कटु वाक्य **सिद्ध शाश्वत** सत्य है।

-✤-

योगी बचनाई नाथ का धर्म प्रेम एवं मतव्य से जन सुसंदेश

सत्गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज के बारे में तथा हमारे सम्पूर्ण संतों के बारे में आजकल कुछ तथाकथित धर्म की आड़ में छिपे-भेड़ियों ने (तथाकथित नकली धर्मगुरुओं ने) मनमानी स्वयं की कपोलकल्पित उल्ट बासियाँ समाज को प्रस्तुत कर समाज को भ्रमित कर सनातन सम्प्रदाय तथा धर्म से मानो प्रतिकृषित किया जा रहा है और धर्मशास्त्रों-ग्रन्थों एवं प्राचीन सिद्धों-संतो-ऋषियों की संस्कृति की धड़ल्ले से खिल्ली उड़ाई जा रही है और अपना ही स्वार्थ उन्हें अपनी जैब तक सीमित रख रहा है। **बस! भाड़ में पड़ो भारतीय संस्कृति** ये ही उनका परदे के पीछे का नारा है। लेकिन इन (तथाकथितों) का साम्राज्य चलना नहीं चाहिए। हमारी जनता एवं धर्म दर्शन से इन बगुले भक्तों को कोई भी सहानुभूति नहीं है। कोई भी हमदर्दी नहीं है। उनका काम ही यह बन गया है कि किसी भी किम्मत पर हिन्दुस्थान से धर्म को कलकिंत कर हिन्दुस्थान के योगी तथा सच्चे धर्मप्रेमी साधुओं को जनता से तथा जनता को ज्ञानी साधुओं से प्रतिकृषित कर हिन्दुत्व की जगह इस्लामियतता की स्थापना हो। सभी इस्लाम को धारण करेंगे तो इन तथाकथितों का पापी साम्राज्य चहूँ और प्रगति करेगा और फिर हिन्दु सनातन शब्द और सनातन संस्कृति सहित

हमारे हिन्दुत्व के सत् सिद्धान्तों के लिए भी जगह नहीं रहेगी।

नाथ सम्प्रदाय सम्पूर्ण लोकों की सर्वाधिक प्राचीन एवं सिद्ध और गहरी नींव की सम्प्रदाय है। जब तक इस सम्प्रदाय का प्रभुत्व हमारी धरणी पर है। मानो कभी भी कोई भी बक भक्ति इस धरणी (मातृभूमि) को परतन्त्र नहीं कर सकती। यह मेरा ही नहीं अपितु कई करोड़ों की अनगिनत संख्या में धरती पर उपस्थित माँ भारती के सपूतों का विश्वास है। कहना चाहूँगा कि कभी कोई - भक्त कबीर दास जी महाराज को अपना निशाना बनाकर बोलता है। कि "भक्त नहीं" कबीर जी तो पूर्ण परमात्मा थे और कबीर जी के अलावा सम्पूर्ण ऋषियों-मुनियों-सिद्धों-महाज्ञानियों एवं सभी देवी-देवताओं को पाखण्ड बताकर अपना सिट्टा सेकने में (यानी अपना उल्लू सीधा करने में) लगे हुए है। इतना ही नहीं हमारे सनातनी प्रतीक, सर्वस्व के रक्षक देवों के देव महादेव की गरिमा को भी गहरी चोट पहुँचाते हुए यहाँ तक कह देते है कि ब्रह्मा-विष्णु-महेश तो बलात्कार से उत्पन्न हुए। इस प्रकार के अल्पसोच प्राणियों का जमीर तो मर ही चुका होता है। उनकी संगत में जाने से अन्य जन भी विवेक को खोकर अपने वजूद को ही नहीं अपितु अपने खून को भी जीते जी मार देते है तथा उनकी प्रकाष्ठा राक्षसी तत्वों में विलीन हो जाती है। ये निष्ठा राष्ट्रीयता के लिए घातक सिद्ध हो सकती है। अतः हमें धर्म परायण रहते हुए हिन्दुत्व की रक्षा करनी है। **एक मता शास्त्र संदेश** है। हमें यही अपनाते हुए समाज एवं राष्ट्रहित में अग्रसर रहना चाहिए।। राष्ट्रहित ही हम सब की कुशल शान है। अपने पथ पर हमें अडिग रहते हुए- सामाजिक अशुद्धियों को जड़ से उखाड़ फेकने का कार्य आजीवन करते रहना होगा तथा देश धर्म पर उठ रहे सवालों के मुँहतोड़ जवाब प्रमाण सहित देते हुए इन कबीरदास एवं महर्षि पतंजलि वाले जो नकली ग्रुप बाजी बनाकर विनाशक प्रचारकों के साथ इस्लामी प्रोपगन्डा फैलाने वालों को बक भक्ति करने वालों को शास्त्रानुसार तथा धर्मानुसार खदेड़ते

हुए। सच्चे राष्ट्र भक्त सनातन पंथी हिन्दु एवं हिन्दुस्थानी होने का प्रमाण देना होगा-

इसी के साथ अपनी कलम को विराम देते हुए कहना चाहूँगा-

- **राष्ट्र धर्म के विश्वासी, हिन्दुत्व के अभिमानी।**
धर्मरक्षा के लिए समर्पित, ज्ञानी और विज्ञानी।।
गीत सदा गाते रहते है वतन हिन्दुस्थान के।
सत्य अर्थ में उन्ननायक हम अपने देश महान के।।

-योगी बचनाईनाथ

संचालक-बाबा चन्द्राईनाथ योगाश्रम

पथरवा, जिला महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)

-✤-

योगी बचनाईनाथ द्वारा भक्त कबीर पर प्रमाणित भ्रमनाशक शास्त्रानुसार शोधन।।

वस्तुत: गहरे पठन-पाठन से मालूम पड़ता है कि प्राय: समाज में जो लौकिक कथाऐं प्रचलित है। वे अधिकाशत: सत्य नहीं होकर बस दंत कथाऐं ही सिद्ध हुई है। क्योंकि गुरु गोरक्ष नाथ जी व भक्त कबीर दास जी दोनों के वास्तविक चित्रण को हम समाज में नाना प्रकार से सुनते है। उदाहरण स्वरूप जैसे प्राय: सुना जाता है कि भक्त कबीर ने गुरु गोरक्षनाथ जी को सत्भक्ति ज्ञान दिया तथा शास्त्रार्थ में गोरक्षनाथ को भक्त कबीर दास जी ने परास्त कर दिया-इत्यादि। ये सब दंत कथाऐं ही है। क्योंकि यह प्रस्तुत पुस्तक **(हमारे गुरुभाई शुक्राईनाथ योगी जी की)** ना जाने कितने ही ऐसे प्रमाण दे रही है। जिनमें यह साबित हो चुका है कि कबीर जी सिर्फ 600 वर्ष पूर्व में ही हुए है। जबकि गोरक्ष नाथ जी को तो स्वयं कबीर दास जी के शिष्य आचार्य गरीबदास जी ने अपने ग्रन्थ **"रत्नसागर"** में **"गोरख गोपी चन्द्र भर्तृहरि। ध्रुव प्रह्लाद सत्युग आचार्य।।"** पृष्ठ

नं.-131 पर दोहा नं. 26 में लिखकर प्रमाणित किया है कि गोरख नाथ जी-गोपीचन्द्र-भर्तृहरी-ध्रूव और प्रह्लाद ये सभी सत्युग के आदि-अनादि आचार्य है तथा संत नामदेव व भक्त कबीर दास सिर्फ कलियुग के ही आचार्य है। वही लिखा है-**नामदेव कबीर कलियुग आचार्य**

इस कथन से स्वयं सिद्ध हो चुका है कि गुरु गोरक्ष ही सर्वप्रधान व सर्वोपरि होते हुए पूर्ण परमात्मा है।। मेरे (योगी बचनाईनाथ) अध्ययन में बहुत सारे ऐसे प्रमाण है। जो कि शाश्वत प्रकट कर रहे है कि गोरक्ष ही सभी के पथ प्रदर्शक है। गुरु मानकर शीश झुकाकर सभी संतों भक्तों ने सिद्धों तथा ऋषिमुनियों ने नाथ जी का ही अनुसरण किया है। प्रमाण हेतु पढ़िए संत आत्मज्ञानी श्री पलटुदास जी महाराज की कुछ निम्नलिखित बाणियाँ - जो कि आचार्य गरीब दास जी द्वारा गुरु गोरक्षनाथ जी पर दिये गये उपरोक्त बयान को भी सत्य साबित करती है।

पलटु बाणी-

ध्रुव प्रह्लाद सनकादि कीन्हा, व्यास और सुकेदवनं।
दत्तात्रेय जड़ भरत कीन्हा, राजा रघु सोई धारन।।
सहित जननी कपिल कीन्हा, जनक अष्टावक्रनं।
श्री मुख से हरि आपु भाखा, सहित उधो अर्जुन।।
सोई नौ योगेश्वर कीन्हा, नानक तुलसी कबीरनं।।

अर्थात् - प्रस्तुत उपयुक्त बाणियाँ संत पलटु दास जी कृत बाणियों से ली गई है। इन बाणियों में संत पलटु दास जी महाराज योग-तत्व पर प्रकाश डालते हुए कह रहे है कि योग तत्व का मत ही आगम-निगम (ज्ञान, वेद न्यायशास्त्र का ज्ञान) के तुल्य है अर्थात् सम्मत है। ध्रुव प्रह्लाद भक्त, सनकादि, महर्षि व्यास, सुकदेव मुनि सिद्ध दत्तात्रेय, जड़ भरत, राजा रघु, कपिल मुनि अपनी माता सहित, जनक, अष्टावक्र आदि ने इसी योग तत्वका ही अनुसरण कर धारण किया है। भगवान कृष्ण ने अपने श्रीमुख अर्थात् मुखार्विन्द से इसी तत्व योग का उपदेश उद्धव (श्रीमद् भागवत

पुराण में) ओर धनुर्धर वीर अर्जुन (गीता में) को दिया था। इस योग तत्व की स्थापना नौ योगेश्वरों (आदिनाथ से गुरु गोरक्ष तक के नवनाथों (योगियों) ने की) द्वारा हुई और नानक दास जी, संत तुलसी दास जी एवं भक्त कबीर दास जी इत्यादि संत भक्त भी इस नवनाथ स्थापित पथ का ही अनुसरण करने वाले है।

आईये विचार करे-इसी प्रस्तुत पुस्तक में पीछे भक्त कबीर दास स्वयं कहते है कि **राम गुण बैलडी रे अवधु गोरक्ष नाथि जाणी।** अर्थात् तत्व रूपी बैल को पूर्णतया जानने में अवधूत योगी गोरक्षनाथ ही समर्थ है और यहाँ संत पलटु दास जी महाराज ने तो पूर्ण ही साबित कर दिया कि तत्व को अर्थात् तत्व योग को स्थापित ही नाथजी ने किया है। अर्थात् योग तत्व की प्राण-प्रतिष्ठा ही नाथों द्वारा हुई है। अत: यह सिद्ध हो चुका है कि भक्त कबीर तक सभी संत एक ही गोरक्ष रूपी छतरी के नीचे आकर नुगरे गुण रूपी दूषित अम्ल वर्षा से निजात पाकर नाथ जी से अमरत्व रूपी आशीर्वाद पाकर अमर पद को प्राप्त किया क्योंकि गोरक्ष ही परमतत्व को धारण एवं स्थापित कराने व करने वाले हैं।

नोट :- ऐसे ही असंख्य उदाहरण है जो कि स्वयं भक्त कबीर दास एवं उन्हीं के अनुयायियों तथा शिष्यों के द्वारा लिखित प्रमाण सिद्ध करते है कि नाथों का सानिध्य एवं अनुसंधान मध्यकालीन सभी संतों के लिए अहम व महत्वपूर्ण प्रेरणादायी दायित्व वाला रहा है। इस कटु सत्य को नाथ सम्प्रदाय से अन्य सभी सम्प्रदायों के पवित्र ग्रन्थों ने बखान किया है यानि स्वीकार किया है।

- योगी गंगाईनाथ
(छोटे गुरु भाई)
हरिद्वार

-✤-

व्यसन (नशाखोरी) मांस भक्षण पर गुरु गोरक्ष का करारा कदम

नाथ जी-परम पूज्य सतगुरु आदि गोरक्ष प्रभु जी ने समाज जागृति हेतु भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में बड़ी भयंकर भूमिका अदा की है तथा जहाँ योगियों को माया से बचाने के लिए तथा दुष्टों को अर्थात धर्मद्रोहियों को धर्म धारण करवाने के लिए व तपस्वियों को योग दिशा की ओर गति देने के लिए, कबीर दास जैसी आत्माओं को महान तत्व (अमृत्व) देने के लिए नाथ जी महाराज का जो प्रभाव स्पष्ट दिखता है वही दूसरी ओर परजीवों का मांस भक्षण करने वालों तथा भांग-धतूरा-अफीम-सुल्फा-गांजा-अम्ल जैसे खतरनाक मादक पदार्थों का सेवन करने वालों पर भी भारी प्रभावशाली व्यंग्य तथा करारे हस्तक्षेप गोरक्ष शास्त्रों में कुछ कम प्राप्त नहीं होते हैं। जरा.....

गोरक्ष शब्दी में देखिए- कुछ अंश पेश करता हूँ।।

1. **धोतरा ना पीवो रे अवधू, भांगि न षाओ रे भाई।**
   गोरष कहे सुण रे अवधू, या काया होयगी पराई।।

अर्थात् - प्रस्तुत शब्दी अंश गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज की शब्दी संग्रह में से लिया गया है। इस अंश में शम्भुजति गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज कहना चाहते है कि हे भाइयों - धतुरा मत पिवो, भांग को मत खाओ यह शरीर (काया) तुम्हारी नहीं है यह तो पराई है इसे व्यसन से बर्बाद मत करो। इस काया को एक दिन यही छोड़कर जाना है।

2. **आफू षाय भांगि भसकावै, तामै अकलि कहाँ तै आवै।**
   चढ़ता पित उतरता बाई, तातै गौरष भागि नषाई।।

अर्थात् - यह गोरक्ष नाथ जी की शब्दी का ही अंश यहाँ लिया गया है। इस प्रस्तुत अधोलिखित वाणी में गुरु गोरक्षनाथ जी कह रहे है कि जो अफीम खाऐ- भांग भसकावे (पिवै) उनमें अक्ल (बुद्धि) कहाँ से

आयेगी उनमें तो रोग ही पनपते रहते है। कभी पित (तीव्रज्वर-खून खोलने वाला रोग) शरीर में चढ़ता (प्रवेश) है कभी वायु रोग सताने लग जाता है। इसलिए गोरक्ष कहते है कि विषैले पदार्थ मादक तत्व मत खाओ।

3. सूकै कण्ठ अरू भूष सन्तापै, दैह बिसर अरू निन्द्रा ब्यापै।
बुद्धि बिन बकै बिकल होई जाय, तातै गोरष भांगि न षायै।।

अर्थात् - अधोलिखित प्रस्तुत वाणी का अंश गुरु गोरक्षनाथ जी की शब्दी से ही लिया गया है। इस अंश में गुरु गोरक्षनाथ जी नशाखोरी को त्याज्य बताते हुए व्यसन पर व्यंग्य कसते है कि भांग का नशा करने से कंठ बार-बार सूक जाते है और भूख भी अति दुख देने लग जाती है। शरीर के अन्दर आलस्य विराजने लग जाता है। बुद्धि नष्ट होने लगती है तथा बिना बुद्धि के व्याकुल होकर प्राणी अपने आप बोलने लग जाता है। इसलिए कभी भी भांग या कोई भी मादक पदार्थ नहीं खाना चाहिए।

4. गोरक्ष वाणी शब्दी-

अवधू मांस भषंत दया धर्म का नास।
मद पिवत तहां प्राण निरास।।
भांगि भषंत ग्यान-ध्यान षोवन्त।
जम दरबारी ते प्राणी रोवन्त।।

अर्थात् - प्रस्तुत शब्दी अंश भी गुरु गोरक्ष नाथ कृत शब्दी वाणी में से ही लिया गया है। इस अंश भाग में नाथ जी महाराज कह रहे है कि हे अवधू परजीवों का मांस खाने से प्राणी में रहम-दयालुता और धर्म सिद्धांतों का प्रवेश नष्ट हो जाता है तथा शराब पीने वालों की तो आत्मा ही उनसे निराश हो जाती है। भांग जैसे मादक पदार्थों से तो ग्यान-ध्यान सब नष्ट हो जाते है।। फिर कर्म विहिन प्राणी मृत्यु को प्राप्त होकर जम (यम) दार जाकर सिर्फ रोता है उसे और कुछ नहीं सुझता। तत्पश्चात इन्सानियत की मौत हो जाती है। वह नर (जीव) जो व्यसन की वासना में लिप्त हो जाता

है उसकी किस्मत उससे रूठ जाती है। उसकी स्वयं की आत्मा भी सड़ जाती है और वक्त पड़ने पर उस जीव को उसकी आत्मा भी साथ नहीं देती। अत: अंत में वह सिर्फ काल का ग्रास बन जाता है। उसे फिर मुक्ति तो कहाँ? मौत भी पूर्णतया नसीब नहीं होती। परिणामस्वरुप वह लख चौरासी की जूण (योनियों) में ठोकर खाने पर मजबूर हो जाता है। जन्मों-जन्मों में दुख ही झेलने पड़ते हैं।

महन्त श्री डॉ. चेताई नाथ जी योगी
महामंत्री, श्री योगी महासभा, हरिद्वार

-✤-

गोरक्ष नाथ जी का अनुसरण करते हुए कबीर दास द्वारा भी व्यसन पर दंभ

गुरु गोरक्ष नाथ जी महाराज का सान्निध्यपात यहाँ प्रत्यक्ष भक्त कबीर दास जी में हर तरह से देखने को मिलता है

।। अमल अहारी का अंग।। में देखिए- पृष्ठ नं. 390
– रतन सागर ग्रन्थ में

कबीर शब्दी-

1. **कबीर भांग तम्माखू धोतरा, आफू और शराब।**
   कबीर कौन करेगा बंदगी, ये तो भये खराब।।

अर्थात् - प्रस्तुत उपर्युक्त अंश गरीब दासी ग्रन्थ रत्नसागर के "अमल आहारी का अंग" दोहा नं. 3 से लिया गया है। जिसमें भक्त कबीर दास जी स्वयं व्यंसन पर गोरक्षनाथानुसार दंभ भरते हुए कह रहे है कि भांग-तम्बाकू, धतूरा, अफीम और शराब इन मादक पदार्थों का हे मनुष्य तुम सेवन करोगे तो ये सब तो विनाशक पदार्थ है। तुम नष्ट हो जाओगे- फिर उस परमात्मा की बंदगी (भक्ति) कौन करेगा-

2. **कबीर भांग भरवे बल बुद्धि को।**

आफू अहमक सोय।
दोय अमल औगुण कहयो।
ग्यानवंत सुनि लोय।।

वही पृष्ठ नं. 390

दोहा नं. 5

3. अमुल आहारी आत्मा, कबहूँ ना पावै पार।
कहै कबीर पुकार के, त्यागो ताहि विचार।।

वही - दोहा नं. 8

4. कबीर औगुण कहूँ शराब का,
ज्ञानवंत सुनिय लोय।
मानुष सौ पशुआ करै,
दूब गांठ का देय।।

वही पृष्ठ 390

दोहा नं. 6

-✤-

मठाधीश्वर पीर योगी श्री चान्दनाथ जी महाराज की दिव्य वाणी में शास्त्र मिलान

जैसा कि मैं (लेखक -योगी शुक्राईनाथ) इस प्रस्तुत पुस्तक में पहले भी लिख चुका हूँ कि मुझे महाराज श्री चांदनाथ जी योगी का उपदेश- मेरे अनुग्रह तथा प्रार्थना करने पर प्राप्त हुआ उन्होंने कहा कि बेटे (निराकार एवं साकार दोनों सताओं की ओर संकेत करते हुए) "वौ परम् तत्व स्वयं ही गुरु 'माता' पिता से सर्व श्रेय लेता है।" अर्थात् "वौ आपै गुरु और आपै चेला है" इतना बखूबी बखान करते हुए। मुझे प्राचीन शास्त्रोक्त अध्ययन करने की प्रेरणा देते हुए। कहाँ कि तुम्हारे गुरु ही तुम्हें सर्वोत्तम ज्ञान से अवगत करवायेगे तथा गुरुत्व से आगे सिर्फ अंधेरा ही तुम्हें प्राप्त होगा। (कहने का भाव था कि अपने गुरु की आज्ञानुसार एवं मार्ग

दर्शनानुसार चलने पर तुम्हारी सर्वस्व शंकाओं का समाधान हो जायेगा तथा गुरु कृपा से प्रतिकृषित होने पर अन्य मार्गों में दुख-कष्ट शंकाऐ-भय, क्रोध, अहंकार, लिप्सा एवं अनेक ऐसे घटक तुम्हें मिलेगे जो तुम्हें अज्ञानता के सिवाय अन्य कुछ भी नहीं दे सकते। अत: गुरु आज्ञा में रहने से तुम्हे सब कुछ अपने भीतर (हृदय) से प्रत्यक्ष प्राप्त होने लगेगा।) इस प्रकार महंत जी द्वारा मुझे अन्य भी बहुत से उपदेश दिए गये और अध्ययन करने पर मुझे महाराज जी के सभी उपदेश हमारी अचर संस्कृति को बखान करने वाले ग्रन्थ, शास्त्रों में मेल खाते हुए नजर आए। अत: पृष्ठाभाव में मै आपको यहाँ महंत जी के एक अनमोल प्रवचन का पवित्र ग्रन्थ "गुरु ग्रन्थ साहिब" में मिलान कराता हुआ इस विषय पर साफ निर्लेप स्पष्टीकरण हाजिर करता हूँ।। जरा नीचे गौर से देखिए-

महंत चांदनाथ जी का एक उपदेश - परमात्मा के विषय में लेखक द्वारा पूछने पर -

1. वो आपै गुरु और आपै चेला है।
आपै साकार आपै निराकार है।

(दिनांक - 29 अप्रैल 2013 को सायं 5:30 बजे)

(बाबा मस्तनाथ मठ
अस्थल बोहर, रोहतक हरियाणा में)

इस उपदेश का शास्त्रों में अंनेक जगह प्रमाण मुझे मिला-
लेकिन देखिए सिर्फ गुरु ग्रन्थ साहिब में।।

1 आपै गुरु चेला है आपै आपै हरि।
- गुरु ग्रन्थ साहिब के पृष्ठ नं. - 669 पर
नीचे से- चौथी लाईन में

2 आपै दिखावै आपै देखै।।

- वही पृष्ठ - 686 पर/ उपर से 14वी लाईन म

3 आपै करि वेखै सिरी सिरी लेखे

आपै सुरति बुझाई।।

– आपै उपाए आपै समाये।।

– वही पृष्ठ संख्या – 688/ नीचे से 9वीं व 13वीं लाईन में।

4 आपि (आपै) करता आपि (आपै) भुगता।।

– वही पृष्ठ – 691 पर

– ऊपर से 13वीं लाईन म

5 आपै शब्दु आपै नीसानु, आपै सुरता आपै जानु।।

– वही पृष्ठ – 795 पर।

– नीचे से प्रथम लाईन में।

6 आपै परखे आपै चलाऐ।।

आपै सत्गुरु, सबदु है आपै।।

आपै गुरु चेला है आपै।।

आपै गुणी निधाना।।

– वही पृष्ठ – 796 पर

– ऊपर से 8वीं, 12वीं, 18वीं लाईनों में

7 आपै ठाकरू आपै सेवकु, सभु आपै आपि गोविन्दे।।

8 आपै ही मदंरू आप ही सेवा।।

आप ही पुजारी आप ही देवा।।

आप ही बचुनु आप ही करना।

आप ही गुप्त आप ही प्रगटना।।

आपे अविगतु आप संगि रचना।।

(7) वही पृष्ठ – 800 पर नीचे से तीसरी लाईन में

(8) वही पृष्ठ – 903 पर ऊपर से 16, 17, 20, 22, 23 तक लाईनों में–

इस प्रकार इन्हीं पृष्ठों पर अन्यत्र भी इसी प्रकार से परमात्मा परब्रह्म शम्भुजति गोरक्ष नाथ योगेश्वर के सम्बन्ध में आदरणीय एवं नाथ सम्प्रदाय

के वर्तमान शीर्ष योगी महंत श्री चांदनाथ जी महाराज (वर्तमान लोकसभा सांसद) की वाणी का मिलान सही सक्रिय गति को प्राप्त होता हुआ प्रत्यक्ष दिखाई देता है तथा इसी प्रकार पवित्र श्री मद् भागवत गीता के भी काफी प्रमाण है जो कि मेरे पूज्य श्रद्धेय गुरुजी एवं बाबा मस्तनाथ मठ के मठाधीश्वर महंत जी महाराज के उपदेशों से हूबहू मेल खाते नजर आते है।।

-✤-

मूर्तिपूजा को झुठलाना किसी के लिए भी संभव नहीं

- योगी शुक्राई नाथ

मूर्ति पूजा हमारे सनातन धर्म में प्राचीन संस्कृति का अहम् प्रतीक रहा है तथा यह पूर्व से ही प्रचलित प्रथा है। जिसको झूठलाना मूर्खता ही सिद्ध होगा- क्योंकि "मूर्ति पूजा के विषय में मैं (योगी शुक्राईनाथ) आपको इस प्रस्तुत पुस्तक से पूर्व में प्रकाशित एवं लिखित लेखनी" "अतीत का प्रतीक" नामक पुस्तक के पृष्ठ नं. 68 से 84 तक "**मुख्य बिन्दु-संस्कृति धर्म में विचार मंथन एवं साकार निराकार का प्रमाण**" में बहुतायात प्रमाण दे चुका हूँ तथा अब यहाँ देखिए कुछ ऐसे प्रमाण जिनको पढ़कर आप दंग से रह जाएंगे और याद रहे- कि यहां ऐसे प्रमाण भी आपको मुख्यत: दिये जा रहे है कि जो लोग स्वयं पाषाण पूजक है तथा सनातन धर्म को ही कोसने में दिन रात लगे रहते है। उनकी वास्तविकता प्रमाण सहित प्रत्यक्ष-

- सर्वप्रथम हम आपको उन प्रसिद्ध हस्तियों से अवगत करवाऐगे जिन्होंने मूर्ति पूजा से अपनी अंतरात्मा को झकझोरा तथा अपने लक्ष्य तक पहुँचने में सफलता अर्जित की-

1. **माता पार्वती द्वारा मूर्तिपूजा** - सम्पूर्ण सृष्टि का सबसे महान एवं

महत्व पूर्ण उदाहरण इसे भला कौन नहीं जानता- कि भगवान गंगाधर, पशुपतिनाथ शिव को पूर्णतया पाने हेतु माता पार्वती को कितने पापड़ बेलने पड़े। माता पार्वती द्वारा शिव तत्व को पाने के लिए मूर्ति पूजा (शिवलिंग पूजा) के साथ-साथ लिंग स्थापना भी करनी पड़ी। जैसे - अपुलिंग - वायुलिंग तथा अग्निलिंग एवं इस प्रकार से बार-बार पाषाण निर्मित लिंगों की प्राण प्रतिष्ठा एवं पूजन माता पार्वती द्वारा किया गया और यहाँ तक भी माता पार्वती द्वारा परिश्रम किया गया कि उन्होंने भगवान शिव से विवाह रचाने का ध्येय कर मिट्टी की शिवलिंगों का स्वयं निर्माण कर लिंग पूजा की बार-बार पुनरावर्ति की। अर्थात् माता पार्वती द्वारा पाषाण पूजा से ही शिव को अर्थात् अपने लक्ष्य को प्राप्त किया गया।। इस सम्बन्ध में अनेकों ऐसे बड़े प्रमाण विद्यमान है। जोकि पाषाण पूजा को सत्य सिद्ध करते है।। जैसे

(i) हिमालय पर्वत - प्रायः भगवान शिव का निवास स्थान माना जाने वाला यह पर्वत सम्पूर्ण सृष्टि के लिए एक दीर्घ उदाहरण है। इस पर्वत की आकृति ही बिल्कुल शिवलिंग के समकक्ष ही है। अर्थात् यह पर्वत अपने आप शिवलिंगनुमा ही बना हुआ विशालकाय पर्वत है। मानो यह विशाल शिवलिंग ही है।

(ii) अमरनाथ धाम - यह अमरनाथ धाम लोक विख्यात है तथा इसकी ख्याति से कोई भी अनभिज्ञ नहीं है। यहाँ अपने आप बर्फ से शिवलिंग बनना शिवत्व का दीर्घ उदाहरण है। क्योंकि यहाँ सिर्फ शिवलिंग ही क्यों बनता है। यही रहस्यमयी प्रश्न सभी शंकाओं का समाधान करने वाले उत्तर का जन्मदाता है।

2. रावण द्वारा मूर्ति पूजा - लंकापति रावण जहां तक अभिमान का पूतला था। उससे कही अधिक वह श्रेष्ठ विद्वानों की श्रेणी में भी गिना जाता है। रावण को ज्ञात था कि उसने यदि अभिमान नहीं किया तो उसे अमरतत्व अर्थात् मोक्ष मार्ग नहीं मिलेगा - देखिए प्रस्तुत चौपाई-

खर दूषण त्रिशिराकर घाता। मुनि दशशीश जरा सब गाता।।7।।
भयो शोचवश नहिं विश्रामा। बीतहिं पल मानों शतयामा।।8।।

खरदूषण और त्रिशिरा का मरण सुनकर रावण के शरीर में क्रोधाग्नि जल उठी।।7।। बड़े शोच में हो गया शांति नहीं, एक पल सौ पहर के समान बीतने लगा (यह क्षेपक है)।।8।।

दोहा-शूर्पणखहि समुझायकरि, बल बोलेसि बहु भाँति।
गयउ भवन अति शोच वश, नींद परै नहिं राति।।36।।

शूपर्णखा को समझाकर अपना बल बहुत भांति से बखान किया और अधिक शोच में होकर घर/महल गया परन्तु रात्रि में नींद नहीं आती।।36।।

सुर नर असुर नाग खगमाहीं। मोरे अनुचर सम कोउ नाहीं।।1।।
खर दूषण मोसम बलवन्ता। तिनहिको मारै बिनु भगवन्ता।।2।।

देवता, मनुष्य, नाग और पक्षियों में कोई मेरे अनुचरों का भी सामना नहीं कर सकता।।1।। खर दूषण तो मेरे समान बली हैं, उनको बिना भगवान् के कोई नहीं मार सकता।।2।।

सुररंजन भञ्जन महि-भारा। जौ जगदीश लीन अवतारा।।3।।
तो मैं जाय बैर हठि करऊँ। प्रभुशर प्राण तजे भव तरऊँ।।4।।

देवताओं को आनन्द देने और पृथ्वी का भार दूर करने को जगदीश्वर ने अवतार लिया है। यहीं 'भगवंत' पाठ है।।3।। तो मैं जाकर हठपूर्वक उनसे बैर करूँगा और प्रभु के बाण से प्राण छोड़ भव तर जाऊँगा।।4।। इसी गतव्य से दशानन रावण ने अभिमान से श्री रामचन्द्र जी को चुनौति पेश की और माता सीता जी का हरण किया। रावण भी मूर्ति पूजक था। शिवलिंग की पूजा कर उसने भगवान शिव की अनुभूति प्राप्त की तथा एक छोटा स्वर्ण शिवलिंग हमेशा अपने साथ भी रखता था इतिहास इस बात का गवाह है। पाषाण पूजा से रावण ने शिव से बहुतायात वरदान भी प्राप्त किये और शिव का अनन्य भक्त एवं उपासक था बिल्व पत्र से लिंग पूजा करते हुए। रावण ने शिव तांडव स्तोत्र की रचना भी की। रावण द्वारा सोने की

शिवलिंग साथ रखना व उसकी नियमित पूजा करना भी वाल्मीकि रामायण के उत्तरपर्व में वर्णित है अर्थात रामायण इसका प्रमाण है।

3. मर्यादा पुरूषोत्तम श्री राम द्वारा मूर्ति पूजा - श्री दशरथ पुत्र मर्यादा पुरूषोत्तम राजा राम चन्द्र जी भी अतिशय मूर्तिपूजक थे। क्योंकि रामेश्वरम् (मद्रास) जो कि एक दिव्यलिंगों की गणना में गिना जाता है और ये बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक है। इस शिव ज्योर्तिलिंग की प्राण प्रतिष्ठा भगवान श्री राम द्वारा ही की गई थी यह इस बात का प्रमाण है कि श्री रामचन्द्र जी ने भी पाषाण में दिव्य परम तत्व को देखा है।। अर्थात् महसूस किया है तथा **भक्त कवि कबीर दास जी ने भी इन्हीं मूर्ति पूजक राजा राम अर्थात् इन्हीं दशरथ पुत्र श्री राम की उपासना अर्थात् भक्ति की थी।** क्योंकि **भक्त कबीर द्वारा अपने पदों-दोहावली व रचनाओं में कई जगह राम तथा राजा राम व रघुराई- रघुनाथ इस प्रकार के शब्दों का समावेश किया गया है।** और ये सब शब्द सिर्फ दशरथ पुत्र श्री राम के लिए ही प्रयुक्त होने वाले शब्द है। कबीर जी के बाद संत पीपा व स्वयं रामानन्द जी के शिष्य व भक्त कबीर दास जी के गुरुभाई सन्त रवीदास (रैदास) जी - संत नामदेव- सहित सभी मध्यकालीन संत समूह के द्वारा रचित ग्रन्थों एवं उनकी शब्दी-पद रूपी समस्त कृतियों से यह सिद्ध होता है कि ये सब मूर्तिपूजक राजा राम के ही उपासक थे और राजा रामचन्द्र जी अपने शिष्य हनुमान जी सहित प्रभु श्री गुरु गोरक्ष नाथ जी के उपासक एवं शिवांश थे। राम जी द्वारा "रामेश्वरम्" नामक स्थापित शिवलिंग सेतुबन्द में अभी तक रामचन्द्र जी के कृत्यों का प्रतीक है यह वृतांत वाल्मीकि रामायण के युद्ध पर्व-125 में वर्णित है। लंका कांड में शिवलिंग स्थापना का प्रमाण देखिए चौपाई द्वारा-

जो रामेश्वर दर्शन करिहैं। सो तनु तजि मम धाम सिधरिहैं।।1।।
जो गङ्गाजल आनि चढ़ाइहि। सो सायुज्य मुक्ति नर पाइहि।।2।।

श्री राम द्वारा स्थापित रामेश्वरम् शिवलिंग में श्री राम का जन संदेश

सुनि कपीश बहु दूत पठाये। मुनिवर निकर बोलि लइ आये।।5।।
लिङ्ग थापि विधिवत करि पूजा। शिव समान प्रिय मोहिं न दूजा।।6।।

4. महाभारत में मूर्तिपूजा – एकलव्य नामक भील की मूर्तिपूजा का वर्णन भला कौन नहीं जानता – एकलव्य ने तो मिट्टी से निर्मित गुरु द्रोणाचार्य की मूर्ति को ही अपना गुरु मानकर द्रोण विद्या को प्राप्त किया तथा मूर्ति को गुरुत्व सम्मान से पूजित किया व मूर्ति अर्थात् जडोउपासना से ही अर्जुन भी अधिक तीरंदाजी में पारंगत हुए।। इस स्थिति का प्रमाण महाभारत के आदि पर्व 133 में देखे– अतः इस प्रकार मूर्ति पूजा को झूठलाना या उस पर व्यंग्य कसना किसी भंयकर क्षति से कम नहीं होगा।।

5. दूसरा महाभारत का सच – भगवान श्री कृष्ण द्वारा हरियाणा प्रदेश के कुरूक्षेत्र के रण में उतरने से पूर्व कुरूक्षेत्र की भूमि पर शिवलिंग की स्थापना कर स्वयं ने योद्धा अर्जुन सहित पूजा की। वह शिवलिंग आज भी विद्यमान है एवं मूर्ति पूजक श्री कृष्ण का प्रत्यक्ष प्रतीक है।

6. मूर्तिपूजक नारद जी द्वारा ध्रुव को मूर्तिपूजा का उपदेश – यह संवाद कटु सत्य है लेकिन हमारे सनातन अतीत का शाश्वत सत्य प्रतीक भी है।। जरा देखिए इतिहास के पन्नों में –यह सम्पूर्ण सद्ज्ञान हमारे पवित्र श्रीमद्भागवत पुराण के अंतर्गत मिलता है। जो कि वर्तमान के समय से हजारों वर्षों पूर्व का सत्य लेख है। श्रीमद्भागवत कथा के अंतर्गत यह प्रमाण मिलता है कि ध्रुव ऋषि बाल्य अवस्था से ही परमात्मा की खोज हेतु घर से वन की ओर प्रस्थान कर गये थे और मेरे गुरुदेव **(महंत श्री चेताई नाथ जी महाराज)** मुझे बताते है कि ध्रुव ने काफी वर्षों तक एक पैर पर खड़े रहकर तपस्या की तथा उस दौरान इन्द्र आदि देवताओं को लगा कि ये बालक हमारे सिहांसन को पाने हेतु इतना कठिन तप कर रहा है। लेकिन ब्रह्मा जी के समक्ष इस वार्ता को रखने पर ब्रह्माजी ने नारद ऋषि को आदेश दिया कि उक्त सत्य स्थिति का पता लगाया जाए। अतः नारद जी ने ध्रुव के पास जाकर उनसे उनके लक्ष्य के बारे में वार्ता की तो

पाया कि ये बालक ध्रुव किसी राज सिंहासन के लिए नहीं अपितु शून्य भेदी परमपिता परब्रह्म के दर्शन एवं आत्म कल्याण के लिए प्रयत्नशील है। बालक ध्रुव की यह मनोकामना प्रकट होने पर नारद ऋषि द्वारा बालक ध्रुव को कुछ मन्त्र जाप एवं मूर्ति पूजा के विषय में उपदेश दिये गये। तदोपरान्त बालक ध्रुव को इसी पूजन उपदेश से पारब्रह्म (शून्य मण्डल में स्थित योगी) परमेश्वर के दर्शन हुए-तथा अमरत्व प्राप्त हुआ - आज भी अन्तरिक्ष में मूर्ति पूजक बालक ध्रुव हमेशा के लिए ध्रुव तारा बनकर स्थापित है। इस सत्य को कोई नहीं झूठला सकता इसका दूसरा प्रमाण देखिए - श्रीमद्भागवत कथा के सं. 4 तथा अ. 8, म. 71 में।।

नोट - इस प्रकार हमारे आदर्शों द्वारा की गई मूर्ति पूजा तथा उनके मूर्तिपूजा से फलीभूत होने के ऐसे बहुत से प्रमाण मैं दे सकता हूँ। अत: यही कारण है कि हम सब सनातन धर्मी मूर्तिपूजा को स्वीकार भी करते है और स्वयं मूर्तिपूजक एवं निराकार वाद दोनों ही सताओं का समर्थन भी करते है। लेकिन जरा यहां ध्यान देने वाली बात यह है। कि हमारा तो हमने प्रमाण सहित स्पष्टीकरण कर दिया - लेकिन अब मैं आपको यहाँ ये बताने जा रहा हूँ कि जो सनातन से अन्य सभी धर्मावलम्बी है। वे हमारे सनातन धर्म का घोर विरोध करते हुए बिल्कुल भी नहीं हिचकिचाते। अत: हम सभी सनातन पंथियों के लिये ऊर्जामय एवं अंतर्रात्मा की दुर्बलता को नष्ट करने वाले तथा विरोधी तत्वों का पर्दाफास करने वाले कुछ अहम उदाहरण निम्नलिखित प्रश्नोत्तरी से यहाँ पेश कर रहा हूँ। इनसे आप पाठकगण विचार करे कि ये पाषाण पूजा का विरोध करने वाले क्या खुद अपने अंदर झाँकते है? और क्या ये स्वयं मूर्ति पूजा नहीं करते? तीसरा प्रश्न - क्या ये सब प्रश्नोत्तरी के प्रश्नोत्तर मूर्ति पूजा का बखूबी (प्रमाण सहित) बखान नहीं कर रहे?

प्रश्नोत्तरी दो गुरु भाईयों की

(पढ़िए निम्नलिखित योगी गंगाईनाथ के प्रश्नों का योगी शुक्राई नाथ द्वारा प्रमाण सहित उत्तर)

प्रश्न – 1 क्या ! मूर्तिपूजा का वेदों में भी वर्णन है।

उत्तर – हाँ ! यह सत्य है कि वेदों में मूर्तिपूजा का कई जगह जिक्र ही नहीं अपितु ऋषियों द्वारा प्रतिमा पूजन कर प्रार्थना भी की गई है।

प्रश्न – 2 कौन–कौन से वेद में यह सब आपकी दृष्टि में आया हैं ?

उत्तर – (शुक्राईनाथ द्वारा उत्तर) मैंने अभी तक ऋग्वेद संहिता के मण्डल व यजुर्वेद तथा अथर्ववेद इत्यादि में कई मंत्रों में पाषाण पूजा के सम्बन्ध में जाना है, अध्ययन किया है।

प्रश्न – 3 क्या वेदों के अलावा किन्हीं अन्य ग्रन्थ शास्त्रों में भी आप मूर्ति पूजा को प्रमाणित कर सकते है ?

उत्तर – जी हाँ ! इस प्रस्तुत प्रश्नोत्तरी से पूर्व में मैंने एक पुस्तक लिखी थी जिसका नाम **अतीत का प्रतीक** है। में भी काफी प्रमाण आपको मिलेगे तथा यहाँ आपको बताना चाहुंगा कि – वेदों से अलावा आपको कई ग्रन्थों में मूर्ति पूजा का सत्य सिद्ध होना प्रमाण मिलेगा जैसे कुछ ग्रन्थ मुझे और स्मरण हुवे है। वो है **तैतीरिय प्रपाठक, श्रीमद्भागवत महापुराण वाल्मीकि रामायण, महाभारत, रावण की कृतियां व अन्य भी बहुत सारे ऐसे ग्रन्थ हैं जो कि मूर्ति पूजा को प्रमाणित करते हैं।**

प्रश्न – 4 क्या आप स्वयं पाषाण पूजा मानते है ? अगर हाँ तो क्यों ? और नहीं तो क्यों नहीं ? संक्षिप्त में उत्तर दीजिए।

उत्तर – हाँ! मैं पाषाण पूजा को मानता हूँ और इसलिए मानता हूँ क्योंकि मैं हमारे शिरोधार्य धर्म–शास्त्रों तथा सनातन संस्कृति से बाहर नहीं हूँ तथा इनका तहदिल से सम्मान करता हूँ।।

प्रश्न – 5 क्या आप बता सकते है कि यजुर्वेद के कौन से मंत्र में मूर्ति पूजा का विधान है तथा वह मंत्र क्या है ? भावार्थ सहित कोई एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर – जी हाँ ! यजुर्वेद के अध्याय नं. 15 तथा श्लोक नं. 65 इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है। तथा मंत्र है–

।। **सहस्त्रस्य प्रतिमा असि**।। भावार्थ – इस मंत्र में ऋषि परमात्मा से मूर्ति के समक्ष कह रहे है कि हे परमेश्वर आप सहस्त्रों अर्थात् हजारों की प्रतिमा यानी मूर्ति हो–

प्रश्न – 6 आप हमें मूर्ति पूजा स्पष्ट करने वाला कोई ऐसा मंत्र सहित हिन्दी अर्थ बताइए जो कि अथर्ववेद से सम्बन्धित हो? प्रमाण सहित।।

उत्तर – संस्कृत मंत्र – अथर्ववेद से – **मुखाय ते पशुपते। यानि चक्षुंषि ते भव, त्वचे रूपाय संदृशे प्रतीचीनाय ते नमः। अंगेभ्यस्त उदराय जिह्वाय आस्याय ते दद्भ्यो गन्धाय ते नम।।**

भावार्थ – हे पशुपति शिव! आपके मुख को, तीन नेत्रों को, त्वचा को, रूप को, अंगों को, पेट को, दांतों को और नासिका को नमस्कार हो (प्रणाम हो)

(इससे साफ सिद्ध हो रहा है कि प्रतिमा के ही एक–एक अंग प्रत्यंग को ऋषि नतमस्तक हो रहे है।।) अतः यह प्रतिमा का ही पूजन है।

देखिए – अथर्ववेद काण्ड नं. 11
अनुवाक नं. 2 मंत्र नं. 5 और 6 में

प्रश्न – 7 क्या आप अथर्ववेद से ही अन्य कोई दो और ऐसे प्रमाण दे सकते है जो कि जड़ोपासना के प्रतीक हो–?

उत्तर – जी हाँ! बिल्कुल दे सकता हूँ। जरा देखे–

अथर्ववेद काण्ड–2, अनुवाक नं. 13, मंत्र नं. 4 में– तथा अथर्ववेद काण्ड –16, अनु. नं. 2, मंत्र नं. 6 में–

क्रमश – (I) ऐहास्मान मातिष्ठाश्मा भवतु ते तनुः।
कृण्वंतु विश्वेदेवा आयुष्टे शरदः शतम्।।

अर्थात् – हे परमपिता परमेश्वर! तुम आकर इस पाषाण में विराजमान हो! यह आपका शरीर बन जावै और सभी देवता सैकड़ों वर्ष तक इसमें (मूर्ति की ओर संकेत) आपकी दिव्यता को स्थिर करे।।

(II) ऋषिणां प्रस्तरोऽसि नमोऽस्तु देवाय प्रस्तराय।।

अर्थात् – हे प्रतिमा! तू ऋषियों का पाषाण है। तुझ दिव्य पाषाण के लिए

नमस्कार हो।।

(यहाँ पाषाण (मूर्ति) को नमन किया गया है।)

प्रश्न - 8 क्या इसी उपरोक्त आधार पर एक उदाहरण स्वरूप **प्रमाण सहित मंत्र ऋग्वेद संहिता के किसी भी मण्डल** का बता सकते है?

उत्तर - जी हाँ! एक नहीं बल्कि इस विषय पर काफी मन्त्र प्रमाण है। लेकिन आपने एक मंत्र की मांग की है। अतः देखिए ऋग्वेद म.-7, सूक्त 86 मंत्र - 7 का निम्नलिखित मंत्र-

वैदिक मंत्र - **अरं दासो न मीव्व्हुषे कराण्यहं देवाय भूर्णयेनागाः।**
अचेतयदचितो देवो अर्यो गृत्सं राये कवितरो जुनाति।।

अर्थात् - मैं निषिद्धाचरण से वर्जित भक्त किसी दास की तरह असीम फल की प्राप्ति के लिए चतुर्विध-पुरूषार्थ दाता परमेश्वर को फूल आदि से अलंकृत करता हूँ।। ताकि वे मुझ पर प्रसन्न हो! **ये देव सर्वस्वामी होकर अपने संनिधान से पाषाण (पत्थर) को भी पूजनीय बना देते हैं,** यही कारण है कि बहुत से पुरूष ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए प्राणनादिकर्ता उस परमेश्वर को ही पूजन आदि से ही प्रसन्न करते है, क्षुद्रफलप्रद राजा आदि की परवाह नहीं करते।।

-यहाँ ध्यान देने वाली बात ये है कि इस उपरोक्त मंत्र में मंत्र वक्ता ऋषि जी किसे अलंकृत करते हुये तथा कौन से पाषाण की चर्चा कर रहे हैं? इस प्रश्न का उत्तर ही मूर्ति पूजा का प्रतीक है। इसके उत्तर में स्पष्ट है कि ऋषि जी देवमूर्ति (पाषाण निर्मित माध्यम) को ही अलंकृत (पुष्प आदि से सुसज्जित) कर रहे हैं तथा उसी पाषाण निर्मित मूर्ति के समकक्ष ही प्रार्थना कर रहे हैं कि इस पाषाण (मूर्ति) को भी पूजनीय बना देते हैं। अतः मूर्ति पूजा स्पष्ट है।

नोट-बुद्धि पर जोर देकर ही हिन्दी अर्थ समझने का प्रयत्न करें।

प्रश्न - 9 क्या वेदों के पश्चात आप बता सकते है कि भक्त कबीर के शिष्य नानक व उनके पंथी समुदाय भी मूर्ति पूजक है?

- अगर हाँ तो कैसे-।

– पूर्ण विवरण बताइए

उत्तर – जी हाँ ! भक्त कबीर दास जी का तो मैं पहले ही बता चुका हूँ। अब नानक दास जी के पंथी अर्थात् सिक्ख धर्मावलम्बी। ये भी मूर्तिपूजक है। इनका सबसे बड़ा उदाहरण एवं प्रमाण तो मुझे (शुक्राईनाथ) हरिद्वार में मिला – हरिद्वार में गंगा किनारे सिक्खों का बहुत प्राचीन स्थान है और वहाँ गुरु नानक दास जी की अति प्राचीन पाषाण निर्मित मूर्ति आज भी विद्यमान है तथा वहाँ उस मूर्ति की बड़े ही धूम–धाम से सिक्ख भाईयों का समुदाय पूजा–अर्चना करता है। उस जगह का नाम नानक दास जी के नाम पर ही रखा हुआ है अर्थात् ''नानक बाड़ा'' नाम से सुविख्यात है।

दूसरा प्रमाण – स्यालकोट में बेरी साहिब, अमृत सर में टाली साहिब, तथा पंजाब क्षेत्र में कही मंजी साहिब तो कही रीठा साहिब मानकर वृक्षों तक की पूजा भी करते है। वृक्षों पर कपड़ों के खोल लपेटते है। आस्था से तथा **श्रद्धा पूर्वक एक झण्डा साहिब खड़ा रखते हैं।** उस पर भी कपड़े का खोल चढ़ाया जाता है। अपने ग्रन्थों पर रेशमी कपड़ा लपेटते है तथा चंवर डोलाते है। इस तरह सैकड़ो तरह की जड़ोपासना करते है और ये हम भी स्वीकार करते हैं।

प्रश्न – 10 मुस्लिम धर्म की जड़ोपासना पर प्रकाश डालते हुए ! बताइये कि क्या मुस्लमान भी मूर्ति पूजा करते है?

उत्तर – देखिए ! मूर्तिपूजा अर्थात जड़ोपासना! इससे कोई भी धर्म या मत पथ–सम्प्रदाय वचिंत नहीं है मुस्लमान तो बहुत ज्यादा मात्रा में इसे करते है। जैसे – सिर की **टोपी पर आधे चाँद की मूर्ति** लगाना घरों एवं मशीनरियों पर **786 लिखकर इसे नमन करना** (पवित्र मानना), मक्का मदीना में जाकर ''**संगे असबद**'' नामक काले पत्थर को चूमना। उसको नमन करना। **जो कि कभी मक्केश्वर (महाकालेश्वर) महादेव था।** नमाज पढ़ते वक्त **पश्चिम दिशा में ही मुँह कर के बैठना, मोहर्म ताजिया निकालना** इत्यादि ये सब शास्त्र की दृष्टि से देखे तो केवल जड़ोपासना

के अन्तर्गत ही आता है। अर्थात् जड़ोपासना ही है तथा मस्जिद में जाकर पूरे लम्बे लेटकर आदाब अर्ज भी करते है। इस प्रकार इनके बहुत से जडोपासना के प्रतीकात्मक प्रतीक हैं।

प्रश्न - **11** ईसाई धर्म के बारे में आपका क्या विचार है?

उत्तर - **ईसाई मत के लोग चर्च का निर्माण करते है** तथा चर्चों में **यशुमसीह और मरियम की मूर्तियाँ रखते है।** उनकी **पूजा भी अपने ढंग से करते है और सभी ईसाई क्रास (✝) की भी पूजा करते है।**

यह मूर्ति पूजा ही है तथा अपने धर्म प्रचार हेतु सैकड़ो अनहोने ढकोसले भी करते रहते है।। हिन्दुओं पर इनकी भोहे हमेशा टेडी ही रहती है। गले में डोरी, गंडे, ताबीज तथा क्रास (✝) भी लटकाते हैं।

प्रश्न - **12** ईसाईयों के बाद आपका आर्य समाज पर क्या विचार है। क्या ये भी जड़ोपासना करते है?

उत्तर - **जी हाँ !** जड़ोपासना से आर्य समाज भी वंचित नहीं है। जैसे - उदाहरण स्वरूप देखिए-

(1) पृथ्वी को प्रतिदिन चन्दन अक्षत से पूजना।

(2) चाँद को अर्ध्य देना।

(3) रीढ की हड्डी में मन को केन्द्रित करना।

(4) स्वामी दयानन्द जी की प्रतिमा का अपमान करने पर सहनशक्ति खोना।

(5) कुशा, पटेला, अज्जंन, छाता, लाठी इत्यादि की प्रार्थना करना।

(6) सबसे बड़ा प्रमाण इनका मूर्तिपूजक होने का यह है कि गत पिछले दिनों में अर्थात् 10 नवम्बर 2013 को स्वामी विवेकानन्द आर्य के निवास स्थान **कोलकाता पहुँच कर स्वामी जी की मूर्ति को वेस्टइंडीज के पूर्व क्रिकेटर ब्रायन लारा (ब्रेन लारा) ने हाथ जोड़कर नमस्कार किया।** उस दौरान स्वामीजी की मूर्ति पर पुष्प भी चढ़ाए एवं फूल माला भी मूर्ति को पहनाई उस वक्त वहाँ आर्य समाज के बहुत से लोग उपस्थित

थे लेकिन **किसी भी व्यक्ति ने इस मूर्ति पूजा का विरोध नहीं किया।** यह इस बात का प्रमाण है। कि आर्य समाज भी पर्दे के पीछे तथा गुप्त रुप से जड़ोपासना करता है। इस प्रकार आर्य समाजी भी अपने पर्व जैसे स्वामी दयानन्द जयन्ती आदि इसी तरह से मनाते हैं। ये सब नीति से देखने पर जडोपासना ही है।

अतः इस प्रकार किसी न किसी ढंग से हर कोई मूर्ति पूजा करता है। प्रमाण हेतु अवश्य देखें इसी पुस्तक के पृष्ठ नं. 17 पर दी गई तस्वीर।

प्रश्न 13-अतः मूर्ति पूजा के विषय पर आपके मत से आचार्य एवं संत कबीर के शिष्य संत गरीबदास जी की मत पंथ सम्प्रदाय पर क्या ख्याल है? संक्षेप में उत्तर दीजिए।

उत्तर-जैसा कि मैं पूर्व में भी कह चुका हूँ कि इस जडोपासना से कोई भी नहीं बच सका है। गरीबदासी सम्प्रदाय भी नहीं। इसका सबसे महत्वपूर्ण प्रतीक एवं प्रमाण स्वयं वर्तमान तक चल रहा जिला झझ्झर, गाँव छुड़ानी, हरियाणा का गरीबदासी पंथ का शिश (सरमत्था) अर्थात बाबा गरीब दास धाम ही है। यहाँ दोनों समय (सुबह-शाम) पाषाण निर्मित मूर्तियों की पूजा अर्चना बड़े ही धूमधाम से होती है। वहाँ के वर्तमान महंत श्री दयासागर जी महाराज है। यह गृहस्थ गद्दी है।

प्रश्न 14-क्या संत कबीर दास जी की भी कहीं (भारत वर्ष में) जड़ पूजा होती है?

उत्तर-जी हाँ! ये सत्य है कि यह पंथ भी जडोपासना से दूर नहीं है क्योंकि आप किसी भी कबीर पंथी आश्रम में जाकर देख सकते हैं कि ये लोग अपने आचार्यों (कबीर आदि की ओर संकेत) की मूर्तियाँ लगाकर रखते हैं तथा हर अपने पवित्र माने जाने वाले पर्वों पर खुशी से अपने आचार्यों की प्रतिमाओं पर पुष्प मालाऐं इत्यादि चढ़ाते हैं तथा दीप भी प्रज्जवलित करते हैं और इस पंथ में तो कुछ ऐसे भी हैं जो कि अपने आपको तत्वदर्शी एवं कबीर दास जी महाराज के अवतार बताकर भोली जनता को धोखे में रखकर स्वयं तक की प्रतिमाओं का पूजन करवाते हैं तथा बक भक्ति फैलाकर स्वयं को भगवान साबित करने के तरीके ढूंढ रहे हैं। क्या ये सब

मूर्ति पूजा नहीं हैं अर्थात् ये ही जड़ोपासना को बदनाम कर रहे हैं।

-✤-

नींव की ईंट गोरक्ष

(प्रचण्ड बुद्धिकारक सन्त रजनीश अर्थात "ओशो")

भारत के महाराष्ट्र प्रांत में जन्मे आचार्य रजनीश को भला कौन नहीं जानता। उनके मस्तिष्क के सामने बड़े-बड़े दिग्गजों ने भी घुटने टेक दिये थे। यहाँ तक कि भारत से अमेरिका देश में जाकर आचार्य जी ने भारत का डंका बजा दिया था और अमेरिका में 'रजनीशपुरम्' नाम से एक शहर भी बसा दिया। आचार्य जी अपने आगामी दिनों में 'ओशो' नाम से सर्वत्र विख्यात हुये। धर्म के सामने झुकने पर विदेशियों की अन्तर्रात्मा को भी आचार्य जी ने विवश किया तथा भारत का नाम रोशन किया। अतः धर्म उपदेशक आचार्य रजनीश जी से एक बार महाकवि एवं प्रबुद्ध लेखक श्री सुमित्रानन्दन पंत जी की वार्ता में सुमित्रानन्दन पंत जी के पूछने पर आचार्य श्री रजनीश जी ने भारत वर्ष के 'धर्म दिग्दर्शन' रुपी आकाश के चमकते नक्षत्रों के नाम गिनाते हुये कहा कि योगीराज श्री गुरु गोरक्षनाथ जी, श्री कृष्ण, बुद्ध, महर्षि पातजंलि, महावीर, भक्त कबीरदास जी, सन्त श्री नानकदास जी, सन्त मीराबाई, रामकृष्ण, कृष्ण मूर्ति, शंकर व नागार्जुन आदि सृष्टि के प्रमुख बारह स्तम्भ हैं। इसी दौरान बुद्धिजीवी महाकवि पंत जी ने आचार्य श्री से कहा कि इनमें श्री राम, सिद्ध दत्तात्रेय व महर्षि दयानन्द जी इत्यादि का नाम तो नहीं है। अतः इस विषय पर आचार्य जी ने उत्तर दिया कि इन नायकों की सृष्टि में कोई मौलिक देन नहीं है। यह सुनकर पंत जी ने उपरोक्त 12 में से आचार्य जी को संख्या सात करने को कहा-तो आचार्य जी ने अपने मुखार्विन्द से श्री कृष्ण, बुद्ध, पंतजलि, गोरक्षनाथ जी, महावीर, कबीर व शंकर आदि सात नाम गिनाए तथा कहा कि नागार्जुन की सत्ता बुद्ध में व कृष्ण मूर्ति भी बुद्ध में समाहित है, रामकृष्ण का योगीराज श्री कृष्ण में एक्य तथा मीराबाई व नानक अपने

गुरु कबीर दास जी में समाहित (ऐक्य) हो जाते हैं।

इस पर पंत जी ने कहा कि अब सात में से पांच ही प्रमुख माने तो किन दो का नाम हटेगा। इस दौरान प्रत्युत्तर में आचार्य जी ने कहा-यह बड़ा दुरुहु होता जा रहा है। पर निर्णय करे तो पांच में क्रमशः श्री कृष्ण, बुद्ध, पतंजलि, गोरक्षनाथ जी और महावीर का नाम ही लिया जायेगा। भक्त कबीर दास जी तो गुरुत्व की शक्ति एवं परमतत्व गोरक्ष में समा जाते हैं, तथा शंकर जी कृष्ण में लीन रहते हैं। इस पर महाकवि पंत जी ने पूछा कि 'यदि इनमें से चार को ही विशिष्ट माना जाये तो इस प्रश्न का उत्तर देते हुये आचार्य ओशो ने कहा-श्री योगीराज गोरक्ष, श्रीकृष्ण, पतंजलि और बुद्ध। इस पर पंत जी बोले कि आपने महावीर को छोड़ दिया। लेकिन गुरु गोरक्ष को नहीं। आचार्य जी ने कहा कि आप गुरु गोरक्ष को छोड़ने की उत्कंठा लिए बैठे हो पर गोरक्ष कदापि नहीं छूट सकते। अरे! महावीर तो जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर है उनसे पूर्व में 24 तीर्थंकर तो हो चुके थे और महावीर का मेल बुद्ध से सम्भव है दोनों (महावीर व बुद्ध) के सिद्धान्त भी आपस में मेल खाते हैं अतः महावीर की बुद्ध में मिश्रीतता प्रत्यक्ष व सफलता से सिद्ध है। गुरु गोरक्ष की मानवता अर्थात् उपस्थिति ही मौलिक देन है अगर आदि सतगुरु गोरक्ष नहीं होते तो हिन्दुस्थान का संत साहित्य व संत समाज भी नहीं होता। पारगामी गोरक्ष तो मनुष्य के शरीर की अन्तरतम गुफाओं में झांकने वाले तथा उसके परिशोध ज्ञाता है। उन्होंने शरीर के अन्दर शोध करते हुये कितने ही दरवाजों की रुकावट को तोड़ा है। 72 हजार नाड़ियों के परीक्षण को शोधपूर्वक सुलझाया है। सतगुरु गोरक्ष तो गोलकुण्डा की अनमोल दिव्य खान का कोहिनूर हैं जिसको कितनी बार तरासा गया। आज मूल्य तो हजारों गुणा हो गया और उसका ठोस वजन एक तिहाई ही रह गया। महलों के कंगूरे (ऊपरी भाग की सौन्दर्यता) तो दूर से ही दिखाई देते हैं लेकिन नींव में लगी ईंट को भूला दिया जाता है। अर्थात सतगुरु गोरक्ष तो महल रुपी सृष्टि के नींव की ईंट

रुपी जड़ हैं। अर्थात् गोरक्ष तो धर्म की मुख्य जड़ हैं। पूज्य गुरु गोरक्ष तत्व को तो लोगों ने नींव की ईंट की तरह भुला दिया उनके रहस्यमयी सद्ग्रन्थों में छुपे गूढ़ ज्ञान (जैसे वाणी, शब्दी व अन्य गोरक्ष कृत कृतियां) को कोई विरला ही समझ पाता है। गुरु गोरक्षनाथ जी की अनुपस्थिति सम्पूर्ण सृष्टि के लिए विनाशकारी है अर्थात् गोरक्ष अति आवश्यक है। वे नहीं तो सृष्टि भी नहीं। आदि गुरु गोरक्षनाथ जी के शब्द मात्र शब्द ही नहीं है। वे मार्मिक सूत्र हैं जिनके गूढ़ रहस्य को कोई महापुरुष या विरला श्रेष्ठ ही जान सकता है। गोरक्षनाथ जी एक महान और पूर्ण समर्थ आविष्कारक हैं। उनके बिना भक्त एवं कवि माने जाने वाले कबीर दास जी एवं नानक दास जी, संत दादू दास व भक्तमति मीराबाई इत्यादि कोई भी नहीं हो सकते। सम्पूर्ण योगी सम्प्रदाय (नाथ सम्प्रदाय) तथा सन्त साहित्य सहित संत परम्परा सद्गुरु गोरक्षनाथ जी की अथाह एवं अतिशय ऋणी हैं। न जाने कितने ही सिद्ध महापुरुष हमारे आदि गुरु गोरक्ष की प्रेरणा से उत्पन्न हुये। समस्त सत्ताओं तथा दिग्गज यशस्वी देव शक्तियों से लेकर योगी व संतों की प्रत्येक सम्प्रदाय तक को भी परम तत्व की प्राप्ति हेतु गोरक्ष की शरण लेनी ही पड़ी व पड़ेगी। इतिहास अर्थात समस्त योग शास्त्र एवं स्थाई चीर सृष्टि स्वयं गवाह है कि गोरक्ष के पास अपूर्व एवं अपार व्यक्तित्व है। योगाचार्य आदिगुरु गोरक्ष एवं भक्त कबीर दास जी महाराज यदि पास-पास बैठे हों तो हर कोई कबीर को पहचान सकता है लेकिन गोरक्ष तत्व को नहीं।

इस प्रकार **सुमित्रानन्दन पंत जी** को आचार्य श्री रजनीश जी ने गोरक्षतत्व की अपार पराकाष्ठा का एक सूक्ष्म अणु की मात्रा का यह उपदेश दिया तदोपरान्त पंत जी ने अगला प्रश्न खड़ा कर दिया अर्थात पंजी जी बोले कि बस एक बार यह बतलाइये कि उपरोक्त चारों नामों की सूची में से यदि तीन नाम ही रखे जायें तो ? इस दौरान आचार्य जी एकदम बोले-मुझसे अन्याय अर्थात महापापी कर्म मत कराओ। अब तक वस्त्र

को ही काट रहा था अब मानो अंग काटने पड़ेंगे। ये चार शक्तियाँ (कृष्ण, पतंजलि, बुद्ध व गुरु गोरक्ष) इस सृष्टि रुपी भवन के चार मजबूत एवं शक्तिशाली स्तम्भ है। इनमें से एक स्तम्भ भी हटाने का पाप मुझसे कदापि नहीं होगा। गुरु गोरक्ष नहीं हटाये जा सकतें पूर्व में भी यह कह चुका हूँ कि गोरक्ष तो धर्म रुपी वृक्ष की जड़ हैं और यदि जड़ को काटोगे तो सारा वृक्ष अर्थात् सृष्टि विधान नष्ट हो जायेगा ।। अतः आदेश गोरक्ष प्रभु आदेश।।

-✤-

नाथ जी के परम तत्व से परे हैं वेद शास्त्र

भारतीय सनातन संस्कृति में वेद-शास्त्रों का अहम स्थान है। श्रद्धालु जन वेद शास्त्रों को सर्व शिरोधार्य समझते हैं। उन्हें अति पवित्र मानते हुये इस ग्रन्थ शास्त्र के रहस्य को सर्वथा सर्वोपरि समझते हैं तथा बड़े ही दुर्भाग्य की बात है कि इस रहस्य से आगे हमारा मनुष्य कुछ नहीं मानता। अतः योग प्रणेता 'गोरक्षतत्व' हमारी प्राकाष्ठा (शास्त्र, पुराण, ग्रन्थ इत्यादि) से करोड़ों मील आगे स्थित है, अर्थात् वह हमारे अन्तर्रात्मा में ही निहित सर्वशक्ति है। जहाँ कोई वेद शास्त्र नहीं। अर्थात् वहाँ तो खोजने पर यही ज्ञात होगा कि 'केवल गोरक्ष तत्व' ही चीर स्थाई तथा सर्वोत्तमा शास्त्र विद्यमान है। क्योंकि जगमाता पार्वती ने भी अपने पति भगवान शिव को योग के सानिध्य में देखा है तथा महायोगी के रुप में उनके दर्शन किये। इस अखण्ड सत्य का प्रमाण '**योग बीज**' में संस्कृत प्रतीक से प्राप्त होता है-

योग मार्ग कृते तुभ्य महायोगीश्वराय ते।

नमस्ते परिपूर्णाय जगदानन्द हेतवे।।

अर्थात्-माता पार्वती अपनी प्रार्थना करती हुयी भगवान शिव से कह रही है कि आपने योगमार्ग के प्रचार हेतु अर्थात् योग के ऐश्वर्य से जगत को आनन्दित करने के लिए महायोगी योगेश्वर का रुप 'जगहितार्थ'

धारण किया-इसलिए हे जग के पालनहारी सर्वस्व के दाता आपको नमस्कार है। -**प्रमाण योगबीज 3 में**

यहाँ योग शास्त्र ही पावन बोध होता है तथा फिर दूसरा उदाहरण स्वयं योगाचार्य गोरक्षनाथ जी महातत्व **गोरक्ष पद्धति** में कह रहे हैं कि योग शास्त्र का आविर्भाव आदिनाथ शिव के श्रीमुख कमल से हुआ है। सर्वोत्कृष्ठ व्यक्तित्व एवं नाथ तत्व (मुक्ति मार्ग) के लिए केवल इस शास्त्र का ही नित्य पाठ करना चाहिए। अन्य शास्त्रों के अध्ययन व अध्यापन से कोई विशेष कामयाबी हासिल नहीं है। -देखिए संस्कृतः सूत्र से 'गोरक्ष पद्धति' में प्रमाण

गोरक्ष कहते हैं-

योगशास्त्र पठेन्नित्यं किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।
यत्स्वयं चादिनाथस्य निर्गत वदनाम्बुजात्।।

इस दौरान कहना चाहूँगा कि भगवान शिव द्वारा ही ज्ञापित अर्थात् निर्दिष्ट '**शिव संहिता**' ग्रन्थ योग शास्त्र एवं योग मार्ग का ही दृष्टांत दिव्य ग्रन्थ है। भगवान पशुपतिनाथ ने इस ग्रन्थ का सारोपदेश अपने अनन्य भक्तों पर पूर्ण आसक्त होकर दिया था। इस तथ्य का प्रमाण देखिए-

अथ भक्तानुरक्तोऽहं वक्ष्ये योगानुशासनम्।

उपरोक्त संस्कृत श्लोक '**महायोगेश्वर आदिनाथ शिव**' नामक कृति तथा लेखक श्री रामलाल श्रीवास्तव की रचना से लिया गया है। यहाँ भगवान की भक्तों पर आसक्ति स्पष्ट झलक रही है।

तदोपरान्त शिव संहिता में मात्र योग क्रम व योग शास्त्र को ही महत्व देते हुये वही 1/17 में कहा है-

आलोक्य सर्वशास्त्राणि विचार्य च पुनः पुनः।
इदमेकं सुनिष्पन्नं योग शास्त्रं परं मतम्।।

अर्थात्-सभी शास्त्रों को बार-बार पढ़ने अर्थात् विचारने का कोई

लाभ नहीं है बस यदि योग शास्त्र का अध्ययन कर उसे अपने साथ प्रति सात कर लिया जाये अर्थात् उसे अपने जीवन चरित्र में ढाल लिया जाये तो कोई अन्य शास्त्र ग्रन्थ की आवश्यकता ही नहीं रहेगी।

इसी सिद्धान्त का उल्लेख सद्‌गुरु योगाचार्य परम तत्व दृष्टा शम्भूजति प्रातः स्मरणीय घट-घट वासी महाज्ञानी पूर्ण पारब्रह्म गोरक्ष नाथ जी महाराज की कृतियों में समाहित मिलता है। जगरक्षक गोरक्ष की शब्दी नं. 4 में प्रत्यक्ष प्रमाणित है । योगी जी द्वारा अनेक जगहों पर अन्य शास्त्रों के अध्ययन को निषेध बताया है-देखिए प्रस्तुत गोरक्षवाणी में-

वेद कतेव न षाणी वाणी, सब ढंगी तलि आणी।

गगन सिषर महि सबद प्रकास्या, तहं बूझै अलप विनाणी।।

अर्थात्-प्रस्तुत शब्दी अंश को गुरु गोरक्षनाथ जी की शब्दी के प्रथम भाग के चौथे दोहे से लिया गया है। इस शब्दी अंश में गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज कहते हैं कि **'परम शिव तत्व'** का पूर्ण व सापेक्ष प्रस्तुतीकरण ना वेद कर पाये है ना विविध धर्मों की किताबें (पुस्तकें) और ना चारों खाणियों (यथा-**अण्डज, स्वेदज, जरायुज, उदभिज आदि)** की वाणियों (यथा-**सहज, संजम, सुपाई, अतीत आदि)** ने किया-ये सब तो उस शिव तत्व को आच्छादित कर देते हैं। उस गगन सिषर (ब्रह्मरन्ध्र) में योग (समाधी) द्वारा जो शब्द प्रकाशमान होता है, उसमें सुव्यवस्थित ज्ञान रुप अभेद अर्थात् अलक्षित का योग (ऐक्य समीकरण, तत्व का अनुसंधान) प्राप्त करना चाहिए। अर्थात् **योग विद्या को ही प्राप्त करने में प्रयत्नशील रहना चाहिए**। अन्य तरीकों व उपायों से बचना चाहिए।

।। ॐ शिव गोरक्ष ।।

-✤-

आदि अनादि नाथ सम्प्रदाय में गुरु महत्व

सृष्टि के आदि से प्रचलित नाथ सम्प्रदाय ने ही विश्व को गुरु के महत्व का ज्ञान दिया। जिसके अनुसार उदाहरण हेतु सर्वथा एक दोहा

देखिए-जो कि पूर्णतया नाथों की वास्तविकता का प्रतीक है-

गुरु ब्रंह्मा गुरुर्विष्णु गुरुदेवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

अर्थात्-यह उपरोक्त श्लोक आज सर्व दिशाओं में प्रचलित एवं हर व्यक्ति के जुबान का स्वर बना हुआ है तथा जहाँ गुरु से सम्बन्धित कोई चर्चा आती है तो लगभग यह श्लोक ही जुबां पर मंडराने लग जाता है। गुरु भक्ति का सम्बोधक यह श्लोक नाथ सम्प्रदाय के महानायक तथा सम्पूर्ण लोकों के अधिष्ठाता ज्ञान पारखी गुरु गोरक्षनाथ जी के द्वारा रचित **अमनस्क योग** ग्रन्थ की छवि दर्शक एवं नाथ जी के मस्तिष्क की खरी शुद्ध उपज का हुबहु नकल (फोटोकापी) है क्योंकि नाथ जी के अमनस्क योग में यह श्लोक भक्त कबीर दास जी जैसे महान कवि तथा भक्तों के जन्म से पूर्व का ही स्थायित्व रखने वाला है जिसका वास्तविक स्वरुप तो यह है-

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुर्देवात्परं नास्ति तस्मात्तं पूज्येत्सदा।।

देखिए अमनस्क योग के 2/44 में

अर्थात्-प्रस्तुत अधोलिखित श्लोक गुरु गोरक्ष के अमनस्क योग शास्त्र से लिया गया है। यहाँ इस दोहे से श्री गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज कह रहे हैं कि गुरु ही ब्रह्मा, गुरु ही विष्णु और साक्षात् शिव महेश्वर हैं, गुरु से ऊपर अर्थात् श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है, इसलिए हे गुरुवर आप सदा परम पूज्य हो।

इस प्रकार गुरु की महिमा गोरक्ष द्वारा असंदिग्ध बताते हुये कहा गया है कि गुरु की चरण कृपा गंगधार में मन रुपी कमल का समर्पण निःसंदेह मानो मोक्ष का विधायक (प्रबन्ध) है। चिंतामणी स्वरूप गुरु के अनुग्रह के बिना वेदान्त, तर्क, आगम तथा अन्यान्य शास्त्रों के अध्ययन और समाधी (ध्यान) आदि सर्वोत्तम साधनों से भी निर्धारित लक्ष्य की प्राप्ति सम्भव नहीं है। सब कुछ गुरु से ही प्राप्त होता है।

इस प्रकार नाथ जी ने गुरु भक्ति को सर्वोत्तम बताते हुए कहा है कि-

प्रथमे प्रणऊँ गुरु के पायां, जिन मोहि आत्म ब्रह्म लषाया।।

अर्थात्-गोरक्ष कह रहे हैं कि मैं सर्वप्रथम अपने गुरुजी के पवित्र तथा करुणामय चरणों को प्रणाम करता हूँ यानि उन समर्थ गुरु को प्रणाम करता हूँ जिन्होंने मुझे परम तत्व (गोरक्ष तत्व) से अवगत कराया। (यहाँ गोरक्षनाथ जी जनमानस को शिक्षार्थ स्वयं कर्ता की भूमिका का श्रेय ले रहे हैं।)

अतः इस प्रकार नाथ सम्प्रदाय में गुरु का भारी महत्व आदि काल से ही है। इस तथ्य को पूर्णतया समझने के लिए देखिए भगवान पशुपतिनाथ की संहिता में गुरु वंदना का अंश निम्न प्रकार है-

गुरुः पिता गुरुर्माता, गुरुर्देवो न संशयः।
कर्मणा मनसा वाचा, तस्मात् सर्वैः प्रसेव्यते।।
गुरु प्रसादतः सर्वेलभ्यते शुभ मात्मनः।
तस्मात् सेव्यो गुरुर्नित्यमन्यथा न शुभंभवेत्।।

अर्थात्-यह प्रस्तुत अंश शिव संहिता के 3/14 व 15 से लिया गया है। यहाँ शिष्य को गुरुत्व की डोर का महत्व अंकित कराते हुये कहा है कि गुरु ही जन्मदाता पिता है गुरु ही माँ और देवता है-इस कथन में तनिक (क्षण भर) भी संदेह नहीं है। शिष्य को मन-कर्म-वचन से गुरु की अच्छी तरह सुलभ तथा सभी प्रकार से निःस्वार्थ सेवा करनी चाहिए।

सतगुरु की सेवा से आत्मा सम्पूर्ण शुभ गुणों को प्राप्त करती है अर्थात् उनकी सेवा से समस्त शुभाशीषों की प्राप्ति होती है इसलिए गुरु सदा पूज्य हैं। गुरु भक्ति बिना किसी भी शुभ श्रेय की चिरंजीवी सिद्धि नहीं मिलती। (मानव जीवन पाकर सफलता प्राप्त नहीं होती)

गुरु विनाशकारी भी हो सकता है-

सतगुरु गोरक्षनाथ जी महाराज वस्तुतः गुरुत्व के गुणगान करते हुये मानव को बक भक्ति से बचाने हेतु अपनी गोरक्ष वाणी के एक पद में

****
कहते हैं कि-

काल न मिट्या जंजाल न छुट्या, तप कर हुआ न सुरा।
कुल का नास करे मति कोई, जे गुरु मिले न पूरा।।

अर्थात्-मृत्युंजय नहीं हुये और ना ही सांसारिक उलझनों से मुक्त हुये तो ऐसी अधूरी निष्ठा (गंतव्य) से कोई भी साधक (कर्ता या शिष्य) शूर (देव) नहीं हो सकता है और यदि किसी साधक (शिष्य) को पूर्ण गुरु ना मिले तो ऐसे अधूरे गुरु की चपेट में आकर मानो मानव अपने दोनों ही दीन अर्थात् अपना कुल (परिवार) तथा आध्यात्म दोनों से ही विच्छेदित होकर सर्वस्व का नाश कर रहा है, करता है। अतः गुरु गोरक्ष नाथ जी कहते हैं कि इस प्रकार अपने कुल तथा आध्यात्म दोनों मार्गों का कोई भी नाश मत करना।

अर्थात् कृतघ्नी गुरु (बकभक्ति प्रदर्शक) के सम्पर्क में आने से मानो पत्थर की नैया में बैठकर डूब जाना है।

पूर्ण गुरु से ही षट्दल व नव चक्रों की महत्वता का गोरक्ष निर्देश-

प्रिय पाठकों जैसा कि गुरु गोरक्ष द्वारा अपनी रचनाओं में तथा नाथ सम्प्रदाय के सम्पूर्ण साहित्यों में योगक्षेम पर ही अतिशय बल दिया गया है जैसे कि सिद्ध सिद्धान्त पद्धति के दितियोपदेश में पिण्ड ज्ञान चर्चा है। पिण्ड की आन्तरिक रचना का लगभग पूर्ण समायोजन है शरीर के अंतर्गत नव चक्रों, सोलह आधारों, तीन लक्ष्यों तथा पाँच आकाशों इत्यादि के सम्बन्ध में अनेकों अन्यान्य मान्यताओं का निरुपण किया गया है-इस पिण्ड के पूर्ण सद्ज्ञान पर ज्ञान पारखी तत्व भेदा गुरु श्री गोरक्षनाथ जी ने अति विशेष ठोस निर्णय लिए है तथा इस ब्रह्मगांठ को खोलने के लिए गुरु के ही निर्देश (आज्ञा आदेशन) को अति महत्व देते हुये अपनी वाणी में कहा है कि-

सांच का सबद सोना का रेख, निगुरा कौ चाणक सगुरा को उपदेश
गुर का मुंडयागुण में रहे, निगुरा भ्रमे औगुण गहे।।

देखिए गोरक्ष शब्दी क्रमांक 150 में

अर्थात्-यह प्रस्तुत शब्दी गुरु गोरक्षकृत शब्दी संग्रह के क्रम संख्या 150 के प्रस्तुतिकरण से ली गई है। यहाँ नाथ जी महाराज कहते हैं कि सत्य वाची हमेशा सोने की रेखा के समान होता है जो कि हर स्थिति पर खरा उतरता है, इस अनमोल 'सत्य' का उपदेश केवल उन्हीं पुण्यात्माओं को प्राप्त होता है जिन्होंने पूर्ण एवं सुयोग्य गुरु को हासिल किया हो-गुरु द्रोहियों को तो सदा चाबुक (कुयोग)ही मिलते हैं क्योंकि बिना गुरु के कुछ सद्ज्ञान तो हासिल होता ही नहीं। इस प्रकार का निगुरा मानस जगत को सिद्धि का धोखा देकर स्वयं की प्रतिष्ठा का भूखा रहता है तथा जिस श्रेष्ठ शिष्य को सद्गुरु द्वारा कृपापात्र समझकर विकसित पात्र माना जाता है। उसे गुरु मूंडकर शिष्य बनाते हैं। तत्पश्चात् वह शिष्य गुरु से ज्ञान (सद्ज्ञान) की सम्पत्ति ग्रहण करता है। सद् विवेकी कहलाता है। इसके विपरीत जिसने (निगुरे ने) गुरु की शरण प्राप्त नहीं की वह संसारी भ्रम में पड़कर अवगुणों को धारण करता हुआ कूटनीति का शिकार होकर अवगुणों के चाबुक की मार से नष्ट हो जाता है।

नोट-अतः यहाँ गुरु का सान्निध्यपात शिष्य के लिए अति आवश्यक एवं प्रत्यक्ष सिद्ध है। अतः गुरु ही ब्रह्मगांठ को अर्थात् उलझे हुये सूत की छंटनी करने में समर्थ होते हैं।

इस प्रकार गुरु की उपस्थिति समस्त मानव जीवन के लिए आवश्यक बताते हुये गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज राजस्थानी भाषा में गुरु मार्ग की मानव को इस प्रकार प्रेरणा देते हैं-

गुर कीजे गहिला निगुरा न रहिला,
गुरु बिन ज्ञान न पाईला रे भाईला।।

अर्थात्-प्रस्तुत शब्दी पद के अंश में गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज मानव को निगुरापन से सुगुरापन की ओर गतिमान होने तथा सत्मार्ग धारण करने हेतु सचेत करते हुये कहते हैं कि हे मानव! हे मूढ़मति! जीवन को सुखमय व अंतःकरण को मोक्षमय बनाने के लिए गुरु धारण करना अति आवश्यक

है, निगुरा (नुगरा) मत रहना, क्योंकि गुरु बिना कोई भी ज्ञान-ध्यान हे मित्र! (भाईला) तुम नहीं पा सकते।

नोट-यहाँ पवित्र अन्तर्रात्मा को गुरु गोरक्ष ने 'भाईला' (मित्र) शब्द से सम्बोधित किया है।

विशेष-अत: इस प्रकार चिर स्थाई नाथ सम्प्रदाय में आदि काल से ही गुरु भक्तित्व का अनन्य प्रचलन एवं गुरु की सर्वोत्कृष्ट महत्वता आज भी विद्यमान है।

-✤-

नाथ सम्प्रदाय के परिप्रेक्ष्य में

प्रिय पाठकों! नाथ पंथियों को प्राय: नाना नामों से जाना जाता है जैसे-गोरक्षपन्थी, योगी सम्प्रदाय, नाथ पंथी, नाथ सम्प्रदाय, अवधूत सम्प्रदाय, कनफटा पन्थ, गोरखनाथी, अलबेली सम्प्रदाय, दर्शनी पंथ, उत्तम सम्प्रदाय एवं नाथ मति व गोरखमति, सिद्धों की सम्प्रदाय या सिद्ध सम्प्रदाय और सिद्ध पंथ इत्यादि अनेकों नामों से अलंकृत यह पंथ सनातन सम्प्रदाय के नाम से भी प्रकाश में आता है। इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक आदि गुरु एवं शून्य भेदी पारब्रह्म स्वयं योगाचार्य गुरु गोरक्षनाथ जी ही माने जाते हैं। इस कटु सत्य स्वरुप व पाखण्ड से दूर नाथ सम्प्रदाय के विस्तार को काफी धर्म के तथाकथित ठेकेदारों ने अपनी पेट-पूजा पर ठेस के डर से अग्रसर नहीं होने दिया। जब हम हमारे प्राचीन ग्रन्थों-शास्त्रों एवं वेदों तथा पुराणों के गुढ रहस्य को गहराई तक झांक कर नि:स्वार्थ भाव से उसका अवलोकन करते हैं तो यही सत्य व कटु सत्य सामने आता है कि सम्पूर्णता भी अर्थात सृष्टि ही नहीं अपितु सर्वस्व देवी-देवता, ऋषि-मुनि, काल-महाकाल, देत्य-दानव, सजीव-निर्जीव यहाँ तक कि ईक्कीस लोकों का सर्वस्व जर्रा-जर्रा सिर्फ नाथ जी को ही नतमस्तक है। इसी कटु सत्य को भक्त कबीर दास जी जैसे महान कवियों ने एवं अन्य दिग्गज देव

शक्तियों ने तहदिल से स्वीकार किया है। प्रस्तुत पुस्तक में इस सम्बन्ध में आपको अनेकों उदाहरण प्रमाण सहित पीछे प्राप्त हुये हैं तथा इस पुस्तक के अलावा जरा गौर से देखिए, नाथ योगियों के परिपेक्ष्य में निम्नलिखित नाथ सम्प्रदाय के गुण गाते हुई ग्रन्थ एवं शास्त्रों की दिव्य खान और सबसे महत्वपूर्ण एवं मजेदार बात तो इसमें ये है कि यहाँ निम्नलिखित ग्रन्थ सूची में कोई भी ग्रन्थ-शास्त्र नाथ सम्प्रदाय या किसी नाथ यति योगी की लेखनी नहीं है बल्कि अन्य ही जो नाथ सम्प्रदाय को कोसते हैं तथा नाथ मत पर व्यंग्य कसने की कोशिश करते हैं उन्हीं लेखकों सहित सम्प्रदायों तथा हमारी प्राचीन सत्य सनातन संस्कृति के ही सद्ग्रन्थ यहां दिये जा रहे हैं। (इनमें पाईये नाथ जी का गूढ एवं गहरा तत्व ज्ञान)

ग्रन्थ शास्त्रों की सूची-

मार्कण्डेय पुराण, पदम पुराण।

ललितापुर वर्णन (ब्रह्माण्ड पुराण), वायु पुराण।

नारद पुराण, ब्रह्म वैवर्त पुराण।

श्रीमद् भागवत पुराण,

स्कन्द पुराण (काशी खण्ड)

ज्ञानेश्वरी टीका, भक्त कबीर दास के अनेकों ग्रन्थों में जैसे-कबीर पद, कबीर ग्रन्थावली, कबीर बीजक उनके शिष्य संत नानक दास जी एवं सन्त गरीब दास की रचना व वाणियों में तथा विरचित ग्रन्थों में) मत्स्य पुराण, सूरसागर, दत्तात्रेय कृत संवाद में, भगवान श्री कृष्ण कृत राजगुह्य, भारद्वाज ऋषि की भारद्वाज संहिता में कल्पदुम तंत्र में, शक्ति संगम तंत्र में एवं अन्य बहुतायात ऐसे पवित्र ग्रन्थ एवं शास्त्र हैं जो कि नाथ पंथ से अन्य भक्तों-संतों-मुनियों-ज्ञानियों तथा कवियों, लेखकों के द्वारा विरचित हैं तथा वे नाथ गुणों का स्पष्ट बखान करते हैं। उदाहरण हेतु मैंने यहाँ कुछ मात्रा में सूची का परिचय दिया है।

तदन्तर ये भी देखिए-

✤ महर्षि गर्ग का नाथ जी हेतु कथन-

गोरक्षनाथ मंत्राणां फलं च स्तुति संभवं।
वस्तु न शक्येत कृष्ण वर्ष कोटिश तेरपि।

-कल्पद्रुम तंत्र में

अर्थात्-महर्षि गर्ग योगीराज श्रीकृष्ण को कहते हैं कि -हे कृष्ण! महाप्रभु स्वयं पूर्ण पारब्रह्म गुरु गोरक्षनाथ जी के मंत्रों का तथा उनकी स्तुति का जो शुभ परिणाम (फल) है उसे हम सौ करोड़ वर्षों में भी बखान नहीं कर सकते।

✤ ऋषि भारद्वाज का नाथ जी को नमन।

मजुंनाथो हि गोरक्षं मंजुनाथ मवैक्षत।
मंजुनाथः स्वयं देवो मंजुनाथ इति प्रक्ष।।
चतुर्भुजाय भूधाम्ने त्रिधाम्ने त्रिस्वरुपपिणे।
अनन्तान्त रुपाय नाथ गोरक्ष ते नमः।।

भारद्वाज संहिता से

अर्थात्-ऋषि भारद्वाज अपनी रचना भारद्वाज संहिता में नाथ जी महाराज से प्रभावित होकर लिखते हैं कि-शिव ही मंजुनाथ हैं, गोरक्षनाथ जी भी मंजुनाथ है, जो स्वयं देव मीननाथ है, वे भी मंजुनाथ हैं। उनका अनुमानित असंख्य जो दिव्य तेज है वह भी मंजुनाथ है। त्रिस्वरुप ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर रुप से विराजमान हर स्थिति में जैसे जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति तीनों रुप तीनों धामों के कण-कण में बसने वाले चार भुजाओं तथा विलक्षण अतर्क्य (अनन्त) रुपों को धारण करने वाले भगवान मंजुनाथ गोरक्ष नाथ जी को हम नमस्कार करते हैं।

✤ योगीराज श्रीकृष्ण जी का गोरक्ष गुरु को नमन करना

(अ) ब्रह्माणां च परं ब्रह्मा, रुद्रीदीनां शिरोमणिः
त्रेलोक्य निर्मित येन श्री गोरक्ष नमोस्तुते।।

अर्थात्-योगीराज श्रीकृष्ण जी महाराज का यह प्रस्तुत अंश उनके 'राजगुहा' शास्त्र से लिया गया है। इस अंश में श्रीकृष्ण जी महाराज कहते हैं कि श्री गोरक्ष नाथ जी जो कि अनेकों ब्रह्माओं के भी परब्रह्म और रुद्रादि **(शिव गोरक्ष स्वरुप)** के शिरोमणि हैं और जिन्होंने तीनों लोकों सहित सम्पूर्णता का निर्माण-सृजन किया है उन आप प्रभु गोरक्षनाथ जी को प्रणाम है (नमस्कार है) इतना कहते हुये आगे लिखते हैं कि-

(ब) सर्व गुणो गुणाभावों निर्गुणाश्य गुणस्थितः।
साकारो वा निराकारो श्री गोरक्ष नमोस्तुते।।

अर्थात्-'राजगुह्य' शास्त्र में गुरु गोरक्षनाथ स्तोत्र में श्रीकृष्ण जी महाराज प्रस्तुत अंशानुसार कह रहे हैं कि हे श्री गुरु गोरक्ष! आप (स्तुति करते हुये) समस्त गुणों के आश्रय अर्थात् आप गुण रहित गुणातीत और निर्गुण व सगुण तथा साकार अथवा निराकार सब कुछ हैं। ऐसे हे गोरक्ष प्रभु आपको प्रणाम है-नमस्कार है। इस तरह आगे वर्णन करते हैं कि

(स) श्रीनाथं तु महात्मानं न जानाति स्वयं हरिः।
किचित्किंच द्विजानाति महादेवो नमस्कृतम्।।

अर्थात्-प्रस्तुत 'राजगुह्य' अंश में श्रीकृष्ण जी महाराज शम्भुजति गुरु गोरक्षनाथ जी के लिए 'श्रीनाथ' शब्द से ही संकेत करते हुये कहते हैं कि हे नाथ जी महाराज आप सभी के द्वारा पूजित (नमस्कृत) महात्मा योगी हो आपके 'गोरक्ष तत्व' को तो स्वयं साक्षात् श्री हरि भी नहीं जान पाते, महादेव (देवों के देव) भी कुछ थोड़ा-बहुत ही जानते हैं।

(द) नाथ योगियों का नमस्कार सूचक 'आदेश-आदेश' शब्द पर प्रकाश

आदेश शब्द की स्वरुप प्रकाष्ठा '**सतगुरु श्री गोरक्षनाथ जी** द्वारा रचित संस्कृत ग्रन्थ '**सिद्ध सिद्धान्त पद्धति** के प्रमाण से देखिए-

आत्मेति परमात्मेति जीवात्मेति विचारेण।
त्रयाणामैक्य संभूतिरादेश इति कीर्तितः।

आदेश इति सद्वाणी सर्वद्वन्द्व क्षयापहाम्।
यो योगिनं प्रति वदेत सयात्मात्मान् प्रमैश्वरम्।।

अर्थात्-गुरु गोरक्षनाथ जी अपने संस्कृत ग्रन्थ 'सिद्ध सिद्धान्त पद्धति' में प्रस्तुत श्लोक भाग द्वारा कहते हैं कि आत्मा परमात्मा और जीवात्मा के सम्बन्ध में विचार करने पर स्पष्ट ज्ञात होता है कि तीनों की एकता की सम्भुति उत्पत्ति अभिन्न सत्ता ही 'आदेश' के रुप में प्रसिद्ध है। 'आदेश' परमात्मा (स्वयं गोरक्ष तत्व का) स्वरुप का प्रतिपादन करने वाली सद्वाणी है। इसके उच्चारण मात्र से जरा-मरण, सुख-दुख, राग-द्वेष इत्यादि समस्त बहुतात्मक द्वन्द्वों का सर्वनाश हो जाता है, जो प्राणी योगेश्वरों के प्रति (नाथों के प्रति) 'आदेश-आदेश' नमस्कार सूचक शब्द का व्यवहार सहिष्णुता पूर्वक करता है वह प्राणी परमात्मा और आत्मा के अभिन्न स्वरुप को यथार्थतः जानने में सफल हो जाता है।

卐 आदेश पर विशेष टिप्पणी-(महन्त योगी सुन्दराई नाथ) अलेवा/जीन्द (हरि.) वस्तुतः व्यवहारिक रुप में 'आदेश' शब्द का अर्थ नमस्कार या प्रणाम अर्थात् वंदन-नमन इत्यादि माना जाता है। 'आदेश' का ज्यादातर पांच अर्थों में प्रयोग होता है जैसे-सरकारी आज्ञा (सरकार का आदेश) गुरु के प्रति प्रणाम के भाव में व्यक्त निष्ठा, शिष्य के प्रति गुरुजनों का आशीर्वाद, वेदोक्त साहित्यों में परब्रह्म तथा व्याकरण में वर्णान्तर की स्थापना आदि।

जब शिष्य गुरु के श्रीचरणों में आदेश करता है तो उसका अर्थ गुरु की तरफ से आशीर्वाद तथा शिष्य की तरफ से नमस्कार या वंदन करना होता है। इसी 'आदेश' शब्द को आदिकाल से नाथ सम्प्रदाय का नमस्कार बोधक शुद्ध शब्द माना जाता है और यह शब्द सर्वाभिन्न व अत्यन्त रहस्यमयी है तथा नाथ सम्प्रदाय का शुभ संकेत भी है।

अतः आदेश आदेश।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

गोरखबानी (शब्दी)

बसती न सुन्यं सुन्यं न बसती अगम अगोचर ऐसा।
गगन-सिषर महिं बालक बोलै ताका नाँव धरहुगे कैसा॥१॥
अदेषि देषिवा देषि विचारिबा अदिसिटि राषिबा चीया।
पाताल की गंगा ब्रह्मण्ड चढ़ाइबा, तहाँ बिमल बिमल जल पीया॥२॥
इहां की आछै इहां ही अलोप। इहां ही रचिलै तीनि त्रिलोक।
आछै संगै रहै जूवा। ता कारणि अनन्त सिधा जोगेस्वर हूवा॥३॥
वेद कतेब न षांणीं बांणीं। सब ढंकी तलि आंणीं।
गगनि सिषर महि सबद प्रकास्या। तहं बूझै अलष बिनांणीं॥४॥
अलष बिनांणीं दोइ दीपक रचिलै तीन भवन इक जोती।
तास बिचारत त्रिभवन सूझै चुणिल्यौ मांणिक मोती॥५॥
वेदे न सास्त्रे कतेबे न कुरांणे पुस्तके न बंच्या जाई।
ते पद जांनो बिरला जोगी और दुनी सब धंधै लाई॥६॥
हसिबा षेलिबा रहिबा रंग। काम क्रोध न करिबा संग।
हसिबा षेलिबा गाइबा गीत। दिढ करि राषि आपना चीत॥७॥
हसिबा षेंलिबा धरिबा ध्यांन। अहनिसि कथिबा ब्रह्म गियान।
हसै षेलै न करै मन भंग। ते निहचल सदा नाथ कै संग॥८॥
महंमद महंमद न करि काजी महंमद का विषम बिचारं।
महंमद हाथि करद जे होती लोहै घड़ी न सारं॥९॥
सबदैं मारी सबदैं जिलाई ऐसा महंमद पीरं।
ताकै भरमि न भूलौ काजी सो बल नहीं सरीरं॥१०॥
नाथ कहंतां सब जग नाथ्या गोरष कहतां गोई।
कलमा का गर महंमद होता पहलैं मूवा सोई॥११॥
सारमसारं गहर गम्भीरं गगन उछलिया नादं।
मानिक पाया फेरि लुंकाया झूठा बाद-बिबादं॥१२॥
कोई बादी कोई बिबादी जोगी कौं बाद न करनां।
अठसठि तीरथ समंदि समावैं यूँ जोगी कौं गुरुमुषि जरनां॥१३॥

उतपति हिन्दू जरणां जोगी अकलि पीर मुसलमांनी।
ते राह चीन्हों हो काजी मुलां ब्रह्मा बिस्नु महादेव मांनी॥१४॥
मांन्यां सबद चुकाया दंद। निहचै राजा भरथरी परचै गोपीचंद।
निहचै नरवै भए निरदंद। परचै जोगी परमानन्द॥१५॥
अह निसि मन लै उनमन रहै, गम की छांड़ि अगम की कहै।
छाड़ै आसा रहै निरास, कहै ब्रह्मा हूँ ताका दास॥१६॥
अरधै जाता उरधै धरै, कांम दगध जे जोगी करै।
तजै अल्यंगन काटै माया, ताका बिसनु पषालै पाया॥१७॥
अजपा जपै सुंनि मन धरै, पांचौ इंद्री निग्रह करै।
ब्रह्म अगनि मैं होमै काया, तासो महादेव बदै पाया॥१८॥
धन जोवन की करै न आस, चित्त न राषै कांमनि पास।
नाद बिंद जाकै घटि जरै, ताकी सेवा पारबती करै॥१९॥
बालै जोबनि जे नर जती, काल दुकालां ते नर सती।
फुरतै भोजन अलप अहारी, नाथ कहै सो काया हमारी॥२०॥
सबदहिं ताला सबदहिं कूंची, सबदहिं सबद जगाया।
सबदहिं सबद सूं परचा हूआ, सबदहिं सबद समाया॥२१॥
पंथ बिन चलिबा अगनि बिन जलिबा, अनिल तृषा जहटिया।
ससंबेद श्री(गुर) गोरष(नाथ) कहिया, बूझिल्यौ पण्डित पढ़िया॥२२॥
गगन मण्डल मैं ऊंधा कूबा, तहाँ अंमृत का बासा।
सगुरा होइ सु भरि भरि पीवै निगुरा जाइ पियासा॥२३॥
गगने न गोपंत तेजे न सोषंत पवने न पेलंत बाई।
यही भारे न भाजंत उदके न डूबन्त कहौ तौ को पतियाई॥२४॥
बास सहेती सब जग बास्या, स्वाद सहेता मीठा।
सांच कहूँ तो सतगुर मानै रूप सहेता दीठा॥२५॥
मरौ वे जोगी मरौ, मरण है मीठा।
तिस मरणीं मरौ, जिस मरणीं गोरष मरि दीठा॥२६॥
हबकि न बोलिबा, ठबकि न चालिबा धीरै धारिबा पावं।
गरब न करिबा सहजै रहिबा भणत गोरष रावं॥२७॥

भर्‍या ते थीरं झलझलंति आधा।
सिधें सिध मिल्या रै अवधू बोल्या अरु लाधा॥२८॥
नाथ कहै तुम सुनहु रे अवधू दिढ करहि राषहु चीया।
काम क्रोध अहंकार निबारौ तौ सबै दिसंतर कीया॥२९॥
स्वामी बन षंडि जाउं तो षुध्या व्यापै नग्री जाउे त माया।
भरि भरि षाउं त बिंद बियापै क्यों सीझति जल ब्यंद की काया॥३०॥
धाये प षाइबा भूषेन मरिबा अहनिसि लेबा ब्रह्म अगनि का भेवं।
हठ न करिबा पड्या न रहिबा यूँ बोल्या गोरष देवं॥३१॥
थोड़ा बोलै थोड़ा षाइ तिस घटि पवनां रहै समाइ।
गगन मण्डल से अनहद बाजै प्यंड पड़ै तो सतगुर लाजै॥३२॥
अवधू अहार तोड़ौ निद्रा मोड़ौ कबहूँ न होइगा रोगी।
छठै छ मासै काया पलटिया ज्यूं को को बिरला बिजोगी॥३३॥
देव कला ते संजम रहिबा, भूत कला अहारं।
मन पवना लै उनमनि धरिबां ते जोगी तत सारं॥३४॥
अवधू निद्रा कै धरि काल जंजालं अहार कै घरि चोरं।
मैथुन कै घरि जुरा गरासै अरध-उरध लै जोरं॥३५॥
अति अहार यंद्री बल करै नासै ग्यांन मैथुन चित धरै।
व्यापै न्यंद्रा झंपै काल ताके हिरदै सदा जंजाल॥३६॥
घटि घटि गोरष बाही क्यारी। जो निपजै सो होइ हमारी।
घटि घटि गोरष कहै कहांणीं। काचै भांडै रहे न पांणी॥३७॥
घटि घटि गोरष फिरै निरूता। को घट जागे को घट सुता।
घटि घटि गोरष घटि घटि मींन। आपा परचै गुर मुषि चीन्ह॥३८॥
पावड़िया पग फिलसै अवधू लोहै छीजंत काया।
नागा मूनी दूधाधारी एता जोग न पाया॥३९॥
दूधाधारी पर घरि चित। नागा लकड़ी चाहै नित।
मोनीं करै म्यंत्र की आस। बिन गुर गुदड़ी नहीं बेसास॥४०॥
दषिणी जोगी रंगा चंगा, पूरबी जोगी बादी।
पछमी जोगी बाला भोला, सिध जोगी उतराधी॥४१॥

अवधू पूरब दिंसि व्याधिका रोग, पछिम दिसि मिर्तू का सोग।
दछिण दिसि माया का भोग, उत्यर दिसि सिध का जोग॥४२॥
धूतारा ते जे धूतै आप, भिष्या भोजन नहीं संताप।
अहूठ पटण मैं भिष्या करै। ते अवधू सिव पुरी संचरै॥४३॥
घरबारी सो घर की जाणै। बाहरि जाता भीतरि आणै।
सरब निरंतरि काटै माया। सो घरबारी कहिए निरंजन की काया॥४४॥
गिरही सो जो गिरहै काया। अभि अंतरि की त्यागै माया।
सहज सील का धरै सरीर। सो गिरही गंगा का नीर॥४५॥
अमरा निरमल पाप न पुंनि। सत रज बिबरजित सुंनि।
सोहं हंसा सुमिरै सबद। तिहिं परमारथ अनन्त सिध॥४६॥
पाषंडी सो काया पषालै। उलटि पवन अगनि प्रजालै।
व्यंद न देई सुमनैं जाण। सो पाषंडी कहिए तत्त समांन॥४७॥
मनवां जोगी गाया मढी। पंच तत्त ले कंथा गढी।
षिमा षड़ासण ग्यान अधारी। सुमति पावड़ी डंड बिचारी॥४८॥
चालत चंदवा षिसि षिसि पड़ै। बैठा ब्रह्म अगनि परजलै।
आडै आसणि गोटिका बंध। जावत प्रथिमी तावत कंध॥४९॥
यहु मन सकती यहु मन सीव। यहु मन पांच तत्त का जीव।
यहु मन लै जै उन मन रहै। तौ तीनि लोक की बातां कहै॥५०॥
अवधू नव घाटी रोकि लै बाट। बाई बणिजै चौसठि हाट।
काया पलटै अबिचल बिध। छाया बिबरजित निपजै सिध॥५१॥
अवधू दंम कौं गहिबा उनमनि रहिबा, ज्यूं बाजंबा अनहद तूरं।
गगन मण्डल मैं तेज चमंकै, चंद नहीं तहां सूरं॥५२॥
सास उसास बाइ कौ भषिबा, रोकि लेहु नव द्वारं।
छठै छमासि काया पलटिबा, तब उनमँनीं जोग अपारं॥५३॥
अवधू सहंस्र नाड़ी पवन चलैगा, कोटि झमंकै नादं।
बहतरि चंदा बाई सोष्या किरणि प्रगटी जब आदं॥५४॥
अमावस के घरि झिलिमिलि चंदा, पूनिंम कै घरि सूरं।
नाद कै घरि ब्यंद गरजै, बाजंत अनहद तूरं॥५५॥

उलटंत नादं पलटंत ब्यंद, बाई कै घरि चीन्हसि ज्यंद।
सुंनि मंडल तहाँ नीझर झरिया, चंद सुरजि लै उनमनि धरिया ॥५६॥
अवधू प्रथम नाड़ी नाद झमंकै, तेजंग नाड़ी पवनं।
सीतंग नाड़ी ब्यंद का बासा, कोई जोगी जानत गवनं ॥५७॥
उठंत पवनां रवी तपंगा बैठंत पवनां चंद।
दहूँ निरंतरि जोगी बिलंबै, बिंद बसै तहाँ ज्वंद ॥५८॥
केता आवै केता जाई, केता मांगै केता खाई।
केता रूष विरष तलि रहै, गोरष अनभै कासौ कहै ॥५९॥
पढ़ि देखि पंडिता रहि देषि सारं, अपणी करणीं उतरिबा पारं।
बदंत गोरषनाथ कहि धू साषी, घटि घटि दीपक (बलै) पणि पसू न (पेषे) आंषी ॥६०॥
सुसबदे हीरा बेधिलै अवधू जिभ्या करि टकसाल।
औगुंन मध्ये गुंन करिलै, तौ चेला सकल संसार ॥६१॥
अभरा तथा तें सूभर भरिया नीझर झरता रहिया।
षांडे थैं षुरसाण दुहेला, यूं सतगुरि मारग कहिया ॥६२॥
प्यंडै होइ तौ पद की आसा, बंनि निपजै चौतारं।
दूध होई तौ घृत की आसा, करणीं करतब सारं ॥६३॥
मन मैं रहिणां भेद न कहिणां, बोलिबा अमृत बांणीं।
आगिला अगनी होइबा अवधू, तौ आपण होइबा पांणीं ॥६४॥
उनमनि रहिबा भेद न कहिबा पीयबा नींझर पांणीं।
लंका छांडि पलंका जाइबा, तब गुरमुष लेबा बांणीं ॥६५॥
नग्री सोभंत बहु जल मूल बिरषा, सभा सोभतं पंडिता पुरषा।
राजा सोभंत दल प्रवांणी, यू सिधा सोभंत सुधि बुधि की वांणीं ॥६६॥
बिरला जाणंति भेदांनिभेदं बिरला जाणंति दोइ पष छेद।
बिरला जाणंति अकथ कहांणीं, बिरला जाणंति सुधिबुधि की बांणी ॥६७॥
उत्तरषंड जाइबा सुंनिफल पाइबा, ब्रह्म अगनि पहरिबा चीरं।
नीझर झरणै अंमृत पीया यूं मन हूवा थीरं ॥६८॥
हिन्दू ध्यावै देहुरा मुसलमान मसीत।
जोगी ध्यावै परमपद जहाँ देहुरा न मसीत ॥६९॥

हिन्दू आषै अलष को, तहाँ राम अछैं न षुदाई ॥७०॥
प्यंडे होइ तौं मरै न कोई, ब्रह्मण्डे देषै सब लोई।
प्यंड ब्रह्मण्ड निरन्तर बास, भणंत गोरष मछ्यन्द्र का दास ॥७१॥
बैठा अवधू लोह की घूंटी, चलता अवधू पवन की मूंठी।
सोवता अवधू जीवता मूवा, बोलता अवधू प्यंजरै सूवा ॥७२॥
गोरष कहै सुणहुरे अवधू जग मैं ऐसै रहणां-
आंषै देषिवा कांनै सुणिबा मुष थैं कछू न कहणां ॥७३॥
नाथ कहैं तुम आपा राषौ, हठ करि बाद न करणां।
यहु जुग हैं कांटे की बाड़ी, देषि देषि पग धरणा ॥७४॥
गोरष कहैं सुणौं रे अवधू सुसूपाल थैं डरिये।
ले मुदिगर की सिर मैं मेलै, तौ बिनही षूटी मरिये ॥७५॥
दृष्टि अग्रज्ञ दृष्टि लुकाइबा, सुरति लुकाइबा कांनं।
नासिक अग्रे पवन लुकाइबा, तब रहि गया पद निरबांनं ॥७६॥
अवधू मनसा हमारी गींद बोलिये, सुरति बोलिये चौगानं।
अनहद ले षेलिबा लागा, तब गगन भया मैदानं ॥७७॥
पंच तत सिधां मुडाया, तब भेटिलै निरंजन निराकारं।
मन मस्त हस्ती मिलाइ अवधू, तब लूटिलै अषै भण्डारं ॥७८॥
अरध-उरध बिचि धरी उठाई, मधि सुनिं मैं बैठा जाई।
मतवाला की संगति आई, कथंत गोरषनाथ परमगति पाई ॥७९॥
डंडी सो जै आप डंडै, आवत जाती मनसा षंडे।
पंचौ इन्द्री का मरदै मांन, सो डंडी कहिये तत समांन ॥८०॥
पाया लो भल पाया लो सबद थांन सहेती थीति।
रूप संहेता दीसण लागा, तब सर्व भई परतीति ॥८१॥
अरधंत कवत उरधंत मध्ये, प्रांण पुरिस का बासा।
द्वादस हंसा उलटि चलैगा, तब हीं जोति प्रकासा ॥८२॥
आसण बैसिबा पवन निरोधिबा, थांन-मांन सब धंधा।
बदंत गोरषनाथ आतमां विचारंत, ज्यूं जल दीसै चंदा ॥८३॥

****
गोरष बोलै सुणिरे अवधू, पंचौ पसर निबारी।
अपणी आत्मां आब बिचारी, तब सोवौ पान पसारी॥८४॥
असार न्यंद्रा बैरी काल, कैसैं कर, रखिबा गुरु का भण्डार।
असार तोड़ो, निंद्रा मोड़ौ, सिव सकती ले करि जोड़ौ॥८५॥
तब जांनिबा अनाहद का बंध, ना पड़ै त्रिभुवन नहीं पड़ै कंध।
रकत की रेत अंग थै न छूटै, जोगी कहतां हीरा न फूटै॥८६॥
सबद एक पूछिबा कहौ गुरु दयालं, बरिधि थै क्यूं करि होइबा बालं।
फूल्या फूल कली क्यूं होई, पूछें कहै तौ गोरष सोई॥८७॥
सुणौ हो देवल तजौ जंजालं, अमिय पीवत तब होइना बालं।
ब्रह्म अगनि सींचत मूलं, फूल्या फूल कली फिरि फूलं॥८८॥
उलटया पवनां गगन समोइ, तब बाल रूप परतषि होई।
उदै ग्रहि अस्त हेम ग्रहि पवन मेला, बंधिलै हस्तिय निज साल मेला॥८९॥
बारा कला सोषै सोला कला पोषं,चारि कला साधै अनन्त कला जीवै।
ऊरम धूरम जोती ज्वाला सीधि, साधन्त चारि कला पीवै॥९०॥
असाध साधंत गगन. गाजंत, उनमनी लागंत ताली।
उलटंत पवनं पलटंत बांणीं, अपीव पीवत जे ब्रह्मग्यांनी॥९१॥
अलेष लेषंत अदेष देषंत, अरस परस ते दरस जांणीं।
सुंनि गरजंत बाजंत नाद, अलेष लेषंत ते निज प्रवांणीं॥९२॥
निहचल घरि बैसिबा पवन, निरोधिबा कदे न होइगा रोगी।
बरस दिन में तीनि बर काया पलटिबा, नाग बंग बनासपती जोगी॥९३॥
षोडस नाड़ी चन्द्र प्रकास्या, द्वादस नाड़ी मांनं।
सहंस्र नाड़ी प्रांण का मेला, जहां असंष कला सिव थांनं॥९४॥
अवधू ईड़ा मारग चन्द्र भणीजै, प्युंगुला मारग भांमं।
सुषमनां मारग बांणी बोलिये, त्रिय मूल अस्थांनं॥९५॥
अवधू काया हमारी नालि बोलिये, दारू बोलिये पवनं।
अगनि पलीता अनहद गरजै, व्यंद गोला उड़ि गगनं॥९६॥
काजी मुलां कुरांण लगाया, ब्रह्म लगाया बेदं।
कापड़ी संन्यासी तीरथ भ्रमाया न पाया नृबांण पद का भेवं॥९७॥

देवल जात्रा सुंनि जात्रा, तीरथ जात्रा पांणीं।
अतीत जात्रा सुफल जात्रा, बोलै अंमृत बांणीं ॥९८॥
अबरा धरे बिचारिया, घर या ही मैं सोई।
धर अधर परचा हूवा, तब उती नाहीं कोई ॥९९॥
ऊभा मारूं बैठा मारूं, मारूं जागत सूता।
तीनि लोक भग जाल पसार्‌या कहां जाइगौ पूता ॥१००॥
ऊभा षंडौ बैठा षंडौ, षंडो जागत सूता।
तिहूं लोक तैं रहूँ निरंतरि, तौ गोरख अवधूता ॥१०१॥
न्यद्रा कहै मैं अलिया बलिया, ब्रह्मां विष्णु महादेव छलिया।
न्यंद्रा कहै हूँ षरी विगूती, जागै गोरष हूँ पड़ि सुती ॥१०२॥
जोगी सो जे मन जोगवै, बिन बिलाइत राज भोगवै।
कनक कांमनीं त्यागें दोइ, सो जोगेश्वर निरभै होइ ॥१०३॥
संन्यासी सोई करै सर्ब नास, गगन मण्डल महि मांडै आस।
अनदह सूं मन उनमन रहै, सो संन्यासी अगम की कहै ॥१०४॥
लाल बोलंती अम्हे पारि उतरिया, मूढ रहै उर वारं।
थिति बिहूंणां झूठा जोगी, ना तस वार न पारं ॥१०५॥
ऊलटिया पवन षट चक्र बेधिया, तातै लोहै सोषिया पांणीं।
चन्द्र सूर दोऊ निज घरि राष्या, ऐसा अलष बिनांणीं ॥१०६॥
नाद हमारै बावै कवन नाद बजाया तूटै पवन।
अनहद सबद बाजता रहै, सिध संकेत श्री गोरष कहै ॥१०७॥
सुणि गुणवंता सुणि बधिवंता, अनन्त सिधां की बांणीं।
सीस नवावत सत गुर मिलिया, जागत रैंणि विहांणीं ॥१०८॥
भिष्या हमारी कामधेनि बोलिये, संसार हमारी वाड़ी।
गुर परसादै भिष्या षाइबा, अंतिकालि न होइगी भारी ॥१०९॥
बड़े बड़े कूले मोटे मोटे पेट, नहीं रै पूता गुरू सौं भेंट।
षड़ षड़ काया निरमल नेत, भई रे पूता गुरू सौं भेंट ॥११०॥
निरति न सुरति जोगं न भोगं, जुरा मरण नहीं तहाँ रोगं।
गोरष बोलैं एकंकार, नहिं तहैं बाचा ओअंकार ॥१११॥

उदै न अस्त राति न दिन, सरबे सचराचर भाव न भिन।
सोई निरंजन डाल न मूल, सब व्यापीक सुषम न अस्थूल॥११२॥
ब्रह्माण्ड फूटिबा नगर सब लूटिबा, कोई न जांणवा भेवं।
बदंत गोरषनाथ प्यंड दर जब घेरिबा, तब पकड़िबा पंच देवं॥११३॥
अहंकार तुटिबा निराकार फूटिबा, सोषीला गंग जमुन का पानीं।
चन्द सूरज दोउ सनमुषि राषिला, कहो हो अबधू तहां की सहिनांणी॥११४॥
चेता रे चेतिबा आपा न रेतिबा, पंच की मेटिबा आसा।
बदंत गोरष सति ते सूरिवां उनमनि मन मैं बास॥११५॥
सिध क संकेत बूझिलै सूरा, गगन अस्थांनि बाइलै तूरा।
मींमा के मारग रोपीलै भांणं, उलट्या फूल कली मैं आंणं॥११६॥
बाल बासतं तहां प्रगट्या षेलं, द्वादस अंगुल गगन घरि मेलं।
बदतं गोरष पूतां होइबा चिराई, न पडंत काया न जंम घरि जांई॥११७॥
अंन का मास अनिल का हाड, तत का बन्द भषिबा बाई।
बदंत गोरषनाथ पूता होइबा चिंराई, न पड़ै घट न जंमघरि जाई॥११८॥
ॐ लोहा पीर। ताँबा तकबीर,
रूपा महंमद सोना षुदाई, दुहुँ बिचि दुनियां गोता षाई।
हम तो निरालंभ बैठे देषत रहैं ऐसा, एक सुषन बाबा रतनहाजी कहै।॥११९॥
कहणि सुहेली रहणि दुहेली कहणि रहणि बिन थोथी।
पढ्या गुंण्या सूबा बिलाई षाया पंडित के हाथि रह गई पोथी॥१२०॥
कहणि सुहेली रहणि दुहेली, बिन षायां गुड़ मीठा।
खाई हींग कपूर बषांणै गौरष कहै सब झूठा॥१२१॥
मूरिष सभा न बैसिबा अवधू पंडित सौं न करिबा बादं।
राजा संग्रामे झूझ न करबा हेलै न षोइबा नादं॥१२२॥
हिरदा का भाव हाथ मैं जाणिये यहु कलि आई षोटी।
बदंत गोरष सुणौ रे अवधू करवै होई सु निकसै टोटी॥१२३॥
जल कै संजमि अटल अकास, अन कै संजमि जोति प्रकास।
पवनां संजमि लागै बंद, ब्यंद कै संजमि थिरह्वै कन्द॥१२४॥

सबद बिंदौ रे अवधू सबद बिंदौ, थांन मांन सब धंधा।
आतमां मधे प्रमातमां दीसै, ज्यौं जल मधे चंदा॥१२५॥
आसण दिढ अहार दिढ जै न्यंद्रा दिढ होई।
गोरष कहै सुणौ रे पूता मरै न बूढ़ा होई॥१२६॥
कोई न्यंदै कोई ब्यंदै कोई करै हमारी आसा।
गोरष कहै सुणौ रे अवधू यहु पंथ षरा उदासा॥१२७॥
इक लष सींगणि नव लष बांन। बेध्या मींन गगन अस्थांन।
बेध्या मींन गगन कै साथ। सति सति भाषंत श्रीगोरषनाथ॥१२८॥
तूटी डोरी रस कस बहै। उनमनि लागा अस्थिर रहै।
उनमनि लागा होई अनन्द। तूटी डोरीं बिनसै कन्द॥१२९॥
सबद बिन्दौ अवधू सबद बिन्दौ सबदे सीझंत काया।
निनांणवै कोडि राजा मस्तक मुडाइले परजा का अन्त न पाया॥१३०॥
षरतर पवनां रहै निरन्तरि। महारस सीझै काया अभिअन्तरि।
गोरष कहै अम्हें चंचल ग्रहिया। सिव सक्ती ले निज घरि रहिया॥१३१॥
पेट कि अगनि बिबरजित दिष्टि को अगनि षाया।
ग्यांन गुरू का आगै ही होता पणि बिरलै अवधू पाया॥१३२॥
अगम अगोचर रहै निहकांम। भंवर गुफा नांही बिसराम।
जुगति न जांणैं जागैं राति। मन कांहू कै न आवै हाथि॥१३३॥
नव नाडी बहोतरि कोठा। ए अष्टांग सब झूठा।
कूंची ताली सुषमन करै उलटि जिभ्या ले तालू धरै॥१३४॥
पंडित ग्यांन मरौ क्या झूझि। औरै लेहु परमपद बूझि।
आसण पवन उपद्रह करैं। निसिदिन आरम्भ पचि-पचि मरैं॥१३५॥
उनमन जोगी दसवैं द्वार। नाद ब्यंद ले धूंधूंकार।
दसवे द्वार देइ कपाट। गोरष षोजी औरै बाट॥१३६॥
आंरम्भ जोगी कथीला एकसार षिण षिण जोगी करै सरीर विचार।
तलबल ब्यंद धरिबा एक तोल। तब जांणिबा जोगी आरम्भ का बोल॥१३७॥
घट ही रहिबा मन नजाई दूर। अह निस पीवै जोगी बारूणी सूर।
स्वाद बिस्वाद बाई काल छींन।तब जांनिबा जोगी घट का लछीन॥१३८॥

परचय जोगी उनमन षेला। अहनिसि इंछया करै देवता स्यूं मेला।
षिन षिन जोगी नांनां रूप। तब जांनिबा जोगी परचय सरूप॥१३९॥
निसपती जोगी जांनिबा कैसा। अगनी पांणीं लोहा मांनैं जैसा
राजा परजा संमि करि देष। तब जांनिबा जोगी निसपतिका भेष॥१४०॥
अवधू षारै षिरै षाटै झरै मीठै उपजै रोग।
गोरष कहै सुणौ रे अवधू अंनै पांणीं जोगं॥१४१॥
बजरी करंतां अमरी राषे अमरि करंतां बाई।
भोग करंतां जे ब्यंद राषै ते गौरष का गुरभाई॥१४२॥
भग मुषि ब्यद अगनि मुषिपारा। जो राषे सो गुरू हमारा॥१४३॥
जिभ्या स्वाद तत तन षोजै हेला करै गुरू बाचा।
अगनि बिहूँणां बंध न लागै ढलकि जाइ रस काचा॥१४४॥
अवधू ईश्वर हमारै चेला भणींजै मछींद्र बोलिये नाती।
निगुरी पिरथी परलै जाती ताथै हम उल्टी थापना थापी॥१४५॥
भरि भरि षाइ ढरि ढरि जाइ। जोग न पूता बडी बलाइ।
संजय होइ बाइ संग्रहौ। इस विधि अकल पुरिस कौ गहौ॥१४६
षांये भीं मरिये अणषांये भी मरिये।गोरष कहै पूता संजमि हीं तरिये।
मधि निरन्तर कीजै बास। निहचल मनुवा थिर होइ सास॥१४७॥
पवन हीं जोग पवन हीं भोग। पवन हीं हरै छतीसौ रोग।
या पवन कोई जांणै भेव। सो आपैं करता आपैं देव॥१४८॥
ब्यंद हीं जोग ब्यंद हीं भोग। ब्यंद हीं हरै चौसठि रोग।
या बिंद का कोई जांणै भेव। सो आपैं करता आपैं देव॥१४९॥
साच का सबद सोना का रेख निगुरां को चाणक सगुरा कौं उपदेश।
गुरू का मुंड्या गुंण मैं रहै। निगुरा भ्रमै औगुण गहै॥१५०॥
अवधू बूझना ते भूलना नहीं अनबूझमग हारै।
सूंने जंगल भटकत फिरहीं, मारि लिहीं बटमारै॥१५१॥
गुरू की बाचा षोजैं नाहीं, अहंकारी अहंकार करै।
षोजी जीवैं षौजि गुरू कौं, अहंकारी का प्यंड परै॥१५२

यंद्री का लड़बड़ा जिभ्या का फूहड़ा। गोरष कहै ते पर्तषि चूहड़ा।
काछ का जमी मुष का सती। सो सत पुरूष उंतमो कथी ॥१५३॥
अवधू मन चंगा तो कठौती ही गंगा।बांध्या मेल्हा तौ जगत्र चेला।
बदंत गोरष सति सरूप। तत बिचारैं ते रेष न रूप॥१५४॥
सीषि साषि बिसाह्या बुरा। सुपिनैं मैं धन पाया पड़ा।
परषि परषि लै आगैं धरा। नाथ कहै पूता षोटा न षरा॥१५५॥
आओ देबी बसो। द्वादिस अगुंल पैसौ।
पैसत पैसत होइ सुष। तब जनम मरन का जाइ दुष॥१५६॥
स्वामी काची बाई काचा जिंद। काची काया काचा बिंद।
क्यूंकरि पाकै क्यूंकरि सीझै। काची अगनीं नीर न षीजै॥१५७॥
तौ देबी पाकी बाई पाका जिंद। पाकी काया पाका बिंद।
ब्रह्म अगनि अषंडित बलै। पाका अगनीं नीर परजलै॥१५८॥
सोवत आडां ऊभां ठाढां अगनीं ब्यंद न बाई।
निश्चल आसन पवनां ध्यानं अगनीं ब्यंद न जाई॥१५९॥
उगवंत सूर पत्र पूर काल कंटक जाइ दूर।
नाथ का भण्डार भर पूर रिजक रोजीसदा हजूर॥१६०॥
थांन मांन गुर ग्यांन। बेधां बोध सिधां परग्रांम।
चेतनि बाला भ्रम न बहै। नाथ की कृपा अषंडित रहै॥१६१॥
अधिक तत्त ते गुरु बोलिये हींण तत ते चेला।
मन मांनैं तौ संगि रमौ नहीं तौ रमौ अकेला ॥१६२॥
चलन्त पंथा तुटंत कन्था उडंत षेहा बिचलन्त देहा।
छूटंत ताली हरि सूं नेहा॥१६३॥
पंथि चलै चलि पवनां तूटै नाद बिंद अरु बाई।
घट हीं भींतरि अठसठि तीरथ कहां भ्रमै रे भाई॥१६४॥
जोगी होइ पर निंद्या झषै। मद मांस अरु भांगि जो भषै।
इकोतरसै पुरिषा नरकहि जाई। सति सति भाषंत श्रीगोरष राई॥१६५॥
अवधू मांस भषंत दया धरम का नास। मद पीवत तहां प्रांण निरास।
भांगि भषंत ग्यांन ध्यांन षोवंत।जम दरबारी ते प्रांणीं रोवंत॥१६६॥

चालिबा पंथा कै सींबा कन्था। धरिबा ध्यांनं कै कथिबा ग्यांनं।
एकाएकी सिध कै संग। बदंत गोषनाथ पूता न होयसि मन –भग ॥१६७॥
पढ़ि देखि पंडिता ब्रह्म गियांनं। मूवा मुकति बैकुण्ठा थांनं।
गाड्या जाल्या चौरासी मैं जाइ। सति सति भाषंत (श्री) गोरषराइ ॥१६८॥
आकास तत सदा–शिव जाणं। तसि अभिअंतरि पद निरबांण।
प्यंडे परचांनैं गुरमषि जोइ। बाहुडि आबा गवन न होइ॥१६९॥
ऊरम धूरम ज्वाला जोति। सुरजि कला न छीपै छोति।
कंचन कवल किरणि परसाइ। जल मल दुरगन्ध सर्ब सुषाइ॥१७०॥
घटि घटि सूण्यां ग्यांन न होइ। बनि बनि चन्दन रुष न कोइ।
रतन रिधि कवन कै होइ। ये तत बूझै बिरला कोइ॥१७१॥
नींझर झरणैं अमींरस पीवणां षट दल बेध्या जाइ।
चंद बिहूंणां चांदिणां तहां देष्या श्री गोरषराइ॥१७२॥
कै मन रहै आसा पास। कै मन रहै परम उदास।
कै मन रहै गुरु के ओलै। कै मन रहै कांमनि कै षोले॥१७३॥
दाबि न मारिबा षाली न राषिबा जांनिबा अगनि का भेवं
बूढी हीं थै गुरुबानी होइगी सति सति भाषंत श्री गोरष देवं॥१७४॥
बाहरि न भीतरि नेड़ा न दूर। षोजत रहे ब्रह्मा अरु सूर।
सेत फटक, मनि होरैं बीधा। इहि परमारथ श्री गोरष सीधा॥१७५॥
आवति पंच तत कूं मो है जाती छैल जगावै।
गोरष पूछैं बाबा मछिन्द्र या न्यन्द्रा कहां थैं आवै॥१७६॥
गगन मण्डल मैं सुंनि द्वार। बिजली चंमकै घोर अंधार।
ता महि न्यन्द्रा आवै जाइ। पंच तत मैं रहै समाइ॥१७७॥
ऊभा बैठा सूतां लीजै। कबहूँ चित भंग न कीजै।
अनहद सबद गगन मैं गाजे। प्यंड पड़ै तो सतगुर लाजै॥१७८॥
एकलौ बीर, दूसरौ धीर, तीसरौ षटपट चौथौ उपाध।
दस पंच तहाँ वाद बिवाद॥१७९॥
एकाएकी सिध नांउं दोइ रमति ते साधवा।
चारि पंच कुटुम्ब नांउ दस बीस ते लसकरा॥१८०॥

मनमुषि जातागुर मुषि लेहु। लोही मास अगनि मुषि देहु।
मात पिता की मेटौ धात। ऐसा होइ बुलावै नाथ ॥१८१॥
नाद नाद सब कोइ कहै। नादहिं ले को बिरला रहै।
नाद बिंद है फीकीसिला। जिहिं साध्या ते सिधैं मिला ॥१८२॥
दरवेस सोइ जो दरकी जांणैं। पंचे पवन अपूठां आंणै।
सदा सुचेत रहै दिन राति। सो दरवेस अलह की जाति ॥१८३॥
बैसंत पूरा रमंति सूरा, एक रसि राषंति काया।
अंतरि एक रसि देषिबा बिचरंति गोरषराया ॥१८४॥
नाद बिंद बजाइले दोऊ पूरिले अनहद बाजा।
एकंतिका बासा सोधि ले भरथरी कहै गोरष महिन्द्रा का दासा ॥१८५॥
सूर माहिं चंद चंद माहिं सूर। चपंपि तीनि तेहुड़ा बाजल तूर।
भणन्त गोरषनाथ एक पद पूरा। भाजंत भौदू साधंति सूरा ॥१८६॥
छत्र पवन निरन्तर रहै छीजै काया पंजरा रहै।
मन पवन चंचल निजि गहिया बोले नाथ निरन्तर रहिया ॥१८७॥
इकटी बिकटी त्रिकुटी संधि पछिम द्वारे पवनां बंधि।
षूटै तेल न बूझै दीया बोले नाथ निरन्तर हूवा ॥१८८॥
ज्यूं ज्यूं भुयंगम आवै जाइ सुरही धरि नहीं गरड़ रहाइ,
तब लग सिध दुलंभ जोग तोयं अहार बिन व्यापे रोग ॥१८९॥
ग्यांन सरीषा गुरु न मिलिया चित्त सरीषा चेला।
मन सरीषा मेलू न मिलिया तीथैं गोरष फिरै अकेला ॥१९०॥
सांग का पुरा ग्यान का ऊरा। पेट का तूटा डिंभ का सुरा।
बदंत गोरषनाथ न पाया जोग। करि पाषंड रिझाया लोग ॥१९१॥
अगनि ही जोग अगिनि ही भोग। अगनि हीं हरै चौसठि रोग।
जो इहि अगनि का जाणै भेव। सो आप ही करता आप ही देव ॥१९२॥
जीवता जोगी अमीरस पीवता अहनिस अषंडित धारं।
दिष्टि मधे अदिष्टि बिचारिबा ऐसा अगम अपारं ॥१९३॥
जीवता बिछायबा मूंवां बोढिबा कबहु न होयबा रोगी।
बरसवै दिन काया पलटिबा यूं कोई कोई बिरला जोगी ॥१९४॥

सूरजे षायबा चन्द्र सोयबा उभै न पीबा पांणी।
जीवता कै तलि मूंवा बिछायबा यूं बोल्या गोरष बांणी॥१६५॥
जहां गोरष तहाँ ग्यांन गरीबी दुंद बाद नहीं कोई
निसप्रेही निरदाबै षेलै गोरष कहीयै सोई॥१६६॥
गिगनि मण्डल मैं गाय बियाई कागद दही जमाया।
छांछि छांणि पिंडता पीवीं सिधां माषण षाया॥१६७॥
गूदड़ी जुग च्यारि तै आई। गूदड़ी सिध साधिकां चलाई।
गूदड़ी मैं अतीत का बासा। भणंत गोरषनाथ मछिन्द्र का दासा॥१६८॥
असाध कन्द्रप बिरला साधंत कोई। सुर नर गण गन्ध्रप ब्याप्या बालि सुग्रीव भाई।
ब्रह्मा देवता कन्द्रप ब्याप्या। यन्द्र सहंस्त्र भग पाई॥१६६॥
अठयासी सहंस्त्र रषीसर कन्द्रप ब्याप्या असाधि विष्न की माया।
यंन कन्द्रप ईस्वर महादेव नाटारम्भ नचाया॥२००॥
विष्न दस अवतार थाप्या असाधि कन्द्रप जती गोरषनाथ साध्या।
जनि नीर्झर झरंता राष्या॥२०१॥
आसति छै हो पिंडता नासति नांही। अनभै होय परतीति निरन्तरिमाहीं।
ग्यांन षोजि अमे बिग्यांन पाया। सतिसति भाषंत सिध सति नाथ राया॥२०२॥
माता हमारी मनसा बोलिये पिता बोलिये निरंजन निराकार।
गुरु हमारे अतीत बोलिये जिनि किया पिण्ड का उधारं॥२०३॥
आपा भांजिबा सतगुर बोजिबा जोग पंथ न करिबा हेला।
फिरि फिरि मनिषा जनम न पायबा करि लै सिध पुरिस सूं मेला॥२०४॥
थंभ बिहूँणी गगन रचीलै तेल बिहूँणी बाती।
गुरु गोरक्ष के वचन पतिआया तब द्यौंस नहीं तहां राती॥२०५॥
पण्डित ग्यांनी षर तर बोलै सति का सबद उछेदै।
काया कै बलि करड़ा बोलै भीतरि तत्त न भेदै॥२०६॥
महमां धरि महमां कूं मेटै सति का सबद बिचारी।
नांन्हां होय जिनि सतगुर षोज्या तिन सिर की पोट उतारी॥२०७॥
एक कांमध्येनि बारि सिधि कै गनन सिषर लै बांधी।
लागि जीव ऊपरि बारि सिधि की ल्यौ निरंजन सूं सांधी॥२०८॥

****

आफू षाय भांगि भसकायै। ता मैं अकलि कहां तै आवै।
चढतां पित्त ऊतरतां बाई। तातैं गोरष भांगि न बाई॥२०९॥
मिंदर छाड़ै कुटी बंधावै। त्यागै माया और मंगावै।
सुन्दरि छाड़ै नकटी बासै। तातैं गोरष अलगै न्हासै॥२१०॥
त्रिया न स्वांति बैद न रोगी रसायणी अर जाचि षाय।
बूढा न जोगी सूरा न पीठि पाछैं घाव यतनां न मानैं श्रीगोरषराय॥२११॥
हंड ब्रह्मण्ड चहोड़ीया मानूं बेस्या अंन।
कोई कोई कोरड़ रह गया यूं भाषै नाथ रतंन॥२१२॥
निंद्रा सुपनैं बिद कूं हरै। पंथ चलंतां आतमां मरै।
बैठां षटपट ऊभां उपाधि। गोरष कहै पूता सहज समाधि॥२१३॥
सूकै कण्ठ अरू भूष संतापै। देह बिसर अर निंद्रा ब्यापै।
बुधि बिन बकै विकल होय जाय। तातैं गोरष भांगि न षाय॥२१४॥
रूसता रूठा गोला-रोगी। भोला भछिक भूषा भोगी।
गोरष कहै सरबटा जोगी। यतनां मैं नहीं निपजै जोगी॥२१५॥
अवधू अहार कूं तोड़िबा पवन कूं मोडिबा ज्यं कबहु न होयबा रोगी।
छठै छमासि काया पलटंत नाग बंग बनासपती जोगी॥२१६॥
सूरां का पंथ हास्यां का बिसराम सुरता लेहु बिचारी।
अपरचे पिण्ड मिथ्या षात है अंति कालि होयगी भारी॥२१७॥
उलटी सकति चढ़ै ब्रह्मण्ड नष सष पवनां षेलै सरबंग।
उलटि चन्द्र राह कूं ग्रहै। सिध संकेत जती गोरष कहै॥२१८॥
धरे अधर बिचारीयां धरी याही मैं सोय।
धरे अधर परचा हूवा तब दुतीया नाहीं कोय॥२१९॥
जिभ्या इन्द्री एकै नाल। जो राषै सो बंचै काल।
पण्डित ग्यांनी न करसि गरब। जिभ्या जीती जिन जीत्या सरब॥२२०॥
गोरष कहै हमारा षरतर पंथ। जिभ्या इन्द्री दीजै बन्ध।
लोग जुगती मैं रहें समाय। ता लोगी कूं काल न षाय॥२२१॥
बरष एक देखिलै हो पण्डिता तत एक चीन्हिबा सबदैं सुरति समाई।
गोरषनाथ बोलै भ्रम न भूलिबा रे भाई॥२२२॥

अबूझि बूझिलै हो पण्डिता अकथ कथिलै कहांणी।
सीस नवांवत सतगुर मिलीया जागत रैंण बिहांणी ॥२२३॥
विद्या पढ़ि र कहावै ग्यांनी। बिनां अविद्या कहै अग्यांनी।
परम तत का होय न मरमी। गोरष कहै ते महा अधरमी ॥२२४॥
पंथ चले चलि पवनां तूटै तन छीजै तत जाई।
काया तै कछू अगम बतावै ताकी मूंडू माई ॥२२५॥
महमंद महमंद न करि काजी महमंद का बौहोत बिचारं।
महमंद साथि पैकंबर सीधा ये लष अजी हजारं ॥२२६॥
जीव सीव संगे बासा। बधि न षाइबा रूध्र मासा।
हंस घात न करिबा गोतं। कथंत गोरष निहारि पोतं ॥२२७॥
जीव क्या हतियो रे प्यंड धारी। मारि लै पंचभू भ्रगला।
चरै थारी बुधि बाड़ीं जोग का मूल है दया दाण।
कथंत गोरष मुकति लै मानवा मारि लै रै मन द्रोही।
जाकै बप बरण मास नहीं लोही ॥२२८॥
जिनि मन ग्रासे देव दाण। सो मन मारिले गहि गुरु ग्यांन बांण ॥२२९॥
जोगी सो जो राषै जोग। जिभ्या यंद्री न करै भोग।
अंजन छोडि निरंजन रहै। ताकू गोरष जोगी कहै ॥२३०॥
सुंनि ज माई सुंनि ज बाप। सुनि निरंजन आपै आप।
सुंनि कै परचै भया सथीर। निहचल जोगी गहर गम्भीर ॥२३१॥
तजौ कुलती मेटौ भंग। अह निसि राषौ ओजुद बंधि।
सरब संजोग आवै हाथि। गुरु राषै निरबाण समाधि ॥२३२॥
अकुच कुचीया बिगसिया पोहा। सिधि परिजलि उठी लागिया धुवा।
कहे गोरषनाथ धुवा प्राण। ऐसे पिण्ड का परचा जाणै प्राण ॥२३३॥
अवधू यो मन जात है याही तै सब जांणि।
मन मकड़ी का ताग ज्यूं उलटि अपूठौ आंणि ॥२३४॥
जे आसा तो आपदा जे संसा तो सोग।
गर मुषि बिना न भाजसी (गोरष) ये दून्यों बड़ रोग ॥२३५॥

इस ओजुदा मैं मारि लै गोता, कछु मगज भीररि ष्याल रै।
पंच कटार है भीतरि निमस करि बेहाल रै॥२३६॥
व्यंद व्यंद सब कोई कहै। महाब्यंद कोइ बिरला लहै।
इह ब्यंद भरोसे लावै बंध। असथिरि होत न देषो कन्ध॥२३७॥
उलटै मूल डाल नहीं रहै। फाड़ि कछोटा रात्वौ बहै।
न वोह छीजै ना वोह गलै। ब्यंद नहीं सो भगभुष ढलै॥२३८॥
बिणि बैसन्दर जोति बलत है गुर प्रसादे दीठी।
स्वामी सीला अलुणी कहिये, जिनि चीन्हा तिन दीठी॥२३६॥
ऊजल मीन सदा रहै जल मैं सुकर सदा मलीना।
आतम ग्यांन दया बिणि कछु नाहीं कहा भयौ तन षीणा॥२४०॥
धोतरा न पीवो रे अवधू भांगि न षावौ रे भाई।
गोरष कहै सुणो रे अवधू या काया होयगी पराई॥२४१॥
सांइ सहेली सुत भरतार सरब सिसटि कौ एकौ द्वार।
पैसता पुरसि निकसता पूता ता कारणि गोरष अवधूता॥२४२॥
राष्या रहै गमाया जाय सति सति भाषंत श्री गोरषराय।
येकै कहि दुसरै मानी गोरष कहै वो बड़ों ग्यानी॥२४३॥
च्यन्त अच्यन्त ही उपजै च्यन्ता सब जुग षीण।
जोगी च्यन्ता बीसरै तौ होई अच्यन्तहि लीन॥२४४॥
गिरही को ग्यांन अमली को ध्यांन। बुचा को कान बेश्या को मान।
बैरागी अर माया स्यूं हाथ या पांचां को एको साथ॥२४५॥
गिरही होय करि कथै ग्यांन, अमली होय करि धरै ध्यान।
बैरागी होय करै आसा, नाथ कहै तीन्यों षासा पासा॥२४६॥
रांड़ मुवा जती, धाये भोजन सती धन त्यागी।
नाथ कहै वे तीन्यौ अभागी॥२४७॥
पढि पढि पढि केता मुवा कथि कथि कथि कहा कीन्ह।
बढि बढि बढि बहु घटि गया पारब्रह्म नहीं चीन्ह॥२४८॥
सति सति बोलै गोरष राणा।
तीनि जणो का सङ्ग निवारौ नकटा बूचा काणा॥२४६॥

कदे न सोभै सुन्दरी सनकादिक के साथि।
जब तब कलंक लगाइसी काली हांडी हाथि॥२५०॥
पासि बैठी सोभै नहीं रमाई भुंडि।
गोरष कहै असतरी कहा सलह कह मुंडि॥२५१॥
जरणा जोगी जुगि जुगि जीवै झरणा मरि मरि जाय।
षोजै तन मिलैं अविनासी जगह अमर पद पाय॥२५२॥
जप तप जोगी संजम सार। साले कन्द्रप कीया छार।
येहा जोगी जग मैं जोय। दूजा पेट भरै कब कोय॥२५३॥
जोगेश्वर की इहै परछया सबद बिचारया षेलै।
जितना लाइक बासणा होवैं, तेतौ तामैं मेल्है॥२५४॥
चापि भरै तो बासण फूटै बारे रहै तौ छीजै।
बसत घणेरी बासण वोछा कहो गुर क्या कीजै॥२५५॥
अवधू सहजै लैणा सहजै दैणा सहजै प्रीति ल्यौ लाई।
सहजै सहजै चलैगा रै अवधू तौ बासण करैगा समाई॥२५६॥
तूंबी मैं तिरलोक समाया त्रिवेणी रिब चन्दा।
बूझो रे ब्रंभ गियानी अनहद नादं अभंगा॥२५७॥
सत्यो सीलं दोब असनांन त्रितीये गुर बाधक।
चत्रथे षीषा असनान पंचमे दया असनान।
ये पंच असनान निर्मला निति प्रति करत गोरष बाला॥२५८॥
त्रियाजीत ते पुरिषा गता मिलि भागत ते पुरिषा गता।
बिसासघातगी पुरिषा गता कायरौ तत ते पुरिषा गता।
अभष भषंते पुरिषा गता। सबद हीण ते पुरिषा गता।
उदिक राषंत ते पुरिषा गता। पर त्रिया राचंत ते पुरिषा गता।
सति-सति भाषत गोरष बाला। इतना त्यागि रहो निराला॥२५९-२६०॥
पण्डित भण्डित अर कतवारी। पलटी सभा बिकलता नारी।
अपढ़ बिपर जोणी घरबारी। साथ कहै रै पूता इनका सङ्ग निबारी।।२६१।।
राति गई अध राति गई बालक एक पुकारै।
है कोई नगर मैं सूरा बालक का दु:ख निबारै।।२६२।।

दिसटि पड़ै ते सारी कीमति कीमति सबद उचारं।
नाथ कथै अगोचर वाणी ताका वार न पारं॥२६३॥
सबद हमारा षरतर षांडा, रहणि हमारी साची।
लेषै लिषी न कागद माडी, सो पत्री हम बांची॥२६४॥
मन बांधूंगा पवन स्यूं पवन बांधूंगा मन स्यूं। तब बोलैगा कोवत स्युं।
मन तेरा की माई मुंडू, पवना दउं र बहाई।
मन पवन का गम नहीं, तहाँ रहै ल्यौ लाई॥२६५॥
कोण देस स्यूं आये जोगी, कहां तुम्हारा भाव।
कौण तुम्हारी बहण भाणजी, कहां धरोगे पाव॥२६६॥
पछिम देस स्यूं आये जोगी, उतर हमारा भाव।
धरती हमारी बहण भाणजी, पापी के सिरि पाव॥२६७॥
सकति अहैड़ै मिस रिध, कोस बल स्यूं बागो।
गोरष कहै चालती मारूँ, गुरु तौ लागो॥२६८॥
नाथ कहै मेरा दून्यौ पंथ पूरा। जत नहीं तौ सत का नीसूरा।
जत सत किरिया रहणि हमारी। और बलि बाकलि देवी तुम्हारी॥२६९॥
कथणी कथै सो सिष बोलिये, वेद पड़ै सो नाती।
रहणी रहै तो गुरु हमारा, हम रहता का साथी॥२७०॥
रहता हमारै गुरु बोलिये, हम रहता का चेला।
मन मानै तो संगि फिरै, नहि तर फिरै अकेला॥२७१॥
दरसण माई दरसण बाप, दरसण माहीं आपै आप।
या दरसण का कोई जाणै भेव। सो आपै करता आपै देव॥२७२॥
जिनि जाण्या तिनि षरा पहैचाण्यां, वा अटल स्यूं लो लाई।
गोरष कहै अमें कानां सुणता, सो आंष्या देष्या रै भाई॥२७३॥
बैठां बारै चलत अठारै, सूतां तूटै तीस।
कईथन करंतां चौसटि तूटै, क्यौं भजिवौ जगदीस॥२७४॥
नासिका अग्रे भूं मण्डले, अहनिस रहिबा थीरं।
माता गरभि जनम न आयबा, बहुरि न पीयबा षीरं॥२७५॥
।। इति भगवान गोरक्षनाथ कृत शब्दी सम्पूर्ण ।।

सिद्धेश्वर गोरक्ष कृत पद रचना

बोल्या गोरष घर जोई, ये तत बूझे विरला कोई, मेरे ग्यांनी।
जोज्यो जोज्यो रे जहूं बा बन जोज्या, तत्त राष्यौ तरियाली।
आषण इन्द्री जेणै आप बसि राष्यां तेणै पाया सबै निरंतर, मेरे ग्यांनी।
मन माहै तेणै तन तार्‌या मन बिसवासैं मिलणां।
मन में कुम्भ कलस रस भरिया, तेणे मनवे अलष लाषाया, मेरे ग्यांनी।
पै र जोई नै एद्वा पुरिष पधार्‌या, पुरिष नी पारिषा पाई।
पुरिषै मिलि पुरिष रस राष्या, पुरिषे पुरिष निपाया, मेरे ग्यांनी।
जिहि घरि चंद सूर नहिं, ऊगै, तिहि घरि होसा उजियारा।
तिहां जे आसण पूरो तो सहज का भरौ पियाला, मेरे ग्यांनी।
मन मांहिला हीरा बीधा सो सोधीनं लीणां, सोषांणां सो पीवणां।
मछिंद्र प्रसादै जती गोरष बोल्या, विमल रस जोई जोई नै मिलणां,
मेरे ग्यांनी ॥१॥

सोनां ल्यौ रस सोना ल्यो, मंरी जाति सुनारी रे।
धमणि धमी रस जामणि जांम्यां,
तब गगन महारस मिलिया रै।।
आपै सोनां नै आप सुनारी, मूल चक्र अंगीठा।
अहरणि नाद नै व्यंद हथोडा, घटिस्यूं गगन बईठा।
अषै आरण नै विषै कोइला, सहज फक, दो नलियां।
चंद सूर दौऊ समि करि राष्या आपै आप जु मिलिया।
रीत का कांम मासे की चोरी, रत्ती मै मासा चौरै।
मासा चोरि रहै मासे मैं, इहि विधि गरथै जोरै।
अरधे सोनां, उरधै सोना, मध्ये सोनम् सोनां।
तीनि सुन्यं की रहनीं जानै, ता घटि पाप न पुंनां।
उनमनि डांडी मन, तराजू, पवन कीया गदियांनां।
आपै गोरषनाथ जोषण बैठा, तब सोनां सहज समानां ॥२॥

गुरदेव स्यभ देव सरीर भीतरिये।
आत्मां उत्तिम देव, ताही की न जांणी सेब।
आंन देव पूजि पूजि इमहो मरिये।
नवे द्वार नवे नाथ, तृवेणी जगन्नाथ, दसवैं द्वारि केदार।
जोग जुगति सार तौ भौ तिरिये पारं।
कथंत गोरषनाथ विचारं॥ ३॥

मनसा मेरी व्यौपार बांधौ, पवन पुरषि उतपनां।
जाग्यौ जोगी, अध्यात्म लागौ, कायां पाटण मै जांनां।
इकबास सहस षटसां आदू, पवन परषि जप माली।
इला प्यंगुला सुषमन नारी, अहनिसि बहै प्रनाली।
षटसा षोडि कवल दल धारा, तहां बसै ब्रह्मचारी।
हरु पवन ज फुलन पैठा, नोसै नदी पनिहारी।
गंगा नीर उतारा अवधू, फिरि फिरि बणिजां कीजै।
अरध बहन्ता उरधै लीजै, रवि सस मेला कीजै।
चंद सूर दोऊ गगन बिलुधा, भईला घोर अंधारं।
पंच वाहक जब न्यद्रा पौड्या, पगड्या पौलि पगारं।
काया कंथा, मन जोगोटा, सतगुर मुझ लाषाया।
भणत गोरषनाथ रूड़ा राषौ नगरी चार मलाया॥ ४॥
अवधूं बोल्या तत्त बिचारी, पृथ्वी मै बकबाली।
अष्टकुल परबत जल बिन तिरिया, अदबुद अचंभा भारी।
मन पवन अगम उजियाला रवि ससि तार गयाई।
तीनि राज त्रिविधि कुल नांही, चारि जुग सिधि बाई।
पांच सहस मैं षट अपूठा, सप्त दीप अष्ट नारी।
नव षड पृथी इकबीस मांही, एकादसि एक तारी।
द्वादसी त्रिकुटी यला पिंगुला, चवदसि चित्त मिलाई।
षोडस कवल दल सोल बतीसी, जुरा मरन भी गमाई।

दसवै द्वार निरंजन उनमन बासा, सबदै उलटि समांनां।
भणंत गोरषनाथ मछींद्र नाथ पूता अविचल थार रहांना॥५॥
रमि रमिता सो गहि चोगांनं, काहे भूलत हौ अभिमांनं।
धरन गगन बिचि नहीं अंतरा, केवल मुक्ति मंदांनं।।
एक मैं अनंत अनंत मैं एकै, एकै अनंत उपाया।
अंतरि एक सौ परचा हूवा, तब अनंत एक मै समाया।
अहरणि नाद नै व्यंद हथौडा, रवि ससि षालां पवनं।
मूल चापि डिढ आसणि बैठा, तब मिटि गया आवागवनं।
सहज पलाणं पवन करि घोड़ा, लै लगाम चित्त चबका।
चेतनि असवार ग्यांन गुरु करि, और तजो सब ढबका।
तिल कै नाकै तृभवन सांध्या, कीया भाव विधाता।
सो तौ फिर आपण हीं हूवा, जाकौ ढूंढण जाता।
आस्ति कहूं तौ कोइ न पतीजै, बिन आस्ति क्यूं सीधा।
गोरष बोलै सुणौ मछिंद्र होरे हीरा बीधा॥६॥
तत बणिजील्यौ तत बणिजील्यौ, ज्यूं मोरा मन पतियाई।
सहज गोरषनाथ बणिज कराई, **पंच बलद नौ गाई।**
सहज सुभावै वाषर ल्याई, मोरे मन उड़ियानी आई।
सुरहट घाट अम्हे बणिजारा, सुनि हमारा पसारा।
लेण न जाणौ देव न जाणौ, एद्वा बणज हमारा।
भणंत गोरषनाथ मछिंद्र का पूता, एद्वा वणिज ना अरथी।
करणी अपणी पार उतरणां, वचन लेणां साथी॥७॥
मांहरा बैरागी जोगी, अहनिसि भोगी जोगणि संग न छाड़ै।
मानसरोवर मनसा झूलंति आवै, गगन मंडल मठ मांडै रे।।
कौण अस्थांनिकि तोरा सासू नै सुसरा, कोण अस्थांनकि तोरा बासा।
कौण अस्थांनक तू नै जोगणि भेटी, कहां मिल्या घर बासा।
नाभ अस्थांनक मोरा सासू नै सुसरा, ब्रह्म अस्थांनक मोरा बासा।
इला प्युंगला जोगण भेंटी, सुषमन मिल्या घर बासा।
काम क्रोध बाली चूनां कीधा, कंद्रप कीया कपूरं।

मन पवन दो काथ सुपारा उनमनी तिलक सीदूंर।
ग्यांन गुरु दोऊ तूबा अम्हारे, मनसा चेतनि डांडी।
उनमनी ताती बाजन लागी, यही विधि तृष्णा षाडीं।
एण सतगुरि अम्हे परणांव्या अबला बाल कुवांरी।
मछिंद्र प्रसादे श्री गोरष बोल्या, माया नां भौ टारी॥८॥
तत बेली लो तत बेलो लो अवधू गोरषनाथ जांणी।
डाल न मूल पहुप नहीं छाया विरधि करै बिन पांणी।
काया कुंजर तेरी बाडी अवधू सतगुर बेलि रुपांणी।
पुरिष पांणती करै धणियांणो नीकै बालि घरि जांणी।
मूल एद्वा जेद्वा ससिहर अवधू पांन एद्वा जेद्वा भांणं।
कल एद्वा जेद्वा पूनिम चंदा जोउ-जोउ जांण सुजांणं।
बेलडिया दौं लागी अवधू गगन पहूंती झाला।
जिम जिम बेलो दाझबा लागी तब मेल्है कूंपल डाला।
काटत बेली कूंपल मेल्हा सीचतड़ा कुमलाये।
मछिंद्र प्रसादै जती गोरष बोल्या नित नवेलड़ी पाये॥९॥
बूझौ पंडित ब्रह्म गियांनं गोरष बोले जाण सुजांण।
बीज बिन निसपती मूल बिन बिरषा पान फूल बिन फलिया।
बांझ केरा बालूड़ा प्यंगुल तरवरि च ढ़या।
गगन बिना चंद्रम ब्राह्मांड बिन सूर झूझ बिन रचिया थानं।
ए परमारथ जे नर जांणै ता घटि परम गियांन।
सुंनि न अस्थूल ल्यंग नहीं पूजा धुंनि बिन अनहद गाजै।
बाड़ी बिन पहुप पहुप बिन साइर, घृंनि पवन बिन भृंगा छाजै।
राह बिन गिलिया अगनि बिच जलिया अम्बर बिन जलहर भरिया।
यहु परमारथ कहौ हो पंड़िता, रुग जूग स्यांम अथरबन पढ़िया।
ससंमवेद सौहं प्रकाशं धरती गगन न आदं।
गंग जमुन बिच षेलै गोरख, गुरु मछिंद्र प्रसादं॥१०॥

बदत गोरषनाथ दसवीं द्वारी सुर्ग नै कैदार चडिया।
इकबीस ब्रह्मण्ड ना सिषर ऊपरि ससमवेद ऊचरिया।
द्वादस दल भींतरि रवि सवती ससि षोड़स सिव थानं।
मूल सहंसर जीव सींव घरि उनमनी अचल धियायनं।
नाद अनाहद गरजै गेणं, पछिम ऊग्या भांणं।
दक्षिण डीवी उत्तर नाचे, पाताल पूरब तांणं।
चंद सूर नी मुद्रा कोन्ही, धरणि भस्म जल मेला।
नादा व्यंदो सींगी अकासी, अलष गुरु, ना चेला।
तीन सै साठि थेगली कंयी, इकबीस सहंस छसै धागं।
बहतरि नाड़ी सुई नवासी, बावन वीर सीया लाग।
इली सोधि घरि प्यंगुली पूरी, सुषमनी चढ़ असनांनं।
मछिंद्र प्रसादं जती गोरष बोल्या, निरंजन सिधि नै थानं ॥११॥
गोरष लो गोपालं लो गगन गाइ दुहि पीवै लो।
मही विरोलि अंमी रस पीजै, अनभै लागा जी जै लो।
ममिता बिनां माइ मुई, पिता बिनां मूवा छोरूलो।
जाति बिहूंनां लाल ग्वालिया, अहनिस चारै गोरू लो।
अनहद सबदै संष बुलाया, काल महादल बलिया लो।
काया कै अंतरि गगन मंडल मै, सहजै स्वामी मिलिया लो।
ऐसी गावती घर वारि हमारै, गगन मंडल मैं लांधी लो।
इहि लागि रह्या परिवार हमारा, लेहि निरंतरि बांधी लो।
कानां पूछां सींग विवरजित बर्न विवरजित गाई लो।
मछिंद्र प्रसादै जती गोरष बोल्या, तहां रहै ल्यो लाई लो ॥१२॥
अवधू ऐसा ग्यांन विचारो, ता मैं झिलमिलि जोति उजाली।
जहां जोग तहां रोग न व्यापै, ऐसा परषि गुर करनां।
तन मन सु जे परचा नांही, तो काहे को पचि मरना।
काल न मिट्या जंजाल न छुट्या, तप करि हूवा न सूरा।
कुल का नास करै मति कोई, जै गुर मिलै न पूरा।

सप्त धात का काया पीजरा, ता मांहि जुगति बिन सूबा।
सतगुरु मिलै तो ऊबरै बाबू, नहीं तो परलै हूवा।
कंद्रप रूप कांया का मंडप, आबिरथा कांई उलीचौ।
गोरष कहै सुणौं रे भौंदू, अरंड अंमी कत सीचौं ॥ १३ ॥
आऊं नहीं जाऊं निरंजन नाथ की दुराई।
प्यंड ब्रह्मांड षोजता, अम्हे सब सिधि पाई।
काया गढ़ भीतरि नव लष षाई।
दसवै द्वारि अवधू ताली लाई।
काया गढ़ भीतरि देव देहुरा कासी।
सहज सुभाइ मिले अविनासी।
बदंत गोरषनाथ सुणौ नर लोई।
काया गढ़ जीतैगा बिरला कोई ॥ १४ ॥
अवधू ऐसा नग्र हमारा तिहां जोवो उजू द्वारं।
अरध उरध बजार मड्या है, गोरष कहै विचार।
हरि प्रांण ते पातिसाह साह विचार काजी।
पच तत ते उजहदारं मन पवन दोऊ हस्ती घोड़ा गिनांन ते अपै भंडारं।
काया हमारे सहर बोलिये मन बोलिये हुजदारं।
चेतनि पहरै कोटवाल बोलिये, तौ चोर न झंक द्वारं।
तीनि स साठि चीरा गढ़ रचीले सोलह षणिले षाई।
नव दरवाजा प्रगट दीसै, दसवां लष्यां न जाई।
अठारह भार कोट कठजरा लाइलै, बहतर कोठड़ी निपाई।
नव सुत्र ऊपरै जंत्र फिरै, तब काया गढ़ लिया न जाई।
अनहद घड़ो धड़ियाल बजाइलै परम जोति दुइ दीपक लाई।
काम क्रोध दोई गरदनि मारिलै ऐसी अदली पातिसाही, बाबै आदम चलाई।
तहां सत्य बोबी संतोष साहिजादा, षिमा भगति द्वैहाई।
आदिनाथ नाती मछिंद्रनाथ पूता, काया नगरी गोरष बसाई ॥ १५ ॥

सति सति भाषंत श्री गोरष जोगी, अमे तो रहिबा रंगै।
अलेष पुरसि जिनि गुर मुषि चीन्ह यां, रहिबा तिस कै सगै।
सत जुग मधे जुग एक रचीला, बिसहर एक निपाया।
ग्यांन विहूणां गण गंवध अवधू, सबहीं डसि डसि षाया।
त्रेता जुग मधे जुगदोइ रचीला राम रमाइंणा कीन्हां।
नर बंदर सब लड़ि लड़ि मूये, तिन भी ग्यांन न चीन्हां।
द्वापर जुग मधे जुग तीन रचीलै, बहू डम्बर बहू भार।
कैरों पांडो लड़ि लड़ि मूये, नारद कीया संधारं।
कलिजुग मधं जुग चारि रचीला, चूकिला चार विचार।
घरि घरि ददी घरि घरि बादी, घरि घरि कथण हार।
मछिंद्र प्रसादै जती गोरष बोल्या कोई बिरला पार उतरिया॥१६॥
ऐसा जाप जपौ मन लाई, सोहं सोहं अजपा गाई।
आसण दिढ करि धरौ धियान, अहनिसि सुमिरौ ब्रह्म गियानं।
जाग्रत न्यंद्रा सुलप अहारं, काम क्रोध अहंकार निवारं।
नासा अग्र निजु ज्यौ बाई इड़ा प्यंगुला मधि समाई।
छसैं सहस इकीसौं जाप, अनहद उपजै आपहि आप।
बंक नालि मैं ऊगै सूर, रोम रोम धुनि बाजै तूर।
उलटै कमल संहस्त्रदल वास, भ्रमर गुफा महि जोति प्रकास।
सुणि मथुरा सिव गोरष कहे, परम तत ते साधू लहै॥१७॥
कैसे बोलौं पंडिता देव कौने ठांई,
निज तत निहारतां अम्हें तुम्हें नाही।
पषांणची देवली पषांण चा देव,
पषांण पूजिला कैसे फटीला सनेह।
सरजीव तेड़िया निरजीवी पूजिला,
पाप ची करणी कैसें दूतर तिरीला।
तीरथि तीरथि सनांन करीला
बाहर धोये कैसैं भीतरि भेदीला।

आदिनाथ नाती मछीन्द्रनाथ पूता,
निज तत निहारै गोरष अवधूता ॥१८॥
पंडित जण जण बाद न होई, अणवोल्या अवधू सोई।
पत्रे ब्रह्मा कली बिसना, फल मधे रुद्रम् देवा।
तीनि देव का छेद किया, तुम्हें करहू कौन की सेवा।
येकडंडी दुडंडी त्रियडंडी भगवान हूवा।
विष्न को तिन पार न पायौ, तीरथां भ्रमि भ्रमि मूवा।
येक काल मुहां जटा धारी, ल्यंग उपासिका हूवा।
महादेव की तिन पार न पायौ, राष रौलि रौलि मूवा।
चरि महाधर बारह चेला, येकंकारीं हूवा।
कायम को तिन पार न पायों, जोति बालि बालि मूवा।
चौदसियांनै पूनमिया, जैन व्रतधारी हूवा।
अरहंत कौ तिन पार न पायौ, केस लौचि लौचि मूवा।
येक मुलांनम् दोई कुरांनम्, ग्यारह पूरषाणी हूवा।
अलह कौ तिन पार न पायौ, बंग देइ देइ मूवा।
नौ नाथ नै चौरासी सिधा, आसणधारी हूवा।
जोग को तिन पार ना पायौ, बन षंडा भ्रमि भ्रमि मूवा।
पंच तंत्र की काया विनसी राषि न सक्या कोई।
काल दवन जब ग्यांन प्रकास्या, वदंत गोरष सोई ॥१६॥
भणंत गोरषनाथ काया गढ़ लेबा।
काया गढ़ लेबा जुगे जुगी जीवा।
काया गढ़ भीतरि नौ लष पाई, जंत्र फिरै गढ़ लिया न जाई।
ऊँचे नीचे परवत झिलमिलि पाई, कोठड़ी का पांणी पूरण गढ़ जाई।
इहां नहीं उहां नहीं त्रिकूटी मंझारी, सहज सुनि मैं रहनि हमारी।
आदिनाथ नाती मछिंद्रनाथ पूता,
कायागढ़ जीतिले गोरष अवधूता ॥२०॥

कासौ झूसौ अवधू राई, विपष न दीसै कोई।
जासौ अब झूझौं रे आत्मा राम सोई।
आपण ही मछ कछ आपण ही जाल,
आपण ही धींवर आपण हीं काल।
आपण ही स्यंघ वाघ आपणी ही गाइ।
आपण ही मारीला, आपण ही पाई।
आपण ही टाटी फड़िका, आपन ही बंध,
आपण ही मृतंग, आपण ही कंध।
न्हाइबे को तीरथ न पूजिबे कौ देव,
भणंत गोरषनाथ अलष अभेव॥२१॥
मेरा गुरु तीनि छंद गावै,
ना जाणौं गुर कहां गैला, मुझ नींदड़ी न आवै।
कुम्हरा कै घरि हांडी आछै, अहीरा के घर सांडी।
बमना के घरि रांडी आछै, रांडी सांडी हांडी।
राजा कै घरि सेल आछै, जंगल मधे बेल।
तेली कै घरि तेल आछै, तेल बेल सेल।
अहीर कै घरि महकी आछै, देवल मध्ये ल्यंग।
हाटी मध्ये हींग आछै, हींग ल्यंग स्यंग।
एकै सुत्रै नाना बणियां, बहु भांति दिखलावै।
भणंत गोरषि त्रिगुणी माया सतगुरु होइ लषावै॥२२॥
बांधौ बांधौ बछरा पीओ षी।
कलि अजरावर होय सरीर।
आकास की धेन बछा जाया।
ता धेन कै पूछ न पाया।
बारह बछा सोलह माई।
धैनु दुहावत रैनि विहाई।

अचरा न चरै धेन कचरा न षाई।
पंच ग्वालियां कौ मारण धाई।
याही धेन का दूध जू मीठा।
पीयै गोरषनाथ गगन बईठा॥ २३॥
आवै संगै जाइ अकेला। ताथैं गोरष रांम रमेला।
काया हंस संगि ह्वै आवा। जाता जोगी किनहूँ न पावा।
जीवत जग मैं मूवां मसांणं। प्रांण पुरिस कीया पयाणं।
जामण मरणां बहुरि विओगी। ताथै गोरष भैला जोगी॥ २४॥
चेला सब सूता नाथ सतगूर जागै। दसवै द्वारि अवधू मधुकरी मांगै।
सहजै पपरा सुषमनि डंडा। पांच संगाती मिलि पेलैं नव पंडा।
गंग जमन मधि आसण बालौ। अनहद नाद काल भै टालौ।
गगन मंडल मैं रमू अकेला। उरध मुपि बंक नालि अमीरस झेला।
कथंत गोरषनाथ गुरु उपदेशा। मिल्यां संत जन टल्या अंदेशा॥ २५॥
सांभलि राजा बोल्या अवधू। सुणौ अनोपम वाणी जी।
निरगुण नारी सूँ नेह करंतां। झवकै रैणि विहाणी जी।
डाल न मूल पत्र नहिं छाया। बिण जल पिंगला सीचै जी।
विण ही मढीयां मंदला बाजै। यण विधि लोका रीझै जी।
चींटयां परवत ढोल्या रै अवधू। गायां वाघ विडार्याजी।
सुसलै समदां लहरि मनाई। मृघा चीता मार्या जी।
ऊझड़ मारगि जाता रे अवधू। गुर विण नहीं प्रकासा जी।
जीत्या गोरष अब नहीं हारै। समझि ररालै पासा जी।॥ २६॥
तुझि परि वारी हो अणघड़ीया देवा।
घड़ी मूरति कूं सब कोई सेवै, ताहि न जाणे भेवा।
तू अविनासी आदू कहींए, मोहि भरोसा पड़ीया।
सब संसार धड़ूया है तेरा, तू किनहूं नहिं घड़ीया।
दस औतार औतिरिया तिरिया, वै पणि राम न होई।
कमाई अपनी उनहूँ पाई, करता औरै कोई।

तू पूरण ब्रह्म पुरुष प्रिथमी का, सूरति मूरति सारा।
श्रवणां सुण्यां न नैनां देष्या, तेरा घड़णै हारा।
तू तो आप आप तै हुवा, तूं देष्यां उजियारा।
गोरष कहै गुरु कै सबदां तू हीं घड़ने हारा॥२७॥

श्री नाथ जी का बालाष्टक नं० 1

ॐ गुरु जी प्रथम सिमरण गुरुजी का करलो हृदय में ज्ञान प्रकाशकम्।
श्री आदि योग युगादि ब्रह्मा सेविते शिव माधवम् श्री बाल गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम्, जय श्री नाथजी के चरण प्रणाम्यहम्। जै हो यति गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम्-श्री गुरु जी के चरण प्रणाम्यहम्।।1।।

ॐ गुरुजी बाल जती गुरु ब्रह्मज्ञानी घट ही में ज्योति प्रकाशकम् उदित भानु बसन्त कमला श्री बाल गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् जय श्री नाथ जी के० (पूर्ववत)।।2।।

ॐ गुरुजी रहत निश दिन अगम अगोचर सिद्ध ज्ञान प्रकाशकम् श्री जपत सुरनर देव मुनिजन श्री बाल गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् जय श्री नाथ के० (पूर्ववत)।।3।।

ॐ गुरुजी आकाश धूना पाताल मण्डल पवन सङ्गम सायरा श्री अमर अयोनी का सिमरण करलो श्री बाल गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् जय श्री नाथ जी के० (पूर्ववत)।।4।।

ॐ गुरुजी आदि अन्त अनादि निर्भय रहत निश दिन उन्मुना श्री लख चौरासी जीव योनि का नाम रख दो श्री बाले गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् जय श्रीनाथ जी के चरण० (पूर्ववत)।।5।।

ॐ गुरु जी जल तो अम्बर थल तो सागर सोहत कंठ में मेखला श्री कानों में कुण्डल विभूति आभरण श्री बाल गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम् जय श्रीनाथ जी के० (पूर्ववत)।।6।।

ॐ गुरुजी एक ज्योति गुरु सकल व्यापी कोटी कुन्जर पराक्रमम्।
श्री मदन मोहन जी का मान रख लो श्री बाले गोरक्ष के चरण
प्रणाम्यहम् जय श्री नाथ जी के० (पूर्ववत) ।।7।।

ॐ गुरु जी आबू का मंडल द्वारका क्षेत्र गोरक्ष मढ़ी सुस्थान है
श्री माधो प्राँची में श्रीनाथ जी ने रुक्मिणी जी को कंगन बान्ध्यो
श्री बाले गोरक्ष के चरण
प्रणाम्यहम् जय श्री नाथ के० (पर्ववत) ।।8।।

ॐ गुरु जी इतना श्री नाथ जी का बालाष्टक पढ़त निशदिन
कैलाश वास सदा फलम्
श्री देवकृष्ण श्री नाथ जी की शरण आयो श्री बाले गोरक्ष के
चरण प्रणाम्यहम्। जय श्रीनाथ जी के
चरण प्रणाम्यहम्। जय हो यति गोरक्ष के चरण प्रणाम्यहम्।
श्री गुरु जी के चरण प्रणाम्यहम्।।9।।

-✤-

श्री गुरु गोरक्षनाथ जी की संध्या आरती

ॐ गुरुजी शिव जय जय गोरक्ष देवा श्री अवधू हर हर गोरक्ष देवा। सुर नर मुनि जन ध्यावत सुर नर मुनि जन सेवत। सिद्ध करें सब सेवा श्री अवधू संत करें सब सेवा। शिव जय जय गोरक्ष देवा।।1।।

ॐ गुरुजी योग युगति कर जानत मानत ब्रह्म ज्ञानी श्री अवधू मानत सर्व ज्ञानी। सिद्ध शिरोमणि राजत संत शिरोमणि साजत गोरक्ष गुण ज्ञानी। श्री अवधू गोरक्ष सर्व ज्ञानी। शिव जय जय गोरक्ष देवा।।2।।

ॐ गुरुजी ज्ञान ध्यान के धारी गुरु सब के हो हितकारी। श्री अवधू सब के हो सुख कारी। गौ इन्द्रियों के रक्षक सर्व इन्द्रियों के पालक। राखत सुध सारी श्री अवधू राखत सुध सारी।
शिव जय जय गोरक्ष देवा०।।3।।

ॐ गुरु जी रमते श्री राम सकल जुग माही छाया है नाहीं। श्री अवधू माया है नाहीं। घट घट गोरक्ष व्यापै सर्व घट श्री नाथ जी

विराजत। सो लक्ष्य मन मांही श्री अवधू सो लक्ष्य हिय मांही।
शिव जय जय गोरक्ष देवा० ।।4।।

ॐ गुरु जी भस्मी गुरु लसत सरजनी है अंगे। श्री अवधू जननी है संगे। वेद उच्चारे सो जानत योग विचारे सो मानत। योगी गुरु बहुरंगा श्री अवधू बाले गोरक्ष सर्व संगा। शिव जय जय गोरक्ष देवा० ।।5।।

ॐ गुरुजी कंठ विराजत सेली और शृंगी गुरु जत मत सुख बेली- श्री अवधू जत सत सुख बेली भगवा कंथा सोहत-गेरुवा अचला सोहत ज्ञान रतन थैली श्री अवधू योग युगति झोली। शिव जय जय गोरक्ष देवा० ।।6।।

ॐ गुरुजी कानों में कुण्डल राजत साजत रवि चन्द्रमा-श्री अवधू सोहत मस्तक चन्द्रमा। बाजत शृंगी नादा-गुरु बाजत अनहद नादा-गुरु भाजत दु:ख द्वन्दा-श्री अवधू नाशत सर्व संशया
शिव जय जय गोरक्ष देवा० ।।7।।

ॐ गुरुजी निद्रा मारो गुरु काल संहारो-संकट के हो बैरी-श्री अवधू दुष्टन के हो बैरी-करो कृपा सन्तन पर गुरु दया पालो भक्तन पर शरणागत तुम्हरी श्री अवधू शरणागत तुम्हरी शिव
जय जय गोरक्ष देवा० ।।8।।

ॐ गुरुजी इतनी श्रीनाथ जी की सन्ध्या आरती निशदिन जो गावे-श्री अवधू सर्व दिन रट लावे। वर्णी राजा रामचन्द्र स्वामी गुरु जपे राजा रामचन्द्र योगी-मनवांछित फल पावे-श्री अवधू सुख सम्पत्ति
फल पावे-शिव जय जय गोरक्ष देवा० ।।9।।

इति श्री नाथजी की सन्ध्या आरती सम्पूर्णः

स्वागतम् ते सर्वोपरि गुरु गोरक्षः

पूर्ण परमात्मा गुरु गोरक्ष के शब्दी व पदों में भक्ति और प्रेम की कोमल भावना प्रतिष्ठित है। गुरु गोरक्ष की रचनाऐं प्रियतम (स्वयं परमात्मा गोरक्षनाथ जी) से मिलाप की गहरी तड़प तथा विरह की गहरी वेदना और व्याकुलता से भरी हुई है। उनके रचित ग्रन्थ-शास्त्रों के अध्ययन से अलौकिक व पारलौकिक सत्ताओं की अनुभूति होती है। इसी स्थिति से भक्त कबीर दास जी आदि मध्यकालीन समस्त संत गुरु गोरक्षनाथ जी से प्रभावित होकर बहुत कुछ बखान कर गये जैसे-कबीर ने लिखा है कि-**मन गोरख मन गोविन्दो** तथा योगी गोरक्ष की आभा को अपने शब्दों से उल्लेखित करते हुये कबीर ग्रन्थावली के पदों में इस प्रकार लिखते हैं कि-

जो जोगी जाके मन में मुद्रा, राति न करई निद्रा।
मन में आसन्न मन में रहणा, मन का जप तप मन सू कहणा।।
मन में पपरा मन में सिंगी, अनहद बेन बजावै रंगी।

और इतना ही नहीं बल्कि गुरु गोरक्षनाथ जी की रचनाओं को ही लगभग संतों ने अपना मार्मिक सूत्र बनाया जिसका प्रमाण प्रस्तुत पुस्तक में योगी शुक्राईनाथ जी ने बड़े ही अनूठे अंदाज में दे दिया है और सर्वाधिक गोरक्ष प्रभाव भक्त कबीर जी में देखने को मिलता है। जैसे देखिए निम्नलिखित गोरक्ष रचना के आधार से कबीर जी द्वारा कुछ शब्दों को अपनी भाषा शैली स्वरुप दिया गया है-

गोरक्षवाणी- **मरो हे जोगी मरौ-मरण है मीठा।**
तिस मरणी मरौ, जिस मरणी गोरक्ष मरि दीठा।।

इस गोरक्ष आधार से निर्मित कबीर की निम्नलिखित वाणी देखिए-

कबीर वाणी- **जे को मरै मरन है मीठा, गुरु प्रसादी हुआ जिन्ही मरि।**
राम रमे रमि जे जन मूषा, कहे कबीर अविनासी दीठा।

देखिए-कबीर ग्रन्थावली पृष्ठ 80; 46 में

अतः सब कुछ गुरु गोरक्ष का ही है वे ही कण-कण में रमण करते हैं, सब सन्तवृन्द देवता आदि गुरु गोरक्ष को ही भजते हैं अतः सर्वोपरि गुरु गोरक्ष ही है। गुरु गोरक्षनाथ जी का विरोध करना समझो अपने खून को लज्जित करना ही साबित होगा। इन्हीं शब्दों के साथ अपनी कलम को विराम देते हुये प्रस्तुत पुस्तक **सर्वोपरि गुरु गोरक्ष** के लेखक योगी शुक्राईनाथ जी से विनती करता हूँ कि वे हमारी (सपरिवार) हार्दिक शुभकामनाएँ स्वीकार करें व भगवान श्री गोरक्षनाथ जी हम पर कृपा करते रहें।

अनिल कौशिक
पुत्र श्री विनोद कुमार कौशिक
ब्रह्मनगर, चुरु (राजस्थान)

-✤-

योगियों का अमृतपद

योगिनाममृतं स्थानं ब्रह्मणः परमं पदम्।
एकान्तिनः सदोद्युक्ता व्यापिनो योगिनोहिये।।
तेषां तत्परमं स्थानं यन्नपश्यन्ति सूरयः।
गत्वा गत्वा निवर्तन्ते चन्द्रादित्यादयो ग्रहाः।।
अद्यापि नो निवर्तन्ते प्राणायामपरायणाः।।

पद्म पुराण सृष्टि 3/159-61 में

जो ब्रह्म का अमृतस्वरूप परम पद है, वही योगियों का स्थान है। जो योगी एकान्तवासी सदा (योग के अभ्यास में) उद्यत और सर्वत्र व्याप्त रहने वाले हैं, उनका वह परम स्थान है, जिसका दर्शन विद्वान् लोग नहीं कर पाते। सूर्य, चन्द्र आदि ग्रह वहाँ तक जा-जाकर लौट आते हैं, परन्तु जो प्राणायाम-परायणयोगी उस स्थान (परमपद) को प्राप्त हैं, वहाँ से फिर नहीं लौट सकें, उस पद में स्वस्थ हो सके।

श्री बाबा मस्तनाथ मठ अस्थल बोहर, रोहतक (हरियाणा)

श्रीराम बने सिद्ध अचलनाथ

नोट–भगवान द्वारा रावण का वध करने के बाद जब प्रभु को आत्म विचार हुआ कि रावण चाहे कृतघ्नी एवं महादुराचारी था लेकिन फिर भी वह ब्राह्मण था। अतः मुझे ब्रह्म हत्या का दोष लगना उचित है। इस ब्रह्म हत्या के निवारणार्थ प्रभु राम जी ने अपने कुलगुरु महर्षि वशिष्ठ से प्रार्थना की। तदोपरान्त वशिष्ठ मुनि ने कहा कि मैं भी इस दोष मुक्ति कार्य में असमर्थ हूँ। इस ब्रह्म हत्या मुक्ति को पाने के लिए आपको योग की शरण में जाना चाहिए। जो सिर्फ तत्व प्रणेता गुरु गोरक्षनाथ अवधूत योगी की ही कृपा से संभव है। अपने कुलगुरु आदेशानुसार प्रभु रामचन्द्र जी ने नाथ स्तुतियां व स्तवन आदि कर गुरु मोक्षदाता गोरक्ष को प्रसन्न किया व नाथ जी से मोक्षदात्री नाथ दीक्षा ग्रहण कर गोरक्षधाम को प्राप्त हुये और सिद्ध अचलनाथ (रामजी) के साथ लक्ष्मण भी (सिद्ध नागनाथ जी) के नाम से जग विख्यात हुये। अतः हम सबको उन्हीं परमपिता सच्चिदानन्द सृष्टि प्रणेता देवमोक्षी अखण्ड एवं प्रचण्ड बुद्धिकारक महायोगी श्री सिद्ध शिरोमणि सद्गुरु गोरक्षनाथ जी को ही भजना व जपना चाहिए जिससे हमारी आत्मा उन नाथ परमात्मा को प्राप्त हो सके तथा हम पुनः लौटकर इस सांसारिक जगत-जाल में ना पहुँचें और श्री गुरु गोरक्षनाथ जी के पतित पावन श्री चरणों में श्रीराम की भांति सद्गति प्राप्त कर सकें।

✤

गोरक्ष उपदेश

सत्गुरु श्री गोरक्षनाथ जी महाराज की वाणी, क्या कहूँ? वास्तव में गूंगे की शक्कर ही है। सर्व साधारण को कितना समझ में आयेगी या नहीं यह मैं (लेखक) कह न सकूंगा।

ऐसी गंभीरता से गोरक्षगुरु द्वारा कहा गया है कि सतही तौर से पढ़ने पर छाछ ही छाछ नजर आती है परन्तु मथने पर मक्खन निथर आता

है तभी आपको आश्चर्य होता है कि कितना गूढ रहस्य छिपा है इस गोरक्ष वाणी रूपी छाछ में मुझे इस अध्ययन से 'गोरख धन्धा' शब्द की परिभाषा मालूम हुई कि 'गोरख धन्धा' किसे कहते हैं? और इस शब्द को लोग ज्यादातर क्यों प्रयोग में लेते हैं? वह कार्य जो करते हुये देखने पर समझ में कुछ और प्रतीत हो तथा कार्य करने का मंतव्य कुछ और ही हो, उसे गोरख धन्धा कहते हैं। यही रहस्य गोरक्षकृत शब्दी व पदों में छिपा हुआ है जिसमें गोरक्ष कहते साधारण तौर से है लेकिन उनका भावार्थ बड़ा ही गूढ़ होता है देखिए इस गोरक्ष वाणी में मंथन करके

जल बिच कमल-कमल बिच कलियाँ भंवर वास न लेता है।
पांचू चेले फिरे अकेले, अलख-अलख जोगी करता है।।
सुन्न हर शहर-शहर घर बस्ती कौन सोवे कौन जागे है।
साध हमारे हम साधन के, तन सौवे, ब्रह्म जागे हैं।।

जल बिच कमल, कमल बिच कलियाँ भंवर वास न लेता है' प्रिय पाठकों आपने कमल का पुष्प तो देखा होगा, वह गन्दे जल अर्थात कीचड़ में पनपता है। कमल के पुष्प में कलियाँ होती हैं और इन कलियों पर भँवरा मंडराता रहता है उनकी तरफ आकर्षित होकर वह उनका रसपान करता है परन्तु उस पुष्प में वह कभी स्थाई वास नहीं करता। उस पुष्प को कभी भी अपना निवास स्थान नहीं बनाता। यह वास्तविकता है आपभी इसकी पुष्टी भी कर सकते है। यहाँ प्रस्तुत वाणी में इसी आधार से श्री गुरु गोरक्षनाथ जी कहते हैं कि यह संसार एक गंदे जल के समान है जहाँ पर आपका (मनुष्य की ओर संकेत) यह मौलिक शरीर उस जल में कमल-पुष्प के समान है इस पुष्प रूपी शरीर में पांचों इन्द्रियाँ कलियाँ हैं इन कलिया यानि इन्द्रियों से रसपान भँवरा यानि आपकी आत्मा करती है और इस भँवरे यानि आत्मा का स्थाई निवास यह पुष्प यानि पाँच भूतों का यह शरीर नहीं है आत्मा नये-नये शरीरों में बार-बार घुमती है जैसे कि भँवरा नये-नये पुष्पों पर मँडराता रहता है यह वास्तविकता है और सत्य भी ये

इन्द्रियाँ मन से नियंत्रित होती है और मन ही आत्मा को रस प्रदान करता है आत्मा इस रस के वशीभूत होकर मन के साथ योग कर शरीर दर शरीर भटकती रहती है परन्तु यह शरीर मूलतः उसका निवास स्थान नहीं है। पाँचू चेला फिरै अकेला, अलख-अलख जोगी करता है।

अर्थात्-ये पाँचों इन्द्रियाँ जिनका मन एक मात्र गुरु है वे सब अकेले रमण करती है अर्थात कुछ भी नहीं कर पाती है। क्योंकि आत्मा की अनुपस्थिति में ये पांचों कुछ नहीं कर सकती है, 'अलख' शब्द गोरक्ष का बहुत ही प्रिय तथा सीधा पर्याय है नाथजी ने इस शब्द को अपनी रचनाओं में कई जगहों पर बड़ी उदारता के साथ प्रयोग किया है। अलख शब्द का अर्थ होता है अदृश्य यानि अव्यक्त अर्थात अंग्रेजी में-ईन्वीजिबली) जो अपने आप में व्यक्त नहीं है अदृश्य है। **'अलख-अलख जोगी करता'** इसका भावार्थ यही है कि सिद्ध पुरुष ने मंथन द्वारा मक्खन निकालकर जान लिया है वह जो है वह अदृश्य ही है अलख ही है और जब आपने उस अलख को जान लिया-समझ लिया तो इस गुरु 'मन' के पाँचों चेले यानि इन्द्रियाँ उस जोगी, उस सिद्ध पुरुष को भ्रमित नहीं कर पायेंगे और ऐसे पाँचों इन्द्रियाँ अलग-थलग गिर जायेगी, तथा जोगी तो केवल अलख-अलख (अदृश्य शक्ति को) ही पुकारेगा। क्योंकि वह सत्य ज्ञान को जान चुका है।

'सुन्न हर शहर, शहर घर बस्ती, कौन सोये कौन जागे है'

अर्थात-जब आप उस अदृश्य को जान लेते हैं अपनी आत्मा को पहचान लेते हैं और परमात्मामय हो जाते हैं तब आपके लिए यह शहर ये बस्ती और ये घर सब शून्य हो जाते हैं अर्थात उन सबका आपके जीवन में कोई महत्व नहीं रह जाता है फिर आप ये भी नहीं जानते कि यहां कौन सो रहा है और कौन जाग रहा है? कौन परमात्मा के मार्ग में प्रशस्त है और कौन संसार में खोया है योगी तो केवल परमतत्व (केवल्य पद) में ही ध्यानस्त रहता है उसे इन सबसे कोई मतलब नहीं रहता है।

और अन्त में गुरु गोरक्ष कहते हैं कि '**साध हमारे हम साधन के, तन सोवे ब्रह्म जागै है।**

अर्थात-योगी को संसार में और संसार वासिन्दों को योगी से कोई मतलब नहीं रहता है फिर भी गोरक्षनाथ जी चेतावनी देते हैं कि साध्य हमारे है और हम साध्यों (साधक) के हैं। यहाँ पर सिर्फ शरीर ही सोता है यह शरीर ही संसारी है इस शरीर में जो ब्रह्म है वह परमात्मा है अर्थात हमारी आत्मा सदैव जागृत रहती है।

अब एक बार फिर पढिये गुरु गोरक्षनाथ की इस वाणी को और समझिये कि कितनी भाव प्रधान और अहम स्थान वाली है ये गोरक्ष उपदेशी रचना-

जल बिच कमल-कमल बिच कलियाँ भँवर वास न लेता है।
पाँचू चेले फिरे अकेले, अलख-अलख जोगी करता है।।
सूत्र हर शहर-शहर घर बस्ती, कौन सोवे कौन जागे है।
साध हमारे हम साधन के, तन सोवे ब्रह्म जागै है।

।। ॐ शिव गोरक्ष ।।

-✤-

अति विशेष-महर्षि अंगीरा की पत्नी गोणीका महर्षि पतंजलि की माता थी। ब्रह्मपुत्र अंगीरा की पुत्रवधु (महर्षि पतंजलि की पत्नी) लोलूपा नामक कन्या हुई तथा भक्त कबीर की पत्नी का नाम लोई था उनके कमाल तथा कमाली नामक दो संतान थी इसके विपरीत गुरु गोरक्ष अयोनिज-अवधूत व नित्य हैं। गोरक्षनाथ जी की अखण्ड पृष्ठभूमि कुल-कुटुम्ब व जन्म-मरण की हस्तक्षेप सीमा से दुरातिदूर होने से वे सर्वाभिन्न व सर्वोपरि हैं, वे ही पूर्ण परमात्मा गोरक्षदेव हैं।

दो शब्द

सर्वोपरि गुरु गोरक्ष नामक यह प्रस्तुति आपकी मेहनत तथा नाथ सम्प्रदाय की दिव्यता को बखूबी बखान कर रही है।

अतः मैं (योगी श्री महंत शिव शक्ति नाथ जी का स्वयं की और संकेत) आपका (योगी शुक्राईनाथ) बहुत-बहुत हार्दिक धन्यवाद मुक्त मन से करता हूँ तथा लिखना चाहूँगा कि **अखिल भारतीय भेष बारह पंथ योगी महासभा अर्थात गुरु गोरक्षनाथ अखाड़ा, अपर रोड हरिद्वार** में हमने श्रीमद्भागवत पुराण कथा ज्ञान यज्ञ गुरु गोरक्षनाथ जी के पावन चरणों में तथा महायोगी भर्तृहरि नाथ जी की गुफा के पवित्र आशीर्वाद एवं मां गंगा सहित श्रद्धेय आदरणीय पूज्य डॉ. योगी श्री चेताईनाथ जी (लेखक के गुरुवर) जो कि योगी महासभा के वर्तमान महामंत्री जी हैं। के अतीव सानिध्यपात में कथावाचक योगी श्री प्रहलादनाथ जी महाराज के श्रीमुख से पठन-पाठन का 7 दिनों तक पूरी साध-संगत (सैकड़ों भक्तों का समूह) ने लाभ उठाया।

इस दौरान गोरक्षनाथ मन्दिर में होने वाली सम्पूर्ण गतिविधियों जिसमें आश्रम अनुशासन, सम्पूर्ण व्यवस्था, आम जन सेवा, सुबह-शाम नित्यकर्म पूजा-पाठ तथा हमारे साथ महामंत्री जी महाराज का कौशल प्रेम इत्यादि सब अनवेषित पाकर हृदय में मानो हरिद्वार केन्द्रित हो गया। अब दिल चाहता है कि प्रतिवर्ष हम पूरी साध-संगत सहित इस वर्ष (2014) की भांति ही इस महान गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर सहित माता गंगा के पवित्र दर्शन करने हेतु अधिकाधिक संख्या में आते रहे। अतः गुरु गोरक्ष महाप्रभु और गंगा मैया से यही विनती है कि वे हमारी हृदया चहेती इस मनोकामना को पूरा करें तथा हमें इसी प्रकार प्रतिवर्ष हरिद्वार का पवित्र पावन सानिध्यपात मिलता रहे।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

शुभेच्छुक-

महंत श्री योगी शिव शक्ति नाथ जी महाराज

अधिष्ठाता-नवलेश्वर मठ, सिद्धपीठ

नत्थूसर बास, बीकानेर (राजस्थान)

✤ ब्रह्मा–विष्णु–महेश तीनों सम्पूर्ण सृष्टि की महाशक्तियाँ हैं। ये समस्त शक्तियाँ श्री गुरु गोरक्षनाथ जी से ही विदित हैं क्योंकि समस्त सत्ताओं का प्रधान बिन्दु महाप्रभु योगाचार्य गुरु गोरक्ष ही मालूम पड़ते हैं। अतः **सर्वोपरि गुरु गोरक्ष** इति कटु सत्य अस्ति।

महन्त योगी कृष्णनाथ जी महाराज
12 के जमाती महन्त
चरखी दादरी–भिवानी (हरियाणा)

✤ महासिद्ध पूर्ण परमात्मा सतगुरु गोरक्षनाथ जी की मौलिकता सर्वस्व के लिए एक अखण्ड धर्म मिशाल है। सम्पूर्ण संत व सिद्धों का सम्पूर्ण साहित्य भी गुरु गोरक्षनाथ जी से सर्वथा प्रभावित रहा है अतः यह कहना कदापि अनुचित नहीं होगा कि **सर्वोपरि गुरु गोरक्ष।**

महन्त योगी सोमवार नाथ जी महाराज
18 के जमाती महन्त गोंडिया (महाराष्ट्र)

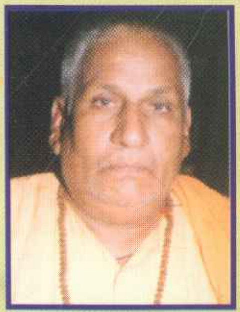

✤ प्रस्तुत पुस्तक शास्त्र प्रमाणित 'मीनी लिपी' है तथा सत्भाषित रचना है। गुरु गोरक्षनाथ जी महाराज द्वारा की गई पाखण्ड खण्डनी नाथ सम्प्रदाय की स्थापना को गहराई से अंकन कर हर कोई बोले **'सर्वोपरि गुरु गोरक्ष'**

महन्त योगी श्री कृष्ण नाथ जी महाराज
राजगुरु नाथ सम्प्रदाय एवम् नाहन (हिमाचल प्रदेश)

✤ सब घर भटके–केवल नाथ दर अटके

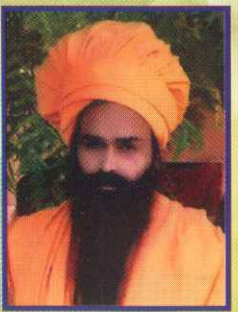

यह प्राचीन कहावत है तथा सर्वस्व में सुनी जाती है और यह नाथ योगियों का ही रहस्य बखान करती है जिसके अन्तर्गत स्पष्ट है कि हमारी अन्तर्रात्मा का सब जगह भटकाव है भटकाव से हमें सिर्फ नाथ प्रभु ही आगे धकेलते है। अर्थात भटकाव से मुक्तिदाता केवल नाथ परमात्मा ही हैं। अतः **सर्वोपरि गुरु गोरक्षनाथो विजयतेतराम्**

महन्त योगी सुमरनाथ जी तपस्वी
ग्राम मोहाना, पानीपत (हरियाणा)

✤ ब्रह्मा–विष्णु–महेश (त्रिदेव) सृष्टि के रचना, पालना, संहारकर्ता आदि भूमिकायें अदा करते हैं लेकिन केवल रचना–पालना व संहार से ही सृष्टिक्रम पूर्ण नहीं होता, अपितु सर्वस्य को याद रखना होगा कि महाप्रभु गोरक्षनाथ जी उपर्युक्त तीनों स्थितियों से परे होकर कल्याण मार्ग देने वाले हैं क्योंकि रचना हुई व पालना के बाद संहार हुआ किन्तु कल्याण (मोक्ष) नहीं हुआ तो सृष्टि क्रम अधूरा ही रहा। अतः गुरु गोरक्षनाथ जी त्रिगुणों की पृष्ठभूमि से भिन्न होकर स्वयं मोक्षदायी पूर्ण परमात्मा हैं। गोरक्ष ही युक्तिसंगत मोक्षदाता देव हैं अतः **सर्वोपरि गुरु गोरक्ष**

महन्त योगी सुन्द्राईनाथ जी
अलेवा जीन्द (हरियाणा)
अध्यक्ष श्री बाबा समताई नाथ गौशाला,नावां–महेन्द्रगढ़ (हरियाणा)

✤ 'गोरक्षनाथ एण्ड दी कनफटा योगीज' पुस्तक में एक अंग्रेज 'ब्रिग्स' ने निरुपित किया है कि गुरु गोरक्षनाथ जी सतयुग में पंजाब क्षेत्र में त्रेतायुग में गोरखपुर उ.प्र. में द्वापर युग में द्वारिका में (हरभुज, गुजरात में) तथा कलियुग में उनका प्राकट्य सौराष्ट्र के काठियाबाड़ में हुआ। उस स्थान का नाम गोरख मढ़ी आज भी है। अतः स्पष्ट है कि गोरक्ष परमात्मा ही अजर–अमर अविनाशी है अर्थात् **सर्वोपरि गुरु गोरक्ष।**

संत ध्यानदास जी महाराज
हनुमान ढाणी, भिवानी (हरियाणा)

✤ नाथ सम्प्रदाय से दीक्षा, मेरे सतगुरु की यही सुलभ शिक्षा

सतगुरु गोरक्षनाथ जी महाराज के नाथ मार्ग का देवताओं को भी मोक्ष हेतु आश्रय लेना पड़ा–माता पार्वती ने शंकर से मोक्षप्रद मार्ग पूछा तो शिवजी ने कहा कि जिसका आश्रय ग्रहण करने पर संसार बंधन से ग्रस्त जीव मोक्ष प्राप्त करते हैं उस नाथ मार्ग का मैं तुमसे वर्णन करता हूँ। यह नाथ योग मार्ग अत्यन्त श्रेयस्कर है, अन्य मार्गों के अनुसरण से केवल्य पद दुष्प्राप्य है, इसकी प्राप्ति सिद्ध नाथों के मार्ग पर चलने से ही होती है। गोरक्ष मोक्षदाता पूर्ण परमात्मा है। यथा–

बद्धा येन विमुच्यन्ते नाथ मार्गमतः परम्
तमह कथयिस्यामि तव प्रीत्या सुरेश्वरी
नानामार्गेस्तु दुष्प्राप्यं कैवल्यं परम् पदम
सिद्ध मार्गेण लभ्येत नान्यथा शिवभाषित।।

–योगबीज 7, 8 में

अतः सर्वथा सिद्ध है **सर्वोपरि गुरु गोरक्षः**

हिन्दी लेखक योगी शुक्राईनाथ

मुद्रक : शिव शक्ति प्रिन्टर्स, अपर रोड, हरिद्वार